सभी के लिए शिक्षा
वैश्विक निगरानी रिपोर्ट

2012

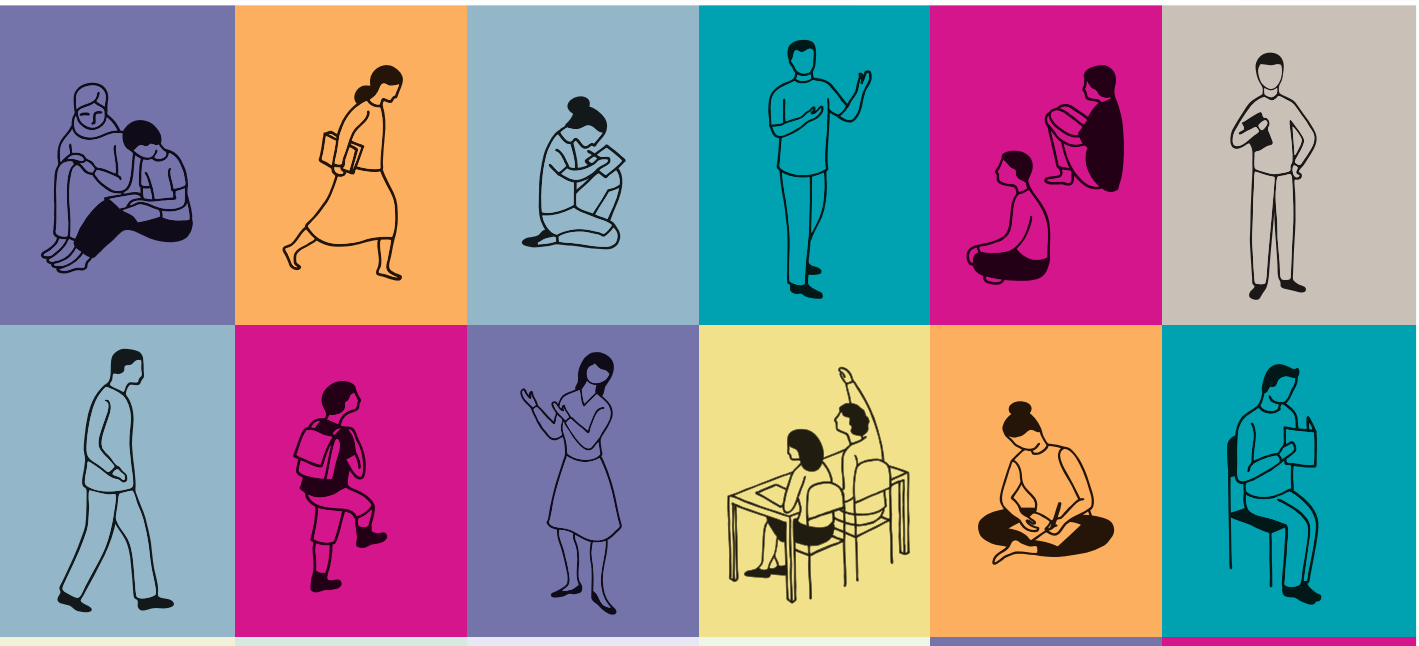

युवा एवं कौशल

कार्य में शिक्षा का स्थान

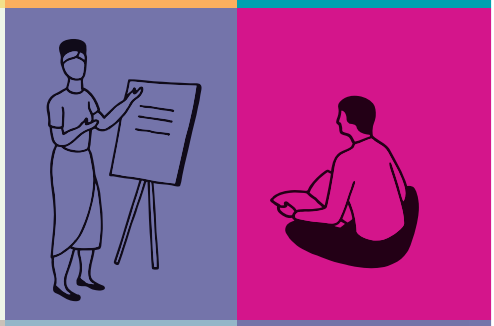

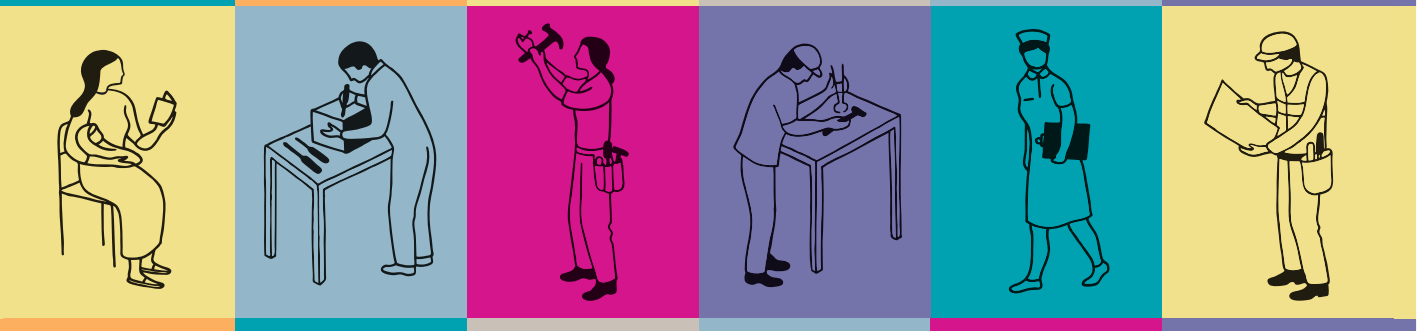

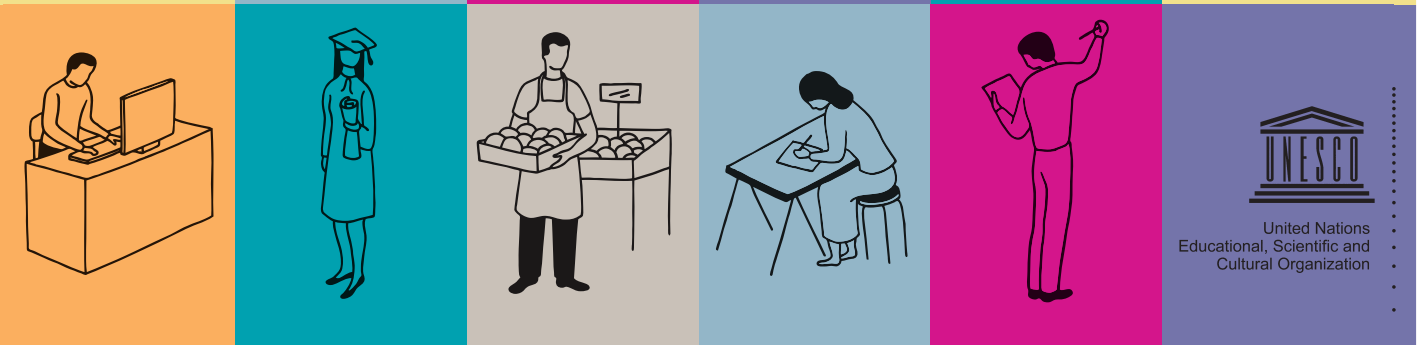

सभी के लिए शिक्षा

सारांश

UNESCO
United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

युवा एवं कौशल
कार्य में शिक्षा का स्थान

सारांश

यूनेस्को
प्रकाशन

United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

यह रिपोर्ट, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की ओर से यूनेस्को द्वारा स्वतंत्र रूप से प्रकाशित की जाती है। इसमें रिपोर्ट तैयार करने वाली टीम और कई अन्य लोग, एजेंसियां, संस्थान और सरकारों के सामूहिक प्रयास शामिल हैं।

नियोजित पदनाम और इस प्रकाशन की सामग्री का प्रस्तुतीकरण, किसी भी देश, राज्य क्षेत्र, शहर या क्षेत्र या इसके प्राधिकरणों की कानूनी स्थिति के संबंध में अथवा इसकी सरहदों या सीमाओं के सीमांकन के संबंध में यूनेस्को की ओर से किसी भी प्रकार के दृष्टिकोण का संकेत नहीं करता।

ई.एफ.एल. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट टीम, चयन और इस पुस्तक में शामिल तथ्यों के प्रस्तुतीकरण और इसमें प्रस्तुत किए गए दृष्टिकोणों के लिए जिम्मेदार हैं, जो यूनेस्को के लिए आवश्यक नहीं है और संगठन के लिए प्रतिबद्ध नहीं है। इस रिपोर्ट में प्रस्तुत विचार और दृष्टिकोणों की संपूर्ण जिम्मेदारी इसके निर्देशक की है।

ई.एफ.ए. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट टीम

निर्देशक : पॉलिन रोज़

क्वाम आक्यमपांग, मानोस एन्टोनिनिस, मडेलिन बैरी, निकोल बैला, स्टुअर्ट कैमरून, इरिन चिमरी, डेडरिक दे जांग, मारकोस डेलप्राटो, हंस बॉटनन इडी, जोन्ना हर्मा, एन्ड्रयू जोन्स्टन, लीन क्रीविस्की, फ्रांशियस लेक्लेरिक, एलीसा लेग्युल्ट, लैला लोपिस, अलासडायर, मैकविलियम, पैट्रिक मोन्टजोरिड्स, कैरेन मूर, क्लोडियन मुकोज़वा, जूदिथ रेडरीयानाटोआवीना, कैट रैडमन, मारिया रोज़नोव-पैटिट, मैरिसन सैंजियन्स, मार्टिन सैमीटे, असमां ज़ुबेरी।

सभी के लिए शिक्षा – वैश्विक निगरानी रिपोर्ट एक स्वतंत्र वार्षिक प्रकाशन है। यह यूनेस्को द्वारा समर्थित और सहायता प्राप्त है।

रिपोर्ट के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें:

ई.एफ.ए. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट टीम
सी/ओ यूनेस्को
7, प्लेस द फौन्टीनुआ
75352 पैरिस 07 एसपी, फ्रांस
ईमेल – efareport@unesco.org
टेली : + 33145680741
www.efareport.unesco.org

पूर्व *ई.एफ.ए. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट*

2011. छुपे हुए संकट : सशस्त्र संघर्ष एवं शिक्षा
2010. सीमा तक पहुंचना
2009. असमानता पर काबू पाने के लिए शासन क्यों मायने रखता है
2008. 2015 तक सभी के लिए शिक्षा व्यवस्था – क्या हम कर पाएंगे?
2007. सुदृढ़ नींव – प्रारंभिक शैशवावस्था सुरक्षा एवं शिक्षा
2006. जीवन के लिए साक्षरता
2005. एजुकेशन फॉर ऑल – अनिवार्य गुणवत्ता
2003/4. लिंग एवं सभी के लिए शिक्षा – समरूपता परिवर्तन
2002. सभी के लिए शिक्षा – क्या विश्व सही मार्ग पर है?

मुद्रण में किसी भी प्रकार की त्रुटि या चूक की स्थिति में, सही संस्करण हेतु ऑनलाइन संस्करण www.efareport.org देखें।

© यूनेस्को, 2012
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल द्वारा वर्ष 2012 में प्रकाशित
वैज्ञानिक व सांस्कृतिक संगठन
7, प्लेस द फौन्टीनुआ, 75352, पैरिस 07 एसपी, फ्रांस
ईडी-2012/डब्ल्यू.एस./13
ग्राफिक डिज़ाइन, एफएचआई 360 द्वारा
लेआउट, एफएचआई 360 द्वारा

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटालॉगिंग इन पब्लिकेशन डेटा
डेटा उपलब्ध
टाइपसेट, यूनेस्को द्वारा
ISBN : 978-92-3-104240-9

कवर चित्रण
यूनेस्को/सारा विलकिंस

प्राक्कथन

ई.एफ.ए. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट के इस 10वें संस्करण को इससे बेहतर समय पर प्रकाशित नहीं किया जा सकता था। सर्वशिक्षा का तीसरा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी युवाओं को कौशल प्राप्त करने का अवसर दिया जाए। इस लक्ष्य तक पहुंचने की तात्कालिकता 2000 से तीव्रता से बढ़ी है।

वैश्विक आर्थिक मंदी का प्रभाव बेरोजगारी पर पड़ा है। विश्व में आठ में से एक व्यक्ति कार्य की तलाश में हैं। युवा जनसंख्या विशाल है और बढ़ रही है। युवा लोगों की बेहतरी और समृद्धि किसी भी वस्तु से अधिक शिक्षा और प्रशिक्षण से प्राप्त कौशल पर निर्भर है। इस जरूरत को पूर्ण करने में असफल होना, मानव संभाव्यता और आर्थिक शक्ति की व्यर्थता है। युवा कौशल कभी भी इतना आवश्यक नहीं रहा।

वैश्विक निगरानी रिपोर्ट हमें याद दिलाती है कि शिक्षा केवल बच्चों को स्कूल पहुंचाने तक सुनिश्चित करने तक सीमित नहीं है। इसका तात्पर्य है – युवा लोगों को जीवन में आगे बढ़ाना, प्रतिष्ठित कार्य ढूंढने के अवसर प्रदान करना, आजीविका अर्जित करना, अपने समुदाय और समाज में अपना योगदान देना, और अपनी संभावनाओं की पूर्ति करना। बड़े स्तर पर, इसका तात्पर्य है, वैश्विक अर्थव्यवस्था में कार्यबल को विकसित करने की आवश्यकता को पोषित करने में देशों की मदद करना।

प्राथमिक स्तर पर, शैशवावस्था पूर्व सुरक्षा और शिक्षा और लिंग असमानता में सुधारों के विस्तार सहित – छह ई.एफ.ए. लक्ष्यों में सुस्पष्ट प्रगति हुई है। तथापि, आने वाले तीन वर्षों में 2015 की डेडलाइन तक, विश्व में अभी भी उतना सुधार नहीं हुआ है। कुछ लक्ष्यों की ओर प्रगति डगमगाने लगी है। वर्ष 2000 से पहली बार स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या पर विराम लगा है। प्रौढ़ शिक्षा और शिक्षा की गुणवत्ता में अभी भी तीव्र प्रगति की जरूरत है।

वर्तमान विकास ने सम्यक कौशल विकास कार्यक्रमों तक न्यायसंगत पहुंच सुनिश्चित करने की एक बड़ी तात्कालिकता पैदा की है। चूंकि, शहरी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, विशेषरूप से निम्न आय वाले देशों में, युवा लोगों को गरीबी से बाहर निकलने के लिए, कार्य करने में कौशल की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, युवा लोगों को जलवायु परिवर्तन और खेती के घटते आकार का सामना करने और खेतीतर कार्यों के लिए अवसरों का दोहन करने के लिए नवीनतम क्रियाविधि की आवश्यकता होगी। रिपोर्ट से पता चलता है कि लगभग 200 मिलियन युवा लोगों को आधारभूत साक्षरता और गणितीय कौशल प्राप्त करने के लिए दूसरे अवसर की आवश्यकता है, जो कार्य के लिए अतिरिक्त कौशलों को सीखने के लिए आवश्यक है। अंत में, महिलाएं और गरीब लोग विशेष रूप से कठिनाई में होते हैं।

हमें उन लोगों की बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखना होगा जो बेरोजगार है या गरीबी के जाल में फंसे हुए हैं, इस पर कार्रवाई के रूप में – 2015 तक की उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना और उसके बाद भी नीति को बनाए रखने की आवश्यकता है। हम 2030 तक वैश्विक रूप से निम्नतम माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, और हम करेंगे।

शिक्षा के प्रति दाताओं की प्रतिबद्धता कम हो सकती है, और यह गंभीर रूप से चिंताजनक है। आज सरकार का बजट दबाव में है, किंतु अब हमें अपनी संलग्नताओं को कम करके वर्ष 2000 तक प्राप्त लाभों को खतरों में नहीं डाला जाना चाहिए। इस रिपोर्ट के तथ्यों से पता चलता है कि शिक्षा पर खर्च की जाने वाली निधि किसी व्यक्ति के जीवनकाल में उसकी आर्थिक वृद्धि में 10 से 15 गुणा तक सृजित किया जाता है।

अब भविष्य के लिए निवेश करने का समय है। हमें रचनात्मक ढंग से सोचना होगा और सभी संसाधनों का प्रयोग करना होगा। सरकारों और दाताओं को शिक्षा को दी गई प्राथमिकता को जारी रखना होगा। देशों को अपने संसाधनों पर ध्यान देना होगा, जो कई मिलियन बच्चों और युवा लोगों को जीवन के लिए कौशल प्रदान करेगा। निधि का स्त्रोत कोई भी हो, प्रत्येक कार्यनीति में प्रतिकूलता की आवश्यकता उच्च प्राथमिकता पर होनी चाहिए।

हर जगह युवा लोगों के पास अपार संभावनाएं हैं – इसे विकसित किया जाना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि यह रिपोर्ट, बच्चों और युवा लोगों को शिक्षित करने के लिए विश्वस्तर पर नवीनीकृत प्रयासों को प्रेरणा देगी ताकि वे विश्वास के साथ विश्व का स्वागत कर सके, अपनी आकांक्षाओं को पूरा करें और अपने अनुसार जीवन जीएं।

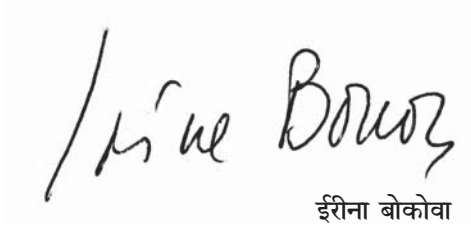

ईरीना बोकोवा
महानिदेशक यूनेसको

परिचय

डाकर, सेनेगल में निर्धारित सभी लक्ष्यों के लिए शिक्षा के लिए आने वाले तीन वर्षों में डेडलाइन तक, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि वर्ष 2000 में 164 देशों द्वारा की गई सामूहिक प्रतिबद्धताओं को पूरा किया जाए। सभी भागीदार अपने वायदों को पूरा करें, यह सुनिश्चित करने के लिए, भावी अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा लक्ष्यों की परिभाषा और क्रियाविधि की संकल्पना की सूचना देने के लिए सीख दी जाने की आवश्यकता है।

दुर्भाग्यवश, इस वर्ष ई.एफ.ए. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट से प्रदर्शित होता है कि कई लक्ष्यों की ओर प्रगति में कमी हुई है और उन ई.एफ.ए. लक्ष्यों के पूरा होने की संभावना नहीं है। चारों ओर निराशाजनक वातावरण होने के बावजूद, विश्व के कुछ गरीब देशों में हुई प्रगति से प्रदर्शित होता है कि प्री–स्कूल में बच्चों की बढ़ती हुई संख्या, प्राइमरी स्कूली शिक्षा की पूर्वता करना और माध्यमिक शिक्षा की ओर अंतरक सहित राष्ट्रीय सरकारों और सहायता दाताओं की प्रतिबद्धता से क्या प्राप्त किया जा सकता है।

2012 ई.एफ.ए. निगरानी रिपोर्ट को दो भागों में बांटा गया है। पहला भाग 6 ई.एफ.ए. लक्ष्यों की प्रगति और लक्ष्यों को वित्त प्रदान करने के लिए शिक्षा पर खर्च का एक खाका प्रदान करता है। भाग दो में तीसरे ई.एफ.ए. लक्ष्य के बारे में बताया गया है, जिसमें विशेषरूप से युवा लोगों की कौशल आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया गया हैं

मुख्य बिन्दु

- लक्ष्य 1: *शैशवावस्था पूर्व सुरक्षा और शिक्षा में सुधार बहुत धीमी गति से हो रहे हैं।* वर्ष 2010 में, 5 वर्ष से कम वाले लगभग 281 बच्चे अल्पविकास के शिकार हैं, और विश्व के कुल बच्चों के आधे से कम ने पूर्व प्राइमरी शिक्षा हासिल की हैं।
- लक्ष्य 2: *वैश्विक प्राइमरी शिक्षा की प्रगति डांवाडोल है।* वर्ष 2010 में विश्व के कुल बच्चों में 61 मिलियन बच्चे स्कूल से वंचित थे। स्कूल से बाहर 100 बच्चों में से 47 कभी भी इसकी अपेक्षा नहीं कर सकते थे।
- लक्ष्य 3: *अनेक युवा लोगों में आधारभूत कौशलों की कमी है।* 123 निम्न और निम्न मध्य आय वर्ग के देशों में 15 से 24 वर्ष के लगभग 200 मिलियन बच्चों ने तो प्राथमिक शिक्षा भी पूरी नहीं की है, जो पांच युवा लोगों में से एक के समतुल्य है।
- लक्ष्य 4: *प्रौढ़ शिक्षा अभी भी एक दुग्राह्य लक्ष्य है।* वर्ष 1990 और 2010 के बीच प्रौढ़ निरक्षरों की संख्या में केवल 12% की कमी आई है। वर्ष 2010 में, लगभग 775 मिलियन प्रौढ़ निरक्षर थे, जिसमें से दो–तिहाई महिलाएं थी।
- लक्ष्य 5: *लिंग असमानताओं के प्रकार में विविधता आई है।* वर्ष 2010 में, 17 ऐसे देश थे जिनमें प्राइमरी स्कूल में प्रत्येक 10 लड़कों पर 9 लड़कियों की संख्या भी कम थी। 96 देशों में से आधे से ज्यादा देशों में लिंग समानता नहीं है, लड़के अभी भी प्रतिकूल स्थिति में हैं।
- लक्ष्य 6: *शिक्षा परिणाम में वैश्विक असमानता अभी भी अंधकार में है।* 250 मिलियन बच्चे पढ़ने और लिखने में सक्षम नहीं हैं, जबकि उन्हें ग्रेड 4 तक पहुंच जाना चाहिए था।

भाग 1. सभी लक्ष्यों के लिए शिक्षा की निगरानी

सभी लक्ष्यों के लिए छह शिक्षा

प्रारंभिक शैशवावस्था सुरक्षा और शिक्षा का विस्तार
प्रारंभिक शैशवावस्था एक महत्वपूर्ण अवधि है जिसमें सफलता के लिए शिक्षा की नींव डाली जाती है, इसलिए प्रारंभिक शैशवावस्था सुरक्षा और शिक्षा, ई.एफ.ए. और विस्तृत विकास एजेंडा के केन्द्र में होने चाहिए।

वर्ष 2010 में 5 वर्ष की उम्र से नीचे, 171 मिलियन बच्चे अल्पबल या अल्पविकास के शिकार थे।

भूखे, कुपोषित या बीमार बच्चे इस स्थिति में नहीं होते कि वे बाद में शिक्षण और रोजगार के लिए आवश्यक कौशलों को हासिल कर सकें। प्रारंभिक शैशवावस्था स्वास्थ्य में सुधार के संकेत अवश्य मिलते हैं, किंतु कुछ देशों में बहुत निम्न स्तर पर और ये अंतर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। शिशु मृत्यु दर की वार्षिक दर वर्ष 1990–2000 में 1.9% से बढ़कर वर्ष 2000–2010 में 2.5% हो गई। वर्तमान अनुमान सुझाव देते हैं कि शिशु मृत्यु में केवल आधा प्रतिशत की कमी का श्रेय प्रजनन की आयु में, महिलाओं में अधिक शिक्षा को दिया जा सकता है।

हालांकि, यह उत्साहजनक है कि 1990 की तुलना में, आज जन्म लेने वाले प्रत्येक 100 बच्चों में 3 बच्चे अधिक समय तक जीवित रह रहे हैं, फिर भी, 28 देश ऐसे हैं, जिनमें से 25 उप-सहारा अफ्रीका के हैं, जिनमें 5 वर्ष की उम्र से पहले, 100 बच्चों में 10 बच्चों से अधिक मृत्यु का शिकार हो जाते हैं।

शिशु मृत्यु के पीछे एक महत्वपूर्ण घटक कुपोषण है, जो बच्चों के ज्ञानात्मक विकास और सीखने की क्षमता में भी बाधा डालता है। अल्पविकास या अपनी उम्र से छोटा रह जाना, कुपोषण का स्पष्ट संकेत है। वैश्विक रूप में, वर्ष 2010 में 5 वर्ष की उम्र से नीचे 171 मिलियन बच्चे अल्पबल या अल्पविकास का शिकार थे। वर्ष 2015 तक, 5 वर्ष की उम्र से नीचे अल्पबल के शिकार बच्चों की संख्या 151 मिलियन या प्रत्येक चार बच्चों में से लगभग एक रहेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों और गरीब परिवारों के बच्चे अधिक पीड़ित होते हैं क्योंकि पोषण, भोजन की उपलब्धता का विषय है। हालांकि, यह भोजन, बेहतर स्वास्थ्य सुरक्षा, जल और स्वास्थ्य सेवाओं का भी विषय है, जिससे गरीब लोग प्राय: वंचित रहते हैं। उदाहरण के लिए, नेपाल में, संगत दर शहरी क्षेत्र में 27% और ग्रामीण क्षेत्र में 42% के साथ, अल्पबल की दर अमीर बच्चों में 26% और गरीब बच्चों में 56% थी। खाद्य कीमतों में जारी अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन और संघर्ष में विश्व के अनेक भागों में बेहतर पोषण को एक चुनौती बना दिया है।

किन्तु अनेक देशों के विषम अनुभव से प्रदर्शित होता है कि राजनीतिक प्रतिबद्धता पोषण में उल्लेखनीय सुधार ला सकता है। दो दशकों से भी कम समय में, ब्राजील ने माताओं की बेहतर शिक्षा, मातृत्व एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच, जल एवं सफाई का प्रावधान, और लक्षित सामाजिक अंतरणों के संयोजन ने, कुपोषण में शहरी-ग्रामीण अंतर को कम किया है। इतने ही समय में, प्लूरीनेशनल स्टेट ऑफ बोलिविया, गाउटेमाला और पेरू में कुपोषण की दर अधिक रही।

अच्छी गुणवत्ता के प्री-स्कूल कार्यक्रम भी, स्कूल के लिए युवा बच्चों को तैयार करने में महत्वपूर्ण होते हैं। विविध स्थानों जैसे आस्ट्रेलिया, इण्डिया, मोजाम्बिक, तुर्की और उरूग्वे, से प्राप्त साक्ष्य प्री-प्राइमरी शिक्षा के अल्पकालीन और दीर्घकालीन लाभों को प्रदर्शित करते हैं। ये श्रेणियां – साक्षरता और गणितीय कौशलों में प्रमुख शुरूआत से बेहतर ध्यान, प्रयास और पहल – ये सभी बेहतर शिक्षा और रोजगार निष्कर्षों में परिणित होते हैं।

2009 में ओ.ई.सी.डी. प्रोग्राम फॉर इन्टरनेशल स्टुडेंड असेस्मेंट (पी.आई.एस.ए.) के आधार पर ताज़ा साक्ष्य प्रदर्शित करते हैं कि 65 देशों में से 58 देशों में, 15 वर्षीय छात्र जिन्होंने प्री-प्राइमरी स्कूल में कम से कम एक वर्ष बिताया था, वे, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बाद भी, प्री-प्राइमरी स्कूल न जाने वाले छात्रों से आगे थे। ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील और जर्मनी में, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के नियंत्रण के बाद औसत लाभ एक वर्ष के स्कूली जीवन के समतुल्य था।

1999 से, प्री–स्कूल में नामांकित बच्चों की संख्या अपनी संख्या के लगभग आधी संख्या तक बढ़ी है। तथापि, गरीब देशों में अभी भी दो में से एक से अधिक बच्चे स्कूल नहीं जाते, जिससे यह स्तर छह में से पांच तक बढ़ जाता है। वे समूह जिन्हें प्री–स्कूल से अधिक फायदा होना चाहिए था वे ही अधिक नुकसान में हैं। नाइजीरिया में, 20% गरीब घरों में से 10 में से एक से कम की तुलना में, 20% अमीर घरों से 2 बच्चे ही स्कूल जाते हैं। (चित्र 1)

अल्पनिवेश, प्री–स्कूलिंग की अल्प कवरेज का प्रमुख कारण है। यह स्तर, अधिकतर देशों में शिक्षा बजट के 10% से भी कम के कारण है, और इसके भाग गरीब देशों में विशेषरूप से कम हैं। नेपाल और नाईजर, प्री–स्कूल पर जी.एन.पी. की 0.1% से कम खर्च करते हैं, और मेडागास्कर और सेनेगल 0.02% से कम।

निम्न सरकारी निवेश का एक परिणाम, प्राइवेट प्री–स्कूल में पंजीकरण का औसत भाग 33% होना है। सीरियन अरब रिपब्लिक में, प्री–प्राइमरी सकल पंजीकरण अनुपात 10% के साथ, प्राइवेट प्रावधान (प्रोविजन) का भाग 71% था। यह इस मांग को दर्शाता है कि इसकी पूर्ति सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा नहीं हुई।

यह असंभाव्य प्रतीत होता है कि शुल्क–प्रभार के विस्तार से प्राइवेट प्री–स्कूल अधिक गरीब परिवारों तक पहुंच सकेंगे, जिनके बच्चों के पंजीकरण कराने की संभावना कम है। भारत के आंध्र प्रदेश राज्य में, ग्रामीण क्षेत्रों में प्री–स्कूल पंजीकरण, 20% अमीर परिवारों में उच्चतम है, वहां के लग. भग एक–तिहाई बच्चे प्राइवेट संस्थानों में जाते हैं। प्री–स्कूल में गरीब परिवारों से आने वाले लगभग सभी बच्चों को सरकारी प्रदाताओं द्वारा पढ़ाया जाता है।

बच्चे का जीवन भी सेवा की गुणवत्ता को निर्धारित कर सकता है। चीन, पेरू और यूनाईटेड रिपब्लिक ऑफ तंजानिया के ग्रामीण क्षेत्रों में प्री–स्कूल जाने वाले बच्चों की संभावना शहरी बच्चों की अपेक्षा, अधिक भरी हुई कक्षा जिसमें कम योग्य शिक्षक और कम शिक्षण संसाधन हो, वहां जाने की अधिक संभावना हैं

सभी बच्चे प्री–स्कूल का लाभ प्राप्त कर सकें यह सुनिश्चित करने के लिए सुधारों की जरूरत है, जिसमें शामिल हैं: सुविधाओं का विस्तार और यह सुनिश्चित करना कि वे किफायती हो, प्राइमरी स्कूलों के साथ प्री–स्कूल को जोड़ने के उचित तरीकों को पहचानना, प्रारंभिक शैशवावस्था में घटित होने वाली घटनाओं के साथ प्री–स्कूल गतिविधियों को समन्वित करना है।

युवा बच्चों के लिए परिस्थितियों को बेहतर बनाने के संतुलित प्रयासों की महत्ता को इस वर्ष की रिपोर्ट के लिए विकसित एक नए सूचकांक द्वारा आगे उल्लिखित किया जाएगा, जो इन लक्ष्य की प्रगति का मूल्यांकन करती है, इसके तीन प्रमुख घटक है: स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा।

कुछ देश, सभी तीन संकेतकों पर, एक समान रूप से बेहतर (जैसे चिली) या एक समान रूप से कमजोर (जैसे नाईजर) स्कोर करते हैं। अन्यों का, सूचकांक पैमाने में अपनी कुल

सेनेगल प्री–स्कूल पर जीएनपी के 0.02% से भी कम खर्च करता है।

चित्र 1 : प्री–प्राइमरी शिक्षा में भागीदारी देशों के भीतर भिन्न–भिन्न होती है।
36 से 59 महीनों के बच्चों की प्री–स्कूल उपस्थिति पर, संपदा, स्थिति और लिंग के आधार पर

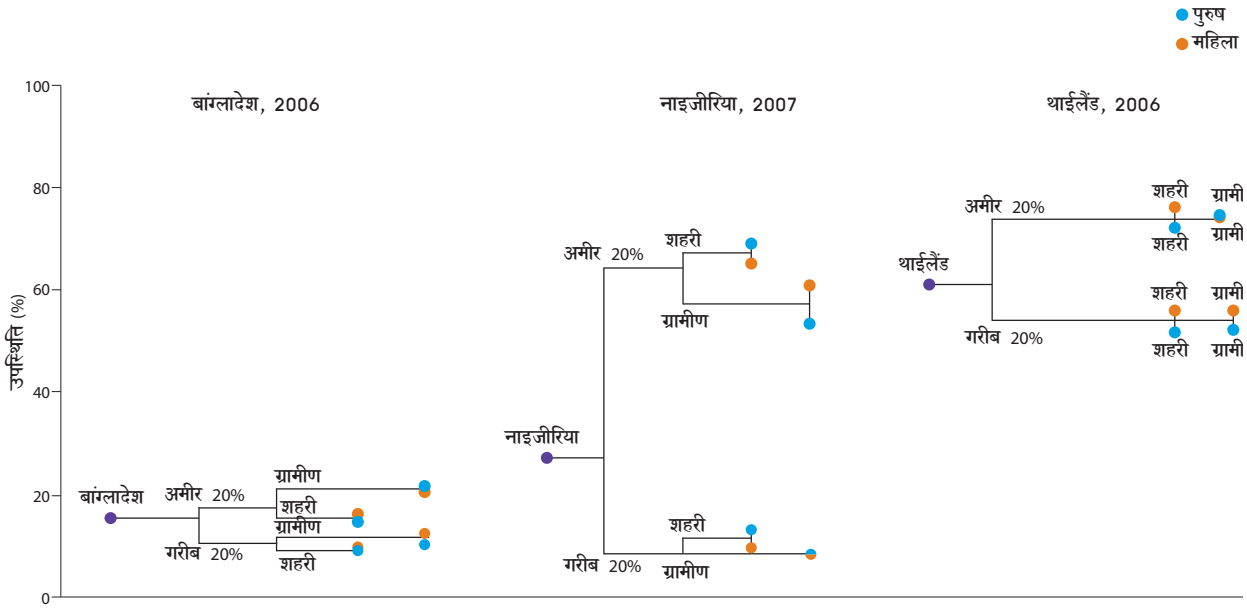

टिप्पणी: इन तीन देशों में प्री–प्राइमरी शिक्षा के लिए आधिकारिक उम्र 3 से 5 वर्ष है। नाइजीरिया में, 40% गरीब, शहरी क्षेत्रों के लिए दर्शाए गए हैं।
स्त्रोत: मल्टीपल इंडीकेटर्स क्लस्टर सर्वेक्षण डेटा पर आधारित ई.एफ.ए. वैश्विक निगरानी रिपोर्ट टीम कैलकुलेशन (2012)

वर्ष 2008 और 2010 के बीच में, उप-सहारा अफ्रीका में स्कूल न जाने वालों की संख्या बढ़कर 1.6 मिलियन हो गई।

स्थित के संबंध में, एक आयाम के लिए बहुत उंचा या बहुत निम्न स्कोर है, जो विशिष्ट चुनौतियों को प्रकट करता है। उदाहरण के लिए, जमैका और फिलीपींस दोनों की ही शिशु मृत्यु दर हजार बच्चों पर 30 है, किंतु दोनों के शिक्षा रिकॉर्ड अलग हैं। जमैका में 90% बच्चों की तुलना में, फिलीपींस में, 3 से 7 वर्ष की उम्र के केवल 38% बच्चे ही प्री-प्राइमरी या प्राइमरी स्कूल प्रोग्राम में पंजीकृत होते हैं। यह एकीकृत पहुंच में निवेश की आवश्यकता को दर्शाता है जो प्रारंभिक शैशवावस्था विकास के सभी आयामों को समान महत्ता देता है।

वैश्विक प्राइमरी शिक्षा को प्राप्त करना

वर्तमान स्थानों में, वैश्विक प्राइमरी शिक्षा (यू.पी.आई) के लक्ष्य, विशाल अंतर से अधूरा रह जाएगा। स्कूल में ज्यादा बच्चों को पहुंचाने के लक्ष्य, जिसे वर्ष 2000 में, डकार में, वर्ल्ड एजुकेशन फोर्म में, जोर-शोर से किया गया था, पर भी विराम लग गया है। स्कूल से बाहर प्राइमरी स्कूल में जाने योग्य बच्चों की संख्या, 1999 से, 108 मिलियन से घटकर 61 मिलियन रह गई, किंतु इस कमी के तीसरे हिस्से को 1999 से 2004 के बीच प्राप्त किया गया था। 2008 और 2010 के बीच प्रगति एक समान रही (चित्र 2)

दक्षिण और पश्चिम एशिया और उप-सहारा अफ्रीका ने 1999 में समान स्थिति से शुरूआत की थी, जिसमें प्राइमरी स्कूल जाने की उम्र के 40 मिलियन बच्चे स्कूल में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए, किंतु इन्होंने बहुत अलग गति से प्रगत की। 1999 से 2008 के बीच, दक्षिण और पश्चिम एशिया में, स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या घटकर 29 मिलियन रह गई, जबकि उप-सहारा अफ्रीका में कमी 11 मिलियन तक अधिक संतुलित रही।

चित्र 2: डकार के बाद शुरूआती वर्षों में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में कमी आई, किंतु बाद में गतिरोध आ गया

1999-2010 के बीच प्राइमरी स्कूल में जाने की उम्र के बच्चों की स्कूल में न जाने की संख्या

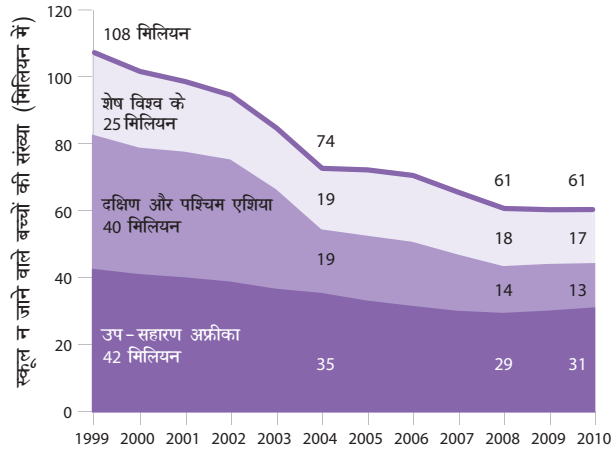

स्रोत: एनैक्स स्टेटिक्लस टेबल 5, यू.आई.एस. डेटाबेस

2008 और 2010 के बीच, उप-सहारा अफ्रीका में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में 1.6 मिलियन तक की वृद्धि हुई, किन्तु दक्षिण और पश्चिम एशिया में 0.6 मिलियन की कमी आयी। उप-सहारा अफ्रीका, विश्व में स्कूल न जाने वाले आधे बच्चों की संख्या, के लिए जिम्मेदार हैं।

इन देशों में, आंकड़ों सहित, 12 देश विश्व में स्कूल न जाने वाली लगभग आधी जनसंख्या के लिए जिम्मेदार हैं, नाइजीरिया, कुल 10.5 मिलियन और विश्व में स्कूल न जाने वाले 6 में से 1 बच्चे के साथ सूची में शीर्ष पर है (चित्र 3)। इसके 2000 के बाद 2010 में 3.6 मिलियन अधिक बच्चे स्कूल न जाने वाले थे। विषम रूप में, इथोपिया और इण्डिया ने, नारकीय रूप से स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या को कम करने में सफल रहे। भारत में, 2001 के बाद 2008 में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या 18 मिलियन से कम थी।

जो बच्चे स्कूल से बाहर थे, हो सकता है उनमें से कुछ ने देरी से स्कूल में प्रवेश लिया हो, जबकि कुछ ने बीच में ही छोड़ दिया हो और हो सकता है कि ज्यादातर कभी स्कूल में पंजीकरण ही न कराया हो। 2010 में, स्कूल न जाने वाले बच्चों के 47% को, कभी भी पंजीकरण न कराने की संभावना थी। निम्न आय देशों में यह अनुपात उच्चतम था, जहां स्कूल न जाने वाले बच्चों के 57% बच्चे कभी भी पंजीकरण की अपेक्षा नहीं कर सकते थे। इस समूह में लड़कों की अपेक्षा लड़कियां अधिक थी।

2015 से केवल 5 वर्ष पहले, 29 देशों में 85% से कम शुद्ध पंजीकरण अनुपात था। डेडलाइन तक, यू.पी.ई. के लक्ष्य को प्राप्त करने की, इन देशों की संभावना बहुत कम है।

आधिकारिक रूप से, स्कूल में जाने की उम्र के बच्चे, जिन्होंने 2010 स्कूल में प्रवेश नहीं लिया था, वे 2015 तक प्राइमरी सर्कल को पूर्ण करने में सक्षम नहीं होंगे। 2010 में, 70 देश ऐसे थे जिनकी शुद्ध भर्ती दर 80% से कम थी।

सही उम्र में बच्चों को स्कूल में दाखिल कराने और यह सुनिश्चित करने की कि वे व्यवस्था के अनुसार प्रगति करें और शिक्षा चक्र को पूर्ण करें, यह यू.पी.ई. के लिए चुनौती है। इस रिपोर्ट के विश्लेषण से प्रदर्शित होता है कि 2005 और 2010 के बीच 22 देशों के परिवारों में हुए सर्वेक्षण के आंकड़े, स्कूल में प्रवेश करने वाले 38% छात्र स्कूल में प्रवेश करने की आधिकारिक उम्र से 2 या 2 से अधिक वर्ष बढ़े थे। विश्लेषण में शामिल उप-सहारा अफ्रीका देशों में, प्राइमरी स्कूल में जाने वाले 41% बच्चे, प्रवेश की आधिकारिक उम्र से 2 या अधिक वर्ष बढ़े थे।

गरीब परिवारों के ज्यादातर बच्चे देर से शुरू करते हैं, क्योंकि सामान्यत: वे स्कूल से दूर रहते हैं, उनका स्वास्थ्य एवं पोषणिक स्थिति बुरी है, और/या उनके माता-पिता बच्चों को सही समय पर स्कूल भेजने की महत्ता के बारे में कम जागरूक हैं। कोलम्बिया में, अमीर परिवारों के 11% की तुलना में गरीब परिवारों में से 42% ने 2 या अधिक वर्ष देर से शुरू किया था।

चित्र 3: नाईजीरिया में, स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या विशाल है और बढ़ी है।

2001 से 2010 तक, प्राइमरी स्कूल में जाने की उम्र के, स्कूल न जाने वाले बच्चों की दर और संख्या

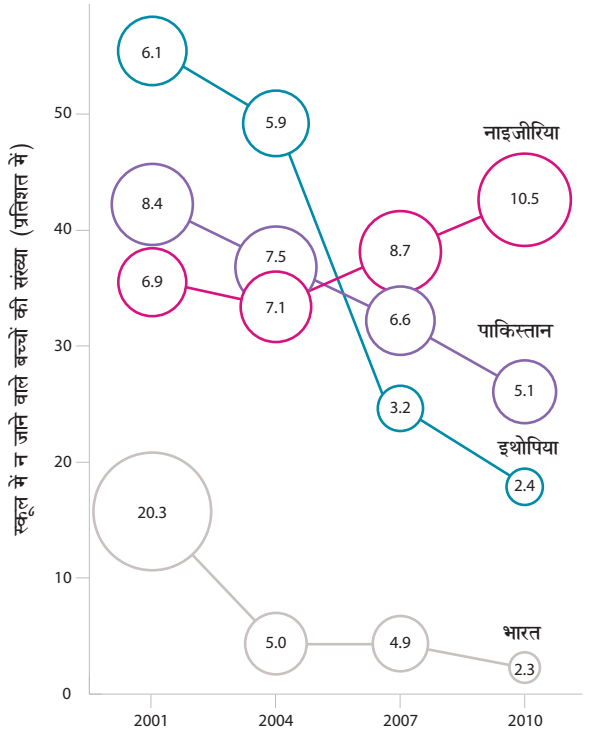

टिप्पणी : गुब्बारे का आकार, स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या के आनुपातिक हैं। गुब्बारों में दिखाई गई संख्या, स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या दर्शाती है। नाईजीरिया के लिए 2001 के आंकड़े 2000 से हैं। भारत के लिए 2010 के आंकड़े 2008 से हैं।
स्त्रोत : यू.आई.एस. डेटाबेस

देरी से प्रवेश करना, बच्चे के शिक्षा चक्र को पूर्ण करने को प्रभावित करता है। श्रेणी 3 तक, उन बच्चों ने जिन्होंने देरी से प्रवेश लिया, उनमें सही उम्र में स्कूल में प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में, स्कूल छोड़ने की संभावना 4 गुणा अधिक होती है।

गरीबी, बच्चों को जल्दी स्कूल छोड़ने की संभावना पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। युगांडा में, वर्ष 2006 में, अमीर क्विनटाईल के प्रत्येक 100 में से 97 बच्चों ने प्राइमरी स्कूल में प्रवेश लिया और 80 अंतिम श्रेणी तक पहुंचे, जबकि निम्न क्विनटाईल से 100 में से 90 बच्चों ने स्कूल में प्रवेश लिया और केवल 49 बच्चे ही अंतिम श्रेणी तक पहुंचे।

वंचित बच्चों को सही समय पर स्कूल में प्रवेश करने और प्रगति करने से रोकने वाली बाधाओं पर काबू पाने के लिए, क्रमबद्ध सुधार आवश्यक है। अनेक देशों में, कीमत प्राथमिक कारण है जिसकी वजह से माता–पिता अपने बच्चों का स्कूल में पंजीकरण नहीं कराते या उन्हें स्कूल से बाहर रखते हैं। हालांकि, औपचारिक रूप से स्कूल फीस को हटाने के बाद भी, इस रिपोर्ट के लिए 8 देशों के विश्लेषण में इस प्रकार के लगभग 15% खर्च के लिए आधिकारिक या अनाधिकारिक फीस उत्तरदायी है।

अमीर परिवार, अपने बच्चों की शिक्षा पर, बेहतर गुणवत्ता स्कूलिंग के लिए उनके अवसरों में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण रूप से अधिक खर्च करने में सक्षम होते हैं। इसमें प्राइवेट स्कूलिंग या प्राइवेट ट्यूशन पर अधिक खर्च शामिल है। नाईजीरिया में, 20% अमीर परिवार, प्राइमरी स्कूल में बच्चे के प्रवेश के लिए 20% गरीब द्वारा खर्च किए जाने वाले व्यय की तुलना में 10 गुणा से अधिक खर्च करते हैं। हालांकि, गरीब परिवारों के लिए निम्न फीस वाली प्राइवेट स्कूलिंग भी पहुंच से बाहर है। लागोस स्लम में तीन बच्चों को स्कूल में भेजने की कीमत न्यूनतम मजदूरी के 46% के समतुल्य है। बांग्लादेश और इजिप्ट में सप्लीमेंटरी ट्यूशन पर अमीर, गरीब की तुलना में चार गुणा अधिक खर्च करता है, और इसकी अधिक संभावना है कि इस प्रकार के ट्यूशन पर निवेश करना पहली प्राथमिकता है।

यू.पी.ई. के कार्यन्वयन के लिए औपचारिक स्कूल फीस को हटाना एक आधारभूत कदम है। किंतु यह सरकार के लिए प्रतिपूरक कदम, जैसे स्कूलों को उनकी लागत कवर करने के लिए अनुदान देना ताकि वे माता–पिता पर अन्य प्रभार अनौपचारिक रूप न लगाएं, उठाने के लिए भी महत्वपूर्ण है। सामाजिक संरक्षण उपाय, जैसे नकद अंतरण, यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि गरीब परिवार के पास अन्य आधारभूत जरूरतों पर उनके खर्च पर समझौता किए बिना सभी स्कूली लागतों को कवर करने के लिए वित्तीय साधन हो। यह सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाए जाने कि अमीर परिवारों की प्राइवेट स्कूलिंग और प्राइवेट ट्यूशन पर अधिक खर्च की क्षमता असमानता को बढ़ाने का कार्य न करें।

बांग्लादेश और इजिप्ट में, निजी ट्यूशन पर अमीर, गरीब की तुलना में चार गुणा अधिक खर्च करता है

युवा लोगों और प्रौढ़ों के लिए शिक्षण और जीवन कौशल को बढ़ावा देना

हाल ही के वर्षों के सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों ने युवाओं के लिए कौशलों और शिक्षण अवसरों की उपलब्धता पर ध्यान केंद्रित किया है। इस रिपोर्ट के विषयक भाग से पता चलता है कि ये चुनौतियां, एक महत्वपूर्ण लक्ष्य, जिसे 2000 में स्थापित ई.एफ.ए. लक्ष्यों के लिए बनाए गई प्रतिबद्धताओं की अस्पष्टता की वजह से इसके योग्य ध्यान नहीं दिया जा सका, के लिए तात्कालिकता की भावना पैदा करती है।

औपचारिक माध्यमिक स्कूलिंग, कार्य और जीवन के लिए आवश्यक कौशलों के विकास के लिए एक प्रभावी तरीका है। माध्यमिक स्कूल में बच्चों के पंजीकरण की संख्या में वैश्विक वृद्धि के बावजूद, 2010 में, निम्न आय वर्ग देशों में निम्न माध्यमिक स्कूल हेतु सकल पंजीकरण अनुपात केवल 52% था, जिससे अनेक मिलियन युवा लोग, एक सभ्य जीवन जीने के लिए आवश्यक आधारभूत कौशलों के बिना, जीवन का सामना करते हैं। निम्न माध्यमिक स्कूल के 71 मिलियन किशोर, 2010 में स्कूल तक नहीं जाते थे। ये संख्या 2007 से स्थिर है। स्कूल न जाने वाले 4 किशोरों से 3 दक्षिण और पश्चिम एशिया और उप–सहारा अफ्रीका में रहते हैं।

1999 की तुलना में आज 25% अधिक बच्चे माध्यमिक स्कूल में जाते हैं। उप-सहारा अफ्रीका में पिछली कुछ अवधि में पंजीकृत छात्रों की संख्या दोगुणी हो गई है, इसके बावजूद, 2010 में विश्व को निम्नतम कुल माध्यमिक पंजीकरण अनुपात, 40% हो गया है।

कुछ युवा लोग तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से कौशल विकसित करते हैं। 1999 से ऐसे कार्यक्रमों में पंजीकृत माध्यमिक स्कूल छात्रों का अनुपात 11% बना हुआ है।

कौशल केवल स्कूल में विकसित नहीं होते। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के पास कौशल एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के श्रेणीकरण के लिए ढांचों की एक श्रृंखला है। किन्तु डकार में, ई.एफ.ए. लक्ष्य स्थापित करने के 12 वर्षों बाद, समयक् शिक्षण और जीवन कौशल प्रोग्राम तक न्यायसंगत पहुंच में संघटित प्रगति पर सहमति बनाने में, अंतर्राष्ट्रीय तुलनायोग्य संकेतकों के सुसंगत सेट पर सहमति बनाने में, और प्रगति कैसे हो, इसका आकलन करने में, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय अभी भी बहुत दूर हैं। परिस्थितियां बदल रही है, इसके कुछ अच्छे संकेत हैं, किंतु हाल ही के विकास, डेडलाईन जाने से पहले सही तरीके से 3 लक्ष्यों को मापने के लिए सही समय के अंदर पर्याप्त डेटा उत्पन्न नहीं करते हैं।

कौशल विकास के लिए 2015 के पश्चात् किसी भी अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्य को अधिक सुस्पष्ट रूप में परिभाषित करने और प्रगति को मापने के तरीके को स्पष्ट रूप से निर्धारित करने की आवश्यकता है। इसे सूचना के वास्तविक आकलन पर आधारित होना चाहिए, जिसे लक्ष्य 3 को मॉनीटर करने के प्रयासों में आनी वाली समस्याओं से बचने के क्रम में, प्रापत किया जा सके।

डकार ढांचे में कुछ जोखिम संबंधित कार्य विनिर्दिष्ट हैं, जिससे युवा लोगों को प्रासंगिक जीवन कौशलों के विकास द्वारा बचाने की आवश्यकता है। इन जोखिमों में से एक एचआईवी और एड्स है। एचआईवी से संबंधित जानकारी अभी बहुत कम है। 119 देशों पर आधारित हाल ही के वैश्विक अनुमान प्रदर्शित करते हैं कि 15 से 24 वर्ष की आयु के बीच की 24% युवा महिलाएं और 36% युवा पुरूष एचआईवी के सैक्सुअल अंतरण से बचने के तरीकों को पहचानने और इसके अंतरण के संबंध में प्रमुख गलतफहमियों को दूर करने में सक्षम हैं।

119 देशों के 24% युवा महिलाएं जानती हैं कि एचआईवी के संक्रमण से कैसे बचा जा सकता है।

उच्च प्रसार दरों वाले देशों में एचआईवी और एड्स की जानकारी भी कम हो। वर्ष 2007 में, दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका के 15 देशों में श्रेणी 6 के लगभग 60,000 छात्रों (औसत आधार पर, लगभग 13 वर्ष) को उनकी एचआईवी और एड्स की जानकारी के आधार पर आकलित किया गया। यह परीक्षण भाग लेने वाले देशों में शिक्षा मंत्रालय द्वारा अपनाई गई एचआईवी शिक्षा के लिए आधिकारिक पाठ्यक्रम ढांचे पर केंद्रित है। इसके परिणामस्वरूप, आधिकारिक पाठ्यक्रम के अप्रभावी क्रियान्वयन और संभाव्य खराब प्रारूप की ओर इशारा करते हैं। औसत आधार पर, केवल 36% छात्र न्यूनतम अपेक्षित जानकारी स्तर तक पहुंचे और मात्र 70% वांछित स्तर तक पहुंचे।

केवल वही सुनिश्चित करना ही पर्याप्त नहीं है कि युवाओं को अपने स्वास्थ्य और अन्यों के स्वास्थ्य को संरक्षित करने की जानकारी हो, उदाहरण के रूप में, यदि वे सही समय पर सही कार्य करने के लिए स्वयं को सशक्त न समझते हो।

एचआईवी और एड्स को केन्द्र में रखकर दी जाने वाली जीवन कौशल शिक्षा युवा लोगों को उनके स्वास्थ्य को सुरक्षित करने वाले रवैये और व्यवहार को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, उदाहरण के लिए, उन्हें सैक्सुअल संबंधों पर बात करने के लिए सशक्त बनाना। मनोवैज्ञानिक और अंतर्वैयक्तिक कौशलों जैसे प्रभावी संचार, आत्म सम्मान, निर्णय लेने की क्षमता और बातचीत, की जानकारी द्वारा ऐसा किया जा सकता है। जीवन कौशल कार्यक्रम, जो गंभीर मुद्दों में छात्रों की भागीदारी की अनुमति देते हैं, के पाठ्यक्रम में पूरक विषय जैसे स्वास्थ्य शिक्षा और व्यापक एचआईवी और एड्स शिक्षण को शामिल किया जाना चाहिए।

प्रौढ़ निरक्षरता में 50% की गिरावट

प्रौढ़ और उनके बच्चों के सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण के लिए साक्षरता बहुत ही आवश्यक होती है। हालांकि, अभी तक इस लक्ष्य की प्रगति बहुत ही सीमित रही है, विशेष रूप से सरकार और दाता महत्वहीनता के कारण। 2010 तक भी 775 मिलियन प्रौढ़ व्यक्ति थे जो पढ़ और लिख नहीं सकते। जिनमें से आधे दक्षिण और पश्चिम एशिया तथा पांचवा भाग उप-सहारा अफ्रीका के थे।

2005–2010 के आंकडों के अनुसार 146 देशों में से 81 देशों में, महिलाएं पुरुषों से अधिक साक्षर हैं। इन देशों में से, 21 देशों ने लिंग भेदभाव की चरम भावना को प्रदर्शित किया है, जहां प्रत्येक दस साक्षर पुरुषों पर सात से भी कम साक्षर महिलाएं हैं।

वैश्विक रूप में, प्रौढ़ साक्षर दर पिछले दो दशकों 1985–1994 में 76% से 2005–2010 में 84% की दर से बढ़ी है। परंतु 1998–2001 में 90% की निम्न प्रौढ़ साक्षरता दर के साथ 43 देशों में से 2015 तक केवल तीन देश ही निरक्षरता को 50% तक कम करने के लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे। कुछ देश बहुत ही बड़े अंतर से इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहें (चित्र 4)।

हालांकि, कुछ आधुनिक देशों के समूहों ने – जैसे, माली ने विशेष वृद्धि की है, जिसने अपनी साक्षरता दर को दोगुना कर दिया, तथापि, कुछ अन्य देशों, जैसे, मेडागास्कर, ने पिछले दो दशकों से इस दर में ह्रास का अनुभव किया।

प्रौढ़ों की जनसंख्या का लगभग तीन हिस्सा, जो शिक्षित हैं, वे केवल दस देशों में ही रहते हैं। नाइजीरिया में, 35 मिलियन तक की दर तक पहुंचने के लिए, साक्षर प्रौढ़ों की संख्या में पिछले दो दशकों से 10 मिलियन तक की वृद्धि हुई है।

केवल दस देशों में तीन हिस्से अशिक्षित प्रौढ़ दर

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या ये डेटा समस्या की चरम सीमा को प्रस्तुत करते हैं। प्रौढ़ों से पूछा जाता है कि क्या वे परीक्षा में अपना सामर्थ्य प्रदर्शित करते हुए पढ़ व लिख सकते हैं। प्रौढ़ कौशल पर सफलता प्राप्त करने का प्रत्यक्ष दृष्टिकोण शिक्षा कौशल के उत्कृष्ट प्रोफाइल को उपलब्ध कराता है।

आमतौर पर, यह माना जाता है कि बच्चों को पढ़ने, लिखने और गणना करने का अभ्यास होने में स्कूल के चार या पांच वर्ष लग जाते हैं। हालांकि, इस रिपोर्ट के लिए हाउसहोल्ड सर्वेक्षण का नया मूल्यांकन, यह दर्शाता है कि निम्न और

चित्र 4: अधिकतर देश प्रौढ़ शिक्षा लक्ष्य अधिक अंतर से खो देंगे

प्रौढ़ शिक्षा दर, 1998–2009 से 2015 (योजना)

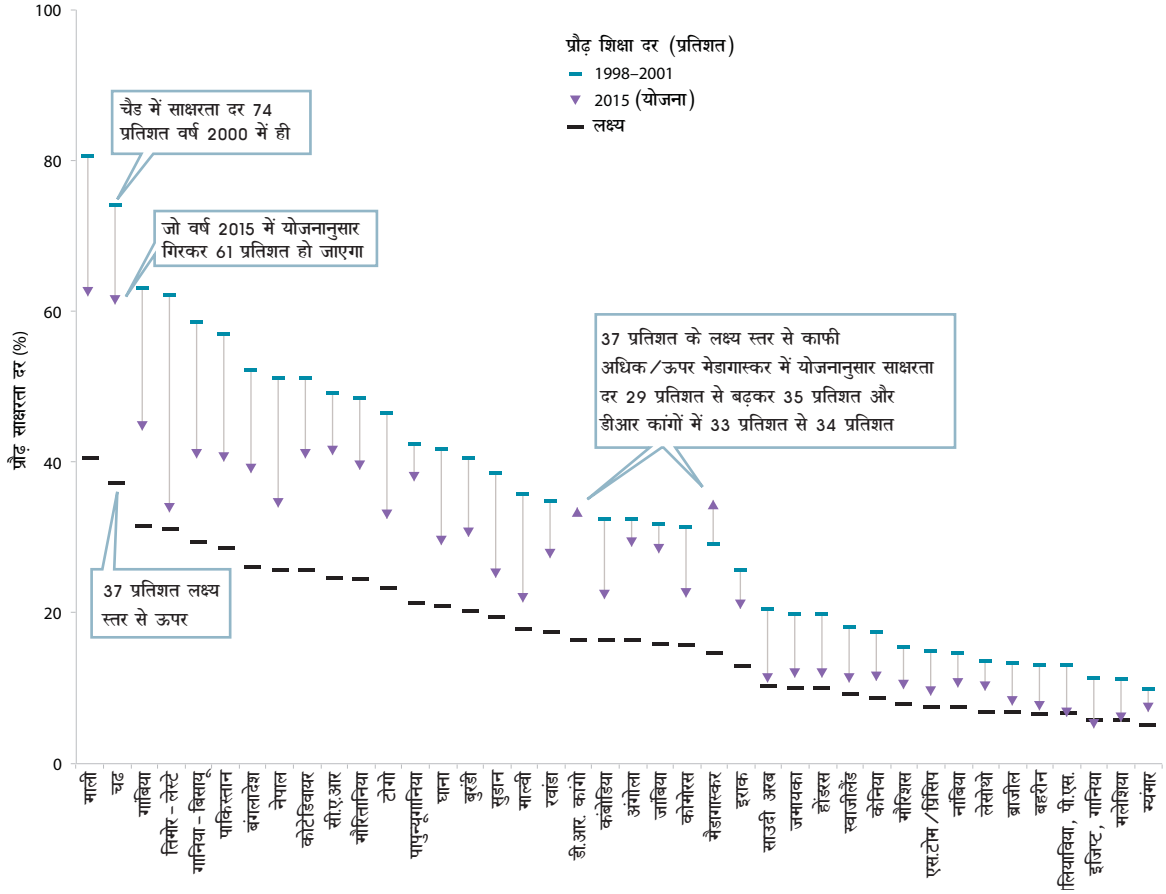

नोट: चित्रें में दिखाए गए वे देश हैं जिनके लिए 2015 तक योजना संभावित थी और उनकी साक्षरता दर 1998–2001 में प्रौढ़ शिक्षा दर 10% से ऊपर थी।
स्रोत: सलंग्न, सांख्यिक तालिका 2: यूआईएस डाटा बेस

निम्नतर मध्यम आय देशों ने अपेक्षित से अधिक संख्या में शिक्षित बने बिना प्राथमिक स्तर विद्यालय को पूरा किया। उदाहरण के लिए, घाना में 15 से 29 की आयु वर्ग वाली आधी से भी अधिक महिला जनसंख्या और एक-तिहाई पुरुष जनसंख्या, जिन्होंने स्कूल के छह वर्ष पूरे कर लिए हो, वे 2008 में किसी भी वाक्य को पढ़ नहीं सकें। इसके अलावा, 28 प्रतिशत युवा महिलाएं और 33% युवा पुरुष केवल वाक्य का कोई भाग ही पढ़ सकें। (चित्र 5)

जिस वातावरण में हम रहते हैं, वह साक्षरता कौशल प्राप्त करने और व्यवस्थित बनाए रखने में उनकी सामर्थ्य को प्रभावित कर सकता है। जोरडन, मनगोलिया, पेल्सटीन और पेरागे में साक्षरता मूल्यांकन एवं निरीक्षण कार्यक्रम का प्राथमिक निष्कर्ष यह दर्शाता है कि साक्षरता दर, कार्यों और उस वातावरण की श्रृंखला में व्यापक अंतर को आवरित करती है जो प्रौढ़ों के शिक्षा कौशल को आकृति प्रदान करते हैं।

उच्च आय वर्गीय देशों में, स्कूलिंग के वैश्विक विस्तार ने पूर्व में निरक्षरता के उच्च स्तरों को उजागर किया है। हालांकि, प्रत्यक्ष मूल्यांकन यह प्रदर्शित करता है कि इन देशों में पांच प्रौढ़ों में से एक, लगभग 160 मिलियन प्रौढ़ों के बराबर, का बहुत कम साक्षरता कौशल होता है – वह अपने प्रतिदिन के कार्यों में प्रभावित रूप से पढ़ने, लिखने और गणना करने में अक्षम होता है, उदाहरण के लिए, जॉब के लिए आवेदन करने या (मेडिसन बोतल पर) सूचना की जानकारी प्राप्त करना। ऐसे लोग सामाजिक प्रतिकूलता का सामना करते हैं, जिनमें गरीब, प्रवासी और जातीय अल्पसंख्यक विशेष रूप से प्रभावित होते हैं।

पढ़ने और लिखने के कौशल में कमजोर लोग अक्सर कम आत्मनिर्भरता की भावना से प्रभावित एवं निंदित होते हैं। यह प्रौढ़ साक्षरता पहल के लिए एक मुख्य चुनौती को प्रस्तावित करता है। प्रतिदिन में साक्षरता कौशल का उपयोग करने से लाभान्वित प्रतिभागियों को मदद करने वाले कार्यक्रम, प्रौढ़ों को बिना किसी निंदा की परवाह किए उन्हें कार्यक्रम में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। जो उनकी भागीदारी से संबद्ध हो सकते हैं। उच्च स्तर की राजीतिक प्रतिबद्धता और दीर्घकालीन, संगत नीति दृष्टिकोण, उपयुक्त संसाधनों द्वारा प्राप्त, को समस्या पर काबू पाने की आवश्यकता होती है।

60 देशों में, लड़कियां प्राथमिक शिक्षा में प्रतिकूलता का सामना करती हैं।

लिंग अनुरूपता और समानता उपलब्धि

शिक्षा में लिंग अनुरूपता और समानता मूलभूत मानव अधिकारों और साथ ही साथ अन्य सामाजिक एवं आर्थिक परिणामों को सुधारने के साधनों को स्थापित करती है। प्राथमिक नामांकन में लिंग अंतर को कम करना, 2000 तक ई.एफ.ए. की बड़ी सफलताओं में से एक है। तब भी, बहुत से देश 2015 तक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में लिंग समरूपता में असफलता के कारण अभी भी संकट में हैं। और शिक्षा अवसरों एवं परिणामों को समरूप बनाना सुनिश्चित कराए जाने की आवश्यकता है।

अड़सठ देशों ने अभी तक भी प्राथमिक शिक्षा में लिंग समरूपता को प्राप्त नहीं किया है, और उनमें से साठ देशों में लडकियों की स्थिति प्रतिकूल है। इथोपिया और सेंघल जैसे देशों ने बहुत प्रगति की है, जबकि, एंगोला और एरिट्रिया जैसे देश अभी भी पिछड़े हुए हैं।

बहुत से ऐसे देश जहां लडकियों को अति प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, या 0.70 से निम्न लिंग समरूपता सूचकांक, 1990 में 16 से 2000 में 11 तक गिरा, और 2010 में अफगानिस्तान में केवल 1 तक गिरा (चित्र 6)। हालांकि, अफगानिस्तान की रैंकिंग या स्थान सबसे निचला रहा तथा वर्तमान वर्षों में उसने विशेष प्रगति की है।

0.90 से कम लिंग अनुरूपता सूचकांक द्वारा मूल्यांकित – गंभीर प्रतिकूलता – दस साल पहले से भी कम है। 1999 और 2010 दोनों वर्षों के आंकडों के अनुसार, 167 देशों में से तेंतीस देशों में 1999 में 0.90 से कम लिंग अनुरूपता सूचकांक पाया गया, उप-सहारा सहित।

चित्र 5: कई युवाओं के लिए विद्यालय के 6 वर्ष उनकी साक्षरता कौशल के लिए अपर्याप्त हैं।

साक्षरता स्थिति, 15 से 29 आयु वाले पुरूष और महिलाएं जिन्होंने विद्यालय में केवल 6 वर्ष पूरे किए, चुने हुए देश 2005-2011 (%)

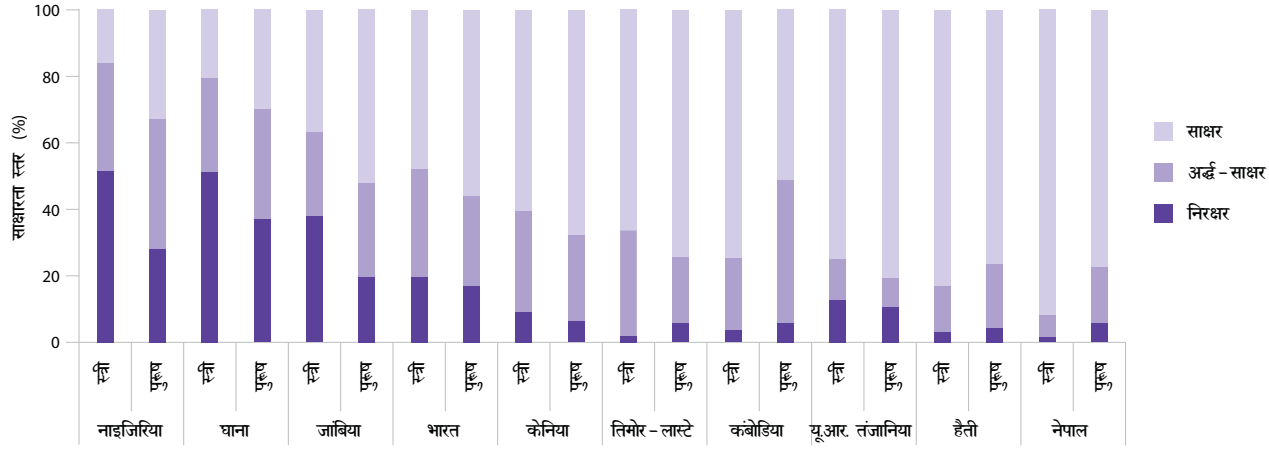

स्रोत : ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट दल विश्लेषण (2012) जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य सर्वेक्षण डाटा पर आधारित

2010 तक, इस समूह में उप-सहारा अफ्रीका में 12 देशों सहित केवल 17 देश ऐसे थे। पर्याप्त प्रगति करने वाले देशों ने अब लिंग अनुरूपता को प्राप्त कर लिया है, जैसे बरूंडी, भारत और युगांडा, यह सब, स्कूल में लड़कियों की भागीदारी को सुधारने हेतु प्रयास कर, समुदायों को गतिशील बना, लड़कियों को वित्तीय सहायता देने का लक्ष्य बना, लिंग संवेदनशील शिक्षण पद्धतियों को सुनिश्चित कर, और सामग्रियों का उपयोग कर तथा सुरक्षित व स्वस्थ स्कूल वातावरण प्रदान कर किया गया।

लड़कियों की निम्न भागीदारी के कारणों का पता लगाना लिंग अनुरूपता पर सफलता हासिल करने के लिए आवश्यक है।

नौ देशों में हाउसहोल्ड सर्वेक्षण डेटा की इस रिपोर्ट का मूल्यांकन यह दर्शाता है कि लड़कियों को प्राथमिक स्कूल में प्रवेश पाने के लिए लड़कियों से अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परंतु एक बार स्कूल में दाखिला होने के बाद उन्हें अपनी पढ़ाई पूरा करने का बराबर का अवसर प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, गिनी में, गरीब घरों की 100 लड़कियों में से केवल 40 लड़कियां ही 52 लड़कों की तुलना में प्राथमिक स्तर स्कूल को पूरा कर पाती हैं। व्यापक स्तर पर यह प्रथम स्तर में लड़कियों की निम्नतर भागीदारी के कारण हुआ: गरीब घरों की 100 लड़कियों में से 57 लड़कों की तुलना में केवल 44 लड़कियों ने ही स्कूल में दाखिला लिया।

माध्यमिक स्तर पर लिंग असमानता वाले 97 देशों में से आधे देश ऐसे हैं जहां स्कूल में लड़कियों की तुलना में लड़कों की

चित्र 6: लिंग भेद कम करने में प्रगति हुई है परंतु लड़कियों को अब भी स्कूल तक पहुंचने में बड़ी रूकावटों का सामना करना पड़ता है।

कुल नामंकन अनुपात का लिंग साम्यता सूचंकाक, 1990 में 0.90 से कम जीपीआई वाले देश

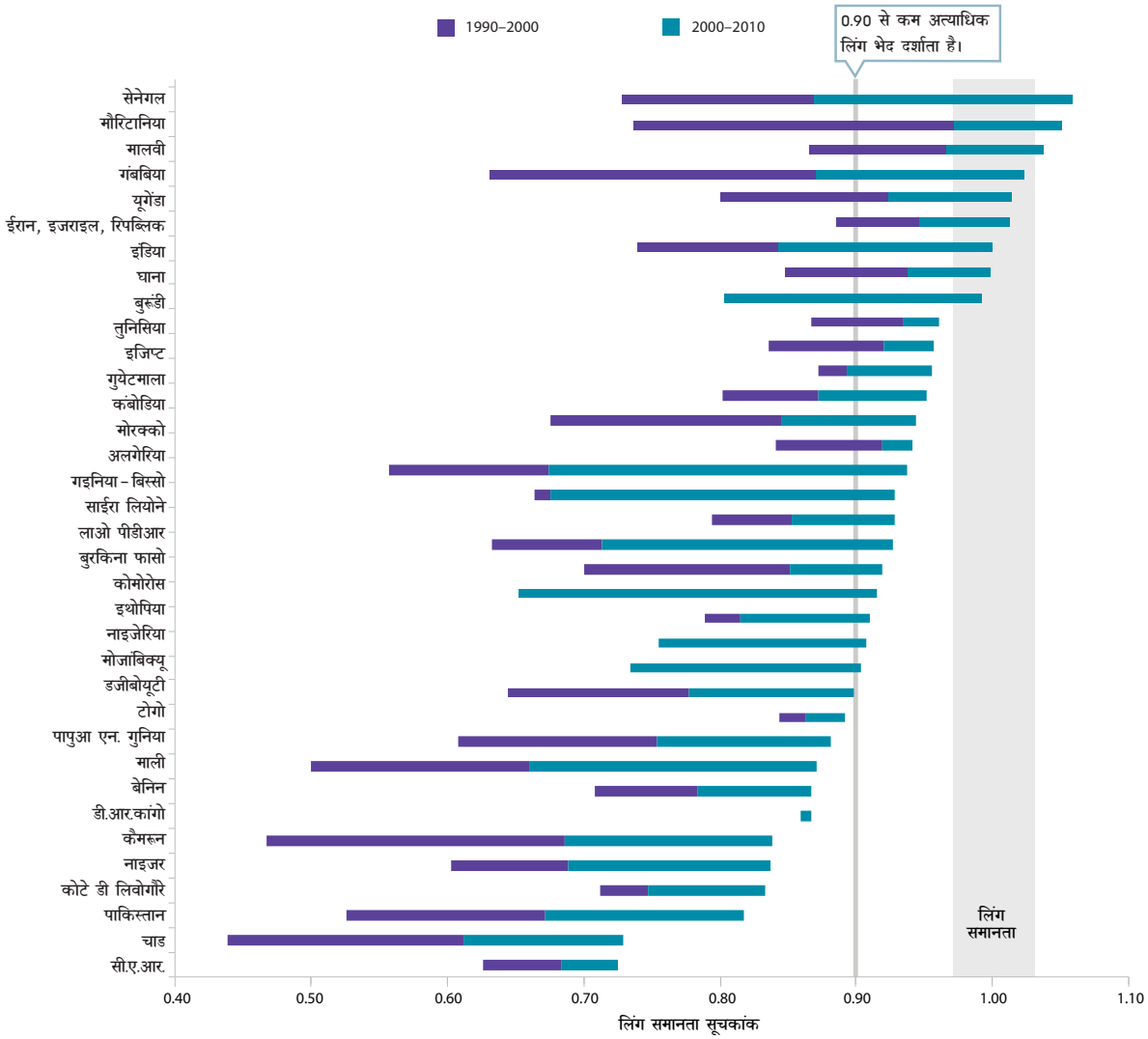

टिप्पणियां: केवल 1990, 200 और 2010 के डाटा वाले देश प्लाट (दर्शाए) गए हैं। यदि किसी विशिष्ट वर्ष के लिए सूचना उपलब्ध नहीं थी तो सूचना पिछले या अगले दो वर्षों के लिए प्रयुक्त कर ली जाती है। अफगानिस्तान और ओमान को छोड़ दिया गया है क्योंकि उन्होंने नकारात्मक प्रवृत्ति अनुभव की।
स्रोत: यूआईएस डाटाबेस।

माध्यमिक स्कूल स्तर पर लिंग विशमता वाले आधे से अधिक देशों के स्कूलों में लड़कों की संख्या लड़कियों से कम है।

संख्या कम है। ये देश धनवान बनने की ओर सर्वत्र उच्चतम भागीदारी हेतु अग्रसर हैं। ये लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में संकेनद्रित हैं, परंतु ऐसे तीन निम्न आय देश भी हैं जहां लड़कों की दशा दयनीय है: बांग्लादेश, मयंमार और रवान्दा।

माध्यमिक स्तर पर लडकों की संख्या कम होने का मुख्य कारण गरीबी तथा श्रम बाज़ार में उनको धकेलना मालूम होता है, जैसा लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, होंडुरास में, 15–17 वर्ष की उम्र वाले दस लड़कों में से छह लड़के वेतन कार्य पर थे, जिनमें से केवल 2 ही स्कूल में पढ़ते थे। इसके विपरीत, 10 लड़कियों में से केवल 2 ही लड़कियां वेतन कार्य पर थी।

लड़के स्कूल के वातावरण और साथ ही अध्यापकों के व्यवहार के कारण भी स्कूल छोड़ देते हैं। हालांकि, लड़कों और लड़कियों के मध्य अधिगम में अंतर, समानताओं की तुलना में कम महत्वपूर्ण होता है, तथापि अध्यापकों को ऐसे भेदभाव के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है, और तदनुसार उन्हें अपने अध्यापन एवं मूल्यांकन पद्धतियों को समायोजित करने हेतु तैयार रहना चाहिए। एकल–लिंग आधारित स्कूल एवं कार्य–प्रदर्शन द्वारा कक्षाओं का संचालन करना, ऐसी दो पद्धतियां थी, जिनको स्कूल आधार बनाने का प्रयास किया गया परंतु कुछ कारणों से ये पद्धतियां अनुपयुक्त रहीं।

लड़के अधिगम परिणामों में प्रतिकूलता का भी सामना करते, विशेषकर पढ़न अधिगम में। बहुत समय से, यह लिंग विषमता लड़कियों के पक्ष में बढ़ती गई। लड़के गणित में लगातार प्रगति करते रहें, परंतु कुछ प्रमाण है जिससे यह अंतर संकीर्ण हो सकता है।

स्कूल में समरूपता से प्रदर्शन करने हेतु लडकों या लड़कियों की क्षमताओं में कोई अंतर्निहित अंतर नहीं है। पढ़न अधिगम में अंतर या विषमता को कम करने के लिए, अभिभावकों, अध्यापकों और नीति–निर्माताओं को रचनात्मक तरीके ढूंढने चाहिए ताकि लड़के अधिक पढ़ पाएं, जिसमें डिजिटल पाठ में उनकी रूचि लाना भी सम्मिलित होता है। गणित विषय में अंतर को कम करने हेतु, कक्षा से बाहर लिंग समरूपता में प्रगति करना, विशेषरूप से रोजगार अवसरों में, विषमताओं को कम करने में मुख्य भूमिका अदा कर सकता है।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना

प्राथमिक स्कूल आयु वाले विश्व के 650 मिलियन बच्चों के मध्य, यह केवल उन 120 मिलियन बच्चों पर ही ज़ोर देने का समय नहीं है जो ग्रेड 4 तक नहीं पहुंच पाए, बल्कि साथ ही उन 130 मिलियन बच्चों पर भी ध्यान देने का समय है जो स्कूल में तो हैं परंतु मूलभूत शिक्षा अर्जित करने में विफल हो रहे हैं।

अधिगम परिणामों में असमानता के पहलुओं और उनके कारणों का विशलेषण करना, उन नीतियों को आकार प्रदान करने में मदद कर सकता है जो गरीब बच्चों को उनकी विषम परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाता है। चौहत्तर देशों और आर्थिकी में, जिन्होंने 2009 पीसा (पीआईएसए) सर्वेक्षण में भाग लिया था, उसमें सामाजिक–आर्थिक सूचकांक का चतुर्थक उच्च रहा जिससे विद्यार्थी संबंध रखता है, बेहतर प्रदर्शन के साथ लड़कों और लड़कियों का समान पैटर्न रहा। (चित्र 7)।

चित्र 7: सीखने/पढ़ने की उपलब्धि सामाजिक–आर्थिक स्थिति अनुसार बदलती है।

गणित में स्तर 2 या उससे ऊपर विद्यार्थियों का प्रतिशत आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति और लिंग अनुसार, 2009 पीसामें

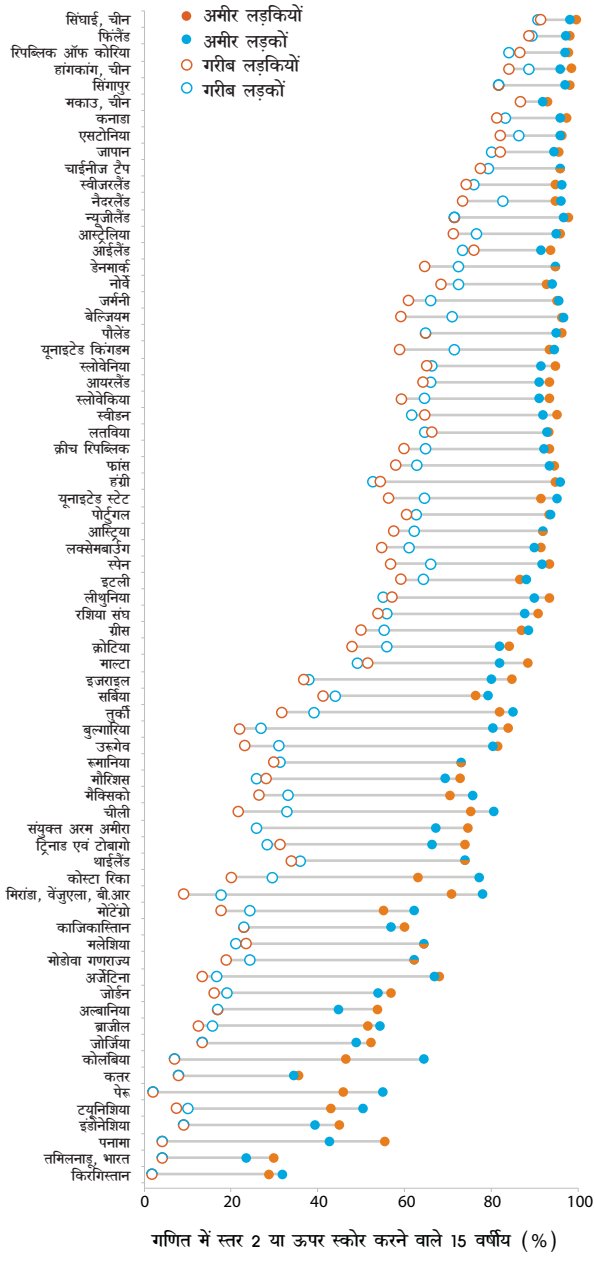

टिप्पणियां: 2009 पीसा में भाग लेने वाले देशों और आर्थिक पक्षों में से अजरबेज़ान, हिमालय प्रदेश (भारत) और लिचेतनस्तेन को शामिल नहीं किया गया। निर्धन/धनी पीसा के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति सूचकांक के निम्न/ऊपरी चतुर्थक का संदर्भित करता है।

स्रोत: आल्टीनोक (2012बी), 2009 पीसा डाटा वाकर (2011) पर आधारित।

मूल्यांकन में भाग लेने वाले मध्यम आय वर्ग देशों में, विद्यार्थियों का प्रदर्शन बहुत कम था : औसत पर, कम से कम आधे विद्यार्थियों में गणित में स्तर 2 से भी कम स्कोर किया। तब भी, बहुत समय से, कुछ मध्यम आय वर्ग देश मध्य मान स्कोर को बढ़ाने और अधिगम परिणामों में असमानता को कम करने में समर्थ रहे हैं। ब्राजील और मेक्सिको में सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रत्येक चतुर्थक में निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 2003 और 2009 के मध्य गिरा। यह विशेषरूप से आकर्षण का केन्द्र रहा कि माध्यमिक शिक्षा में भागीदारी उस समय महत्वपूर्ण रूप से बढ़ी। 1990 के अंत में इन देशों में क्रियान्वित की गई लक्ष्यित सामाजिक सुरक्षा नीतियां, प्रतिकूलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों द्वारा लाभ का विशेष स्रोत हैं।

अधिगम को सुधारने में अध्यापक सबसे महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। बहुत से क्षेत्रों में, अध्यापकों की कमी, और मुख्य रूप से प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी ई.एफ.ए. लक्ष्यों को प्राप्त करने में मुख्य बाधा को दर्शाती है। नवीनतम अनुमान यह सुझाव प्रदान करता है कि 112 देशों को 2015 तक प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को कुल 5.4 मिलियन कार्यबल बढ़ाने की आवश्यकता है। वैश्विक प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु 2 मिलियन अतिरिक्त पदों और प्रोफेशन छोड़ने वाले 3.4 मिलियन पदों को भरने के लिए नई भर्ती करने की आवश्यकता है। उप-सहारा अफ्रीका देशों को यू.पी.ई. की उपलब्धि हेतु 2 मिलियन अध्यापकों से भी अधिक की भर्ती करने की जरूरत है।

प्रति छात्र प्राथमिक स्कूल अध्यापकों की संख्या शिक्षा की गुणवत्ता का एक मानदंड है। वैश्विक छात्र/अध्यापक अनुपात में, 1999 में 26:1 से 2010 में 24:1 के अनुपात से लघु पतन हुआ। उप-सहारा अफ्रीका में, 1.1 मिलियन अध्यापकों से अधिक की भर्ती के बावजूद भी नामांकन के बढ़ने के कारण छात्र/अध्यापक अनुपात में 42:1 से 43:1 की दर से हल्की वृद्धि हुई।

प्राथमिक शिक्षा पर 100 देशों के डेटा के अनुसार, 75% अध्यापकों में से 33% से भी कम अध्यापकों को राष्ट्रीय मानक स्तर पर प्रशिक्षित किया गया। अध्यापकों को यह सुनिश्चित करने हेतु उपयुक्त रूप से प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है कि वे अपना कार्य प्रभावी रूप से करने हेतु समर्थ हैं। आकलन यह दर्शाता है कि विश्व के सबसे गरीब बहुत से देशों के बच्चे स्कूल में अपने कई वर्ष बिना कोई भी शब्द सीखे या पढ़े बिता सकते है। उदाहरण के लिए, माली में, ग्रेड 2 के दस में से कम से कम आठ विद्यार्थी किसी राष्ट्रीय भाषा में एक शब्द भी नहीं पढ़ सकें। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि अध्यापकों को कैसे प्रशिक्षित करता है और उन्हें कक्षा में होने पर कैसा समर्थन प्राप्त होता है, पर प्रकाश डालता है।

स्वयं अध्यापक भी आवश्यक विषय ज्ञान की कमी को अनुभव करते हैं, जब उन्हें अध्यापन कॉलेजों में पढ़ाने को भेजा जाता है, इसलिए, पाठ्यक्रम आमतौर पर अध्यापकों को मूलभूत विषय ज्ञान बढ़ाने में मदद करने पर ध्यान देते हैं, न कि प्रभावी रूप से पढ़ाने पर। इसके अलावा प्रोफेशनल विकास अध्यापक के एक बार कक्षा में कदम रखने पर समाप्त होने की ओर अग्रसर है।

सरकारों को प्रारंभिक श्रेणियों में शिक्षण को मजबूत बनाने के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए। सेवापूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी कक्षा तकनीकों पर जोर देने की आवश्यकता है। वहीं दूसरी ओर, सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम ज्ञान को बेहतर कक्षा अभ्यास में परिवर्तन को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षणों को पारस्परिक रूप से नियुक्त किया जा सकता है। लाभ तब अधिक ध्यान देने योग्य हो जाते हैं जब प्रशिक्षण को अन्य हस्ताक्षेपा जैसे अनुदेशनात्मक सामग्री के साथ जोड़ा जाता है।

एजुकेशन फॉर ऑल डेवलपमेंट इन्डैक्स

ई.एफ.ए. डेवलेपमेंट इंडेक्स एजुकेशन फॉर ऑल के लिए राष्ट्रीय शिक्षण व्यवस्थाओं की संपूर्ण प्रगति का आशुचित्र प्रस्तुत करता है। 52 देशों के उपसमूह के लिए, डकार ने वर्ल्ड एजुकेशन फॉरम के बाद से ई.डी.आई. के मूल्यांकन की जांच करना संभव हो गया है। वर्ष 1999 और 2010 के बीच 52 देशों में से 41 में से ई.डी.आई. में सुधार हुआ। इस समूह में 12 उप सहारा अफ्रीका देशों में विशाल वृद्धि दोनों को मिली, साथ ही इथोपिया और मोजांबिक में उत्कृष्ट वृद्धियां दर्ज की गई।

2015 तक 112 देशों को कुल 5.4 मिलियन अध्यापकों की भर्ती करने की आवश्यकता है।

समान स्कोर, ई.एफ.ए. में किसी देश के प्रयास में अंतर ला सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, कोलंबिया और ट्यूनेशिया में उच्च प्राइमरी पंजीकरण और जीवन दर है किन्तु प्रौढ़ शिक्षा दर कम है। कोलंबिया में प्रौढ़ शिक्षा दर अधिक उच्च है किंतु शुद्ध पंजीकरण अनुपात निम्न है और विशेष रूप से जीवन दर भी निम्न है। ट्यूनिशिया की निम्न प्रौढ़ साक्षरता उसकी ऐतिहासिक विरासत का भाग हो सकती है और यह आवश्यक नहीं कि यह वर्तमान में भी जारी हो, जबकि प्राइमरी स्कूल की उम्र के बच्चों के संबंद्ध संकेतकों के निम्न स्तर से पता चलता है कि यह भविष्य में निम्न प्रौढ़ साक्षरता दरों का समाना करेंगे।

इस रिपोर्ट के लिए विकसित ई.सी.सी.ई. सूचकांक को शामिल करने के लिए ई.डी.आई. के विस्तार से पता चलता है कि कौन से देश प्रारंभिक शैशवावस्था पर अधिक बल दे रहे हैं। कुछ देशों विशेष रूप से मध्य एशिया, जैसे, कज़ाकिस्तान और उजबेकिस्तान और पूर्वी एशिया के देश, जैसे, इंडोनेशिया और फिलीपींस – की रैंकिंग में गिरावट आई, जबकि, जमैका और मैक्सिको जैसे देशों ने अपनी रैंकिंग में सुधार किया।

ई.एफ.ए. को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि सभी लक्ष्यों पर समान ध्यान न दिया जाए इसके लिए ई.सी.सी.ई. और प्रौढ़ साक्षरता सहित अधिक उपेक्षित माने जाने वाले देशों पर विशेष ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। सभी बच्चों, उनके प्रारंभिक जीवन वर्ष सहित, और उनके माता-पिता के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करके शिक्षा हानि के अंतर पीढी चक्र को तोड़ना महत्वपूर्ण कुंजी है।

विश्व असमानता

इस रिपोर्ट के प्रकाशन के साथ ही ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट दल ने एक इंटरेक्टिव वेबसाइट विकसित की है जो देशों के अंदर शैक्षणिक असमानता के स्तर को दिखाता है। शिक्षा पर विश्व असमानता डेटाबेस (डब्ल्युआईडीई), जनसांख्यिकीय, स्वास्थ्य सेवाओं और बहु सूचक समूह सर्वेक्षण से नवीनतम आंकड़ों को एकत्र करता है।

जो देश बच्चों को स्कूल में दाखिल करवाने की लड़ाई लड़ रहे हैं वहां धन की असमानता बढ़ी है
दो साल से कम की शिक्षा प्राप्त, धन के संदर्भ (%) में 17 से 22 वर्ष के बीच की आबादी

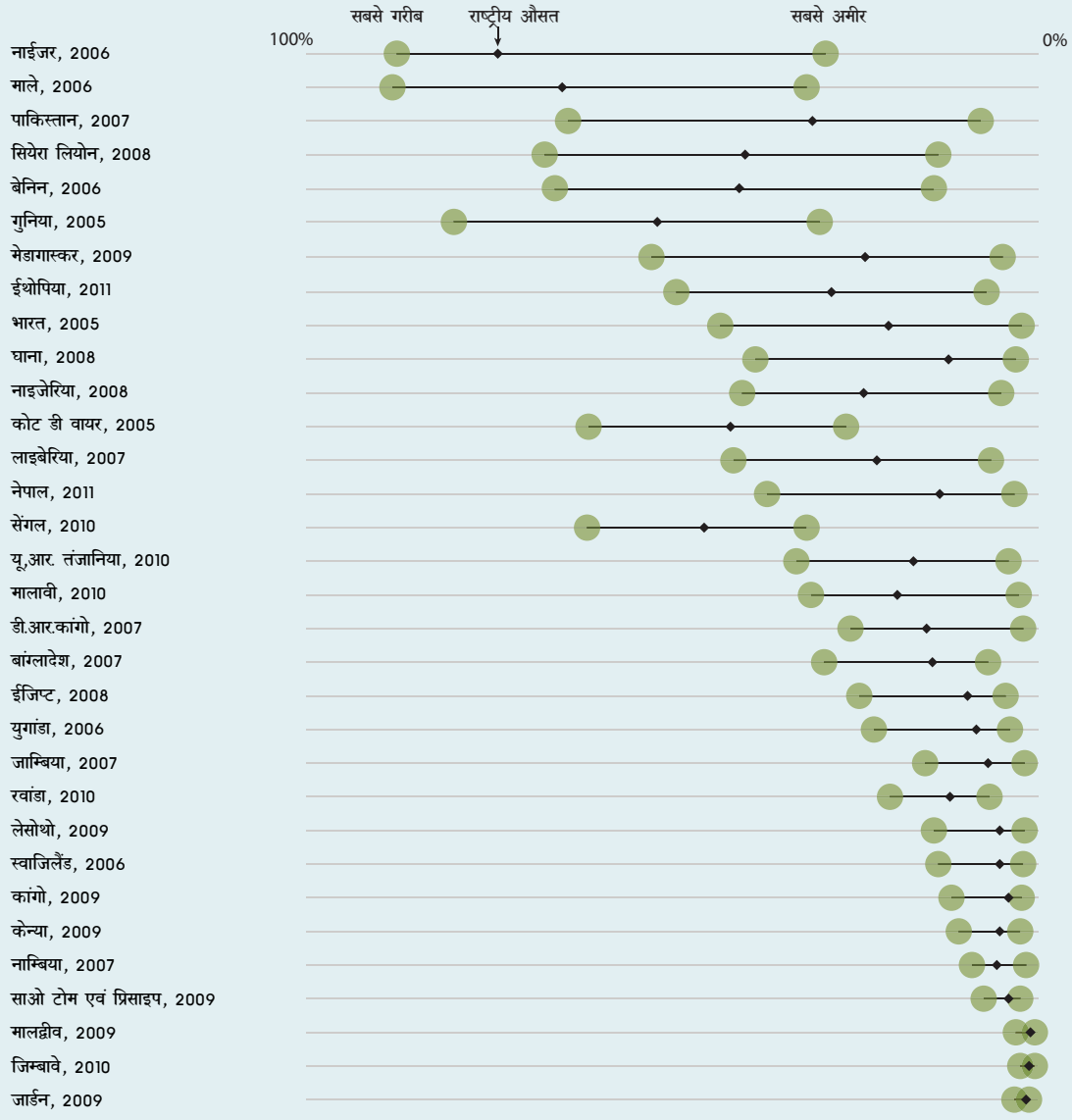

ईएफए प्राप्ति से सबसे दूर तीन क्षेत्रों – अरब राज्य, उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एवं पश्चिम एशिया- का चयन करते हुए उपर्युक्त चित्र दिखाता है कि लगभग हर देश जिनका डेटा दिया गया है वहां धन के संदर्भ में असमानता है। वेबसाइट पर दिए गए बिन्दुओं पर क्लिक करने से प्रभावित प्रतिशत सामने प्रकट होता है। नाइजर, जो कि सबसे ज्यादा असमानता वाला देश हैं, वहां गरीब, युवा लोगों में से 88% लोगों के पास दो साल से कम की स्कूली शिक्षा है- अर्थात, 29% अमीरों की तुलना में वे चरम शैक्षणिक गरीबी से जूझ रहे हैं। चित्र के दूसरी छोर पर स्थित जार्डन में सबसे कम असमानता है। चाहें अमीर हों या गरीब, केवल 17 से 22 वर्ष की उम्र समूह में केवल 1% ही चरम शैक्षणिक गरीबी से प्रभावित हैं।

शिक्षा का डेटाबेस (डब्ल्युआईडीई)

वेबसाइट देखने वाले लोग विविध शैक्षणिक सूचकांकों और असमानता से जुड़े कारकों जैसे धन, लिंग, जातीयता, धर्म और स्थान के अनुसार देशों के अंदर समूहों की आपस में तुलना कर सकते हैं। उपयोगकर्ता डेटा से मानचित्र, चार्ट और तालिकाएं ले सकते हैं और उसे डाउनलोड, प्रिंट या आनलाइन दूसरों से साझा कर सकते हैं। साइट को इंटरैक्टिव थींग्स द्वारा डिजाइन किया गया है।

धन की असमानता, लिंग असमानता से और गंभीर हुई है।
धन एवं लिंग के अनुसार दो साल से कम शिक्षा प्राप्त 17 से 22 की उम्र की आबादी, नाइजर, पाकिस्तान और **ईजिप्ट** (%)

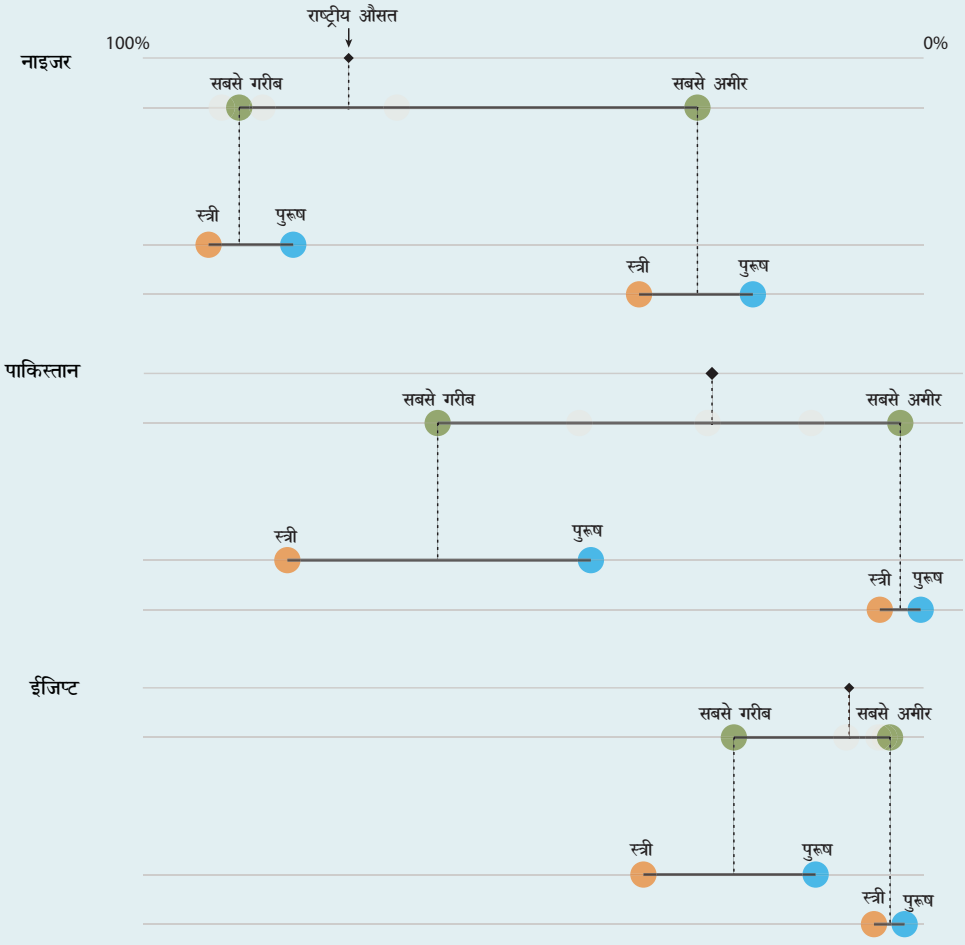

डब्ल्युआईडीई के साइट पर, उपयोगकर्ता चयनित देशों के अंदर क्षति की अंतर्विभाजक पद्धति के ब्योरे को देख सकते हैं। नाइजर में न केवल धन की असमानता व्यापक है, बल्कि यह लिंग असमानता से और गंभीर हुई है। गरीब युवा महिलाएं सबसे ज्यादा प्रभावित हैं–सबसे अमीर युवा लोगों की तुलना में उनमें से 92% लोगों ने दो साल से कम की स्कूली शिक्षा ली है। पाकिस्तान में, सबसे गरीब लोगों में व्यापक लिंग भेद के कारण दस में से आठ युवा महिलाएं प्रभावित होती हैं जबकि प्रभावित युवा पुरुषों की संख्या दस में से पांच से भी कम है। हालांकि समग्र रुप से समस्या की गंभीरता इजिप्ट में उतनी ज्यादा नहीं है, लेकिन लिंग भेद व्यापक है– अमीर युवा पुरुहों के 2% की तुलना में 36% गरीब युवा महिलाएं चरन शैक्षणिक गरीबी में हैं।

www.education-inequalities.org

ईएफए को वित्त प्रदान करना: कमियां और अवसर

गरीब देशों में से 63(%) ने शिक्षा पर खर्च राष्ट्रीय आय की साझेदारी को बढ़ा दिया है

पिछले दशक का अनुभव दिखाता है कि शिक्षा के मद पर वित्त बढ़ा कर सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य की तरफ बढ़ने में काफी आसानी हो सकती है। चुंकि स्कूल से बाहर रह रहे बच्चों की संख्या स्थिर हो रही है, चिंता का संकेत मिल रहे हैं कि दाता का योगदान भी कम हो सकता है। केवल ज्यादा धन यह सुनिश्चित नहीं कर सकता कि ईएफए लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाए, लेकिन कम धन निश्चित रुप से हानि पहुंचाने वाला है। सहायता प्रदाताओं द्वारा एक नए सिरे से ठोस प्रयास की तत्काल जरुरत है। उसी समय, नए स्रोतों की संभावनाओं को खंगालना अत्यंत आवश्यक है ताकि वित्तिय अंतर को भरा जा सके और सहायता की राशि के खर्च करने के तरीके को सदृढ़ किया जा सके।

ज्यादा खर्च करना मायने रखता है

डाकर के समय से शिक्षा पर सरकारी व्यय धीरे-धीरे बढ़ रहा है। खर्च में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी कम आय समूह वाले देशों में रहा है, जहां यह 1999 से प्रति वर्ष औसत 7.2% की दर से बढ़ा। उप-सहारा अफ्रीका में, वार्षिक बढ़ोतरी 5% थी। तुलनीय डेटा के साथ कम और मध्य आय वाले देशों के बीच 63% ने पिछले दशक में शिक्षा पर होने वाले राष्ट्रीय आय की व्यय को बढ़ा दिया।

ज्यादातर देशों ने जिन्होंने पिछले दशक के दौरान ईएफए की तरफ अपनी प्रगति को गति दी, उन्होंने यह शिक्षा पर व्यय को काफी बढ़ा कर या पहले से उच्च स्तर पर बरकरार रख कर किया। उदाहरण के लिए, तंजानिया संयुक्त गणराज्य में शिक्षा पर राष्ट्रीय आय के व्यय की साझेदारी को तीन गुणे से ज्यादा कर दिया गया और प्राथमिक कुल दाखिला अनुपात दोगुणा हो गया। सेनेगल में, व्यय में जीएनपी के 3.2% से 5.7% की बढ़ोतरी ने प्राथमिक कक्षाओं में दाखिले में प्रभावी वृद्धि और लैंगिक अंतर को समाप्त करने को स्थान दिया।

इस आशाजनक वैश्विक प्रवृत्ति के बावजूद, कुछ देश ईएफए के लक्ष्य से अभी काफी दूर हैं जैसे, केन्द्रीय अफ्रीकन गणराज्य, गुनिया और पाकिस्तान ने कम खर्च को बनाए रखा है जो कि शिक्षा पर जीएनपी के 3% से कम है। पाकिस्तान, स्कूल के बाहर रह रहे बच्चों की संख्या की दृष्टि से विश्व में दूसरा है – जो कि 5.1 मिलियन है – फिर भी इसने शिक्षा पर खर्च को दशक के दौरान जीएनपी के 2.6% से घटाकर 2.3% कर दिया है।

यह डर की हाल का खाद्य और वित्तीय संकट शिक्षा पर व्यय में सकारात्मत प्रवृत्ति के विरुद्ध जाएगा, अभी सच होता नहीं जान पड़ता है, यद्धपि लंबी अवधि के प्रभाव पर निगरानी रखने की जरुरत है। उपलब्ध आंकड़ों के साथ कम या कमतर आय समूह के दो-तिहाई देशों ने संकट के दौरान भी अपनी शिक्षा बजट को बढ़ाना जारी रखा। लेकिन कुछ देश जो कि ईएफए से सबसे दूर हैं, जैसे, चाड और नाइजर, उन्होंने 2009 में नकारात्मक आर्थिक विकास के बाद 2010 में शिक्षा बजट में कटौती की।

इस रिपोर्ट के लिए नया विश्लेषण यह पहचान करता है कि सबसे गरीब देशों मे से कुछ सहायता से किस हद तक लाभ पा सके है। नौ देशों में, सभी उप-सहारा अफ्रीका में हैं, शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय का एक चौथाई दाताओं के फंड से आता है (चित्र 8)। उदाहरण के लिए, मोजाम्बिक में, स्कूलों की संख्या 1999 में 1.6 मिलियन से घट कर 2010 में 0.5 मिलियन से कम रह गई। इस अवधि के दौरान ज्यादातर, सहायता कुल शिक्षा बजट का 42% तक था।

क्या शिक्षा के लिए सहायता अपने चरम पर पहुंच गया है।

2002 से शिक्षा पर सहायता में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी 2009 में दर्ज की गई। काफी व्यापक हद तक यह, वित्तीय संकट के आशंकित परिणामों का सामना करने के लिए कमजोर देशों की मदद के लिए वादा की गई निधि का विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा समय से पहले अदायगी के कारण संचालित था। हालांकि, 2010 में शिक्षा को सहायाता 13.5 बिलियन अमेरिकी डालर पर स्थिर था। उस राशि में से 5.8 बिलियन अमेरिकी डालर आधारभूत शिक्षा के लिए था (चित्र 9)। जबकि, वह 2002-2003 के स्तर का लगभग दुगुना था, लेकिन कम आय वाले देशों में आधारभूत शिक्षा कों केवल 1.9 बिलियन अमेरिकी डालर आवंटित किया गया। यह इन देशों द्वारा सामना किए जा रहे 16 बिलियन अमेरिकी डालर की वित्तीय अंतर को पाटने के लिए अपर्याप्त है। कम आय वाले देशों को आधारभूत शिक्षा के लिए सहायता में 2010 में केवल 14 मिलियन अमेरिकी डालर की वृद्धि हुई। सभी देश समान रुप से लाभ नहीं पा सके। 2009 और 2010 के बीच बढ़ोतरी ज्यादातर अफगानिस्तान और बांग्लादेश में केन्द्रीत था, जिन्होंने कम आय वाले सोलह देशों को मिली अतिरिक्त सहायता का 55% प्राप्त किया। इसके विपरीत, कम आय वाले 19 देशों को मिलने वाले फंड में कमी आई।

पिछले दशक के दौरान सहायता में बढ़ोतरी के बावजूद, दाता उनके द्वारा 2005 के 8 ग्लेनेगल्स समूह समिट में 2010 तक सहायता में 50 बिलियन अमेरिकी डालर की बढ़ोतरी की किए गए वादे को पूरा करने में विफल रहे। उप-सहारा अफ्रीका को किए गए बढ़ोतरी के वादे का केवल आधा प्राप्त हुआ। पिछले सालों में शिक्षा पर हो रहे खर्च के समान व्यय की कल्पना करने पर उस साल स्कूलों के लिए यह विफलता 1.9 बिलियन अमेरिकी डालर से कम के समतुल्य थी या आधारभूत शिक्षा को वर्तमान सहायता के एक-तिहाई के करीब थी।

चित्र 8: गरीब देशों के लिए शिक्षा को सहायता उनके संसाधनों का एक महत्वपूर्ण साझा है

शिक्षा के लिए घरेलू और सहायता संसाधन, चयनित क्षेत्रीय और कम या कमतर मध्य आय देशों का औसत, 2004 से 2010

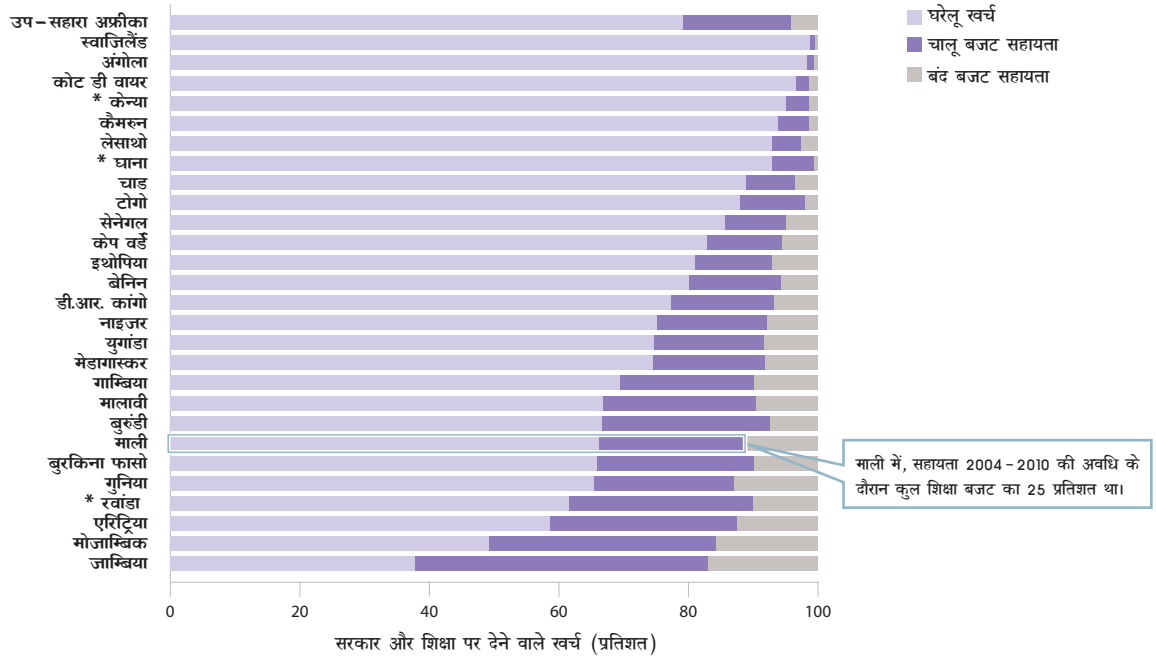

नोट: *इंगित करता है कि बजट पर सहायता का एक देश–विशिष्ट साझेदारी का आकलन देश के दस्तावेज से किया गया, अन्य देशों के लिए सहायता के औसत 60% की कल्पना की गई थी।

स्रोत: यूनेस्को (2012 बी)

उससे भी ज्यादा चिंता की बात यह है कि 2015 तक के सालों के लिए सहायता का परिदृश्य सकारात्मक नहीं है। 2011 में, कुल सहायता में वास्तविक मदों में 3% तक की कमी आई। 1997 से यह पहली बार है जब सहायता में कमी आई है। मुख्यत: धनी देशों में जारी आर्थिक मंदी के परिणामस्वरुप आत्मसंयम पैकेज के भाग के रुप में कटौतियों के लिए सहायता बजट को चुना गया है। 2010 से 2011 तक, ओईसीडी के विकास सहायता समिति (डीएसी) के 23 देशों में से 14 में राष्ट्रीय आय के भाग के रुप में सहायता में कमी आई।

कुछ मुख्य दाता न केवल उनकी पूरी सहायता बजट को कम कर रहे हैं, बल्कि शिक्षा को एक कमतर प्राथमिकता वाला बना रहे हैं, जिसके परिणामस्वरुप शिक्षा सहायता, सहायता स्तर से तेजी से कमेगा। नीदरलैंड, पिछले दशक में बुनियादी शिक्षा के तीन शीर्ष तीन दाताओं में एक, अब शिक्षा को अपनी प्राथमिकता के क्षेत्रों में से एक नहीं मानता है और शिक्षा को दी जा रही सहायता को 2010 और 2015 के बीच 60% तक काट सकता है। कुछ गरीब देशों में गंभीर परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, नीदरलैंड का, उसी समय बुरकिना फासो से वापस हटना तय है जब चार अन्य दाताओं ने कहा है कि वह भी देश में शिक्षा से बाहर निकलना चाहते हैं।

नौ उप–सहारा अफ्रीकी देशों में सहायता, शिक्षा बजट का एक तिहाई होता है

चित्र 9: शिक्षा को सहायता 2010 में स्थिर हो गई

शिक्षा संवितरण को कुल सहायता, 2002 से 2010

स्रोत – ओईसीडी–डीएसी (2012बी)

नए दाताओं, जैसे ब्राजील, चीन और भारत को ज्यादा ध्यान मिल रहा है। लेकिन वे अभी ज्यादा मात्रा में सहायता नहीं प्रदान कर रहे हैं और न ही कम आय वाले देशों के लिए बुनियादी शिक्षा की सहायता को प्राथमिकता दे रहे हैं।

सहायता को प्रभावी रुप से खर्च करना

शिक्षा पर सहायता के आंकड़े, कहानी का केवल एक भाग कहते हैं। यह सुनिश्चित करना कि धन प्रभावी रुप से खर्च हो रहा है वह महत्वपूर्ण है। 2005 में पेरिस में ओईसीडी–डीएसी द्वारा स्थापित सहायता प्रभावीपन पर तेरह लक्ष्यों में से केवल एक ने 2010 की सहमत तारीख को पूरा किया।

सहायता सेक्टर, सहायता प्रभावी एजेंडा की अग्रिम पंक्ति में रहा है। उदाहरण के लिए केन्या, मोजाम्बिक, रवांडा और युगांडा में प्राथमिक शिक्षा की पहुंच में सरकारी योजनाओं के साथ सहायता प्रदान की गई महत्वपूर्ण राशि ने अप्रत्याशित योगदान दिया है।

2008 में, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य ने संसाधन राजस्व में 450 मिलियन अमेरिकी डालर खोया, जो कि 7.2 मिलियन को स्कूल भेजने के लिए पर्याप्त था।

इस सकारात्मक अनुभव के बावजूद, कई गरीब देशों को ज्यादा और बेहतर सहायता की जरुरत है। सहायता प्रभावी सिद्धान्तों के लिए एक संभावित वाहन, शिक्षा के लिए वैश्विक साझेदारी (पूर्व में ईएफए फास्ट ट्रेक पहल), का उपयोग कम रहा। शिक्षा को सहायता के लिए यह एकमात्र वैश्विक जमा निधि तंत्र है, लेकिन इसने 2003 और 2011 के बीच केवल 1.5 बिलियन अमेरिकी डालर संवितरित किया जो कि कम और कमतर मध्यम आय के देशों में बुनियादी शिक्षा को कुल सहायता की साझेदारी के 6% के समतुल्य है। स्वास्थ्य सेक्टर में तदनुरुप फंड की तुलना में यह काफी कम है। साझेदारी की स्थापना न केवल सहायता की मात्रा को बढ़ाने के लिए किया गया, बल्कि राष्ट्रीय सरकारों और सहायता दाताओं द्वारा छोड़ी गई खाई को भरने के लिए भी। सहायता बेहतर रुप में समायोजित है और 2015 वित्तीय फ्रेमवर्क के पश्चात सूचित करने के उद्देश्य से आने वाले वर्षो में करीब से निगरानी करने की ज्यादा जरुरत है।

ज्यादा व्यापक रुप से कहें तो, दाताओं को उनकी सहायता निवेशों से ज्यादा ठोस परिणाम की अपेक्षा है क्योंकि बजट पर लगाम लगाई गई है और उत्तरदायित्व का दबाव बढ़ा है। एक नया दृष्टिकोण जिसका लक्ष्य परिणाम आधारित सहायता प्रदान करना है, प्राप्त कर्ता देशों के सरकारों को उनकी शिक्षा नीति उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ज्यादा उत्तरदायित्व प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, युनाईटेड किंगडम ने माध्यमिक विद्यालय परीक्षा पास करने वाले प्रत्येक अतिरिक्त विद्यार्थी के लिए इथोपियन सरकार को पुरष्कृत करने वाला एक पूरक सहायता तंत्र संचालित किया है। हालांकि इस दृष्टिकोण में जोखिम शामिल है, विशेषकर गरीब देशों के लिए जो इन परिणामों को प्राप्त करने की लागत को पूरा नहीं कर सकते हैं यदि बाह्य कारक दी गई योजना के सुचारु संचालन को रोकता है।

संसाधनों के अभिशाप को शिक्षा के लिए एक आशीर्वाद के रुप में रुपान्तरित करना

विकास के सबसे विचित्र विरोधाभास में से एक संसाधन अभिशाप है। गैर–नवीकरण प्राकृतिक संसाधनों, जैसे तेल एवं खनीज, के साथ अच्छी तरह से संपन्न देशों ने संसाधन की कमी झेल रहे देशों की तुलना में धीम आर्थिक विकास का अनुभव किया है। कई ईएफए लक्ष्यों और अन्य विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने से काफी दूर हैं। लेकिन अभिशाप अपरिहार्य है, बशर्ते कि संसाधनों को भावी पीढ़ियों में निवेश किया जाए।

नाइजेरिया, तेल एवं गैस के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक, में भी स्कूल के बाहर रह रहे बच्चों की बड़ी संख्या है। चाड ने अपने नए प्राप्त धन को प्राथमिकता क्षेत्रों, जैसे शिक्षा से परे सैन्य उद्देश्य की तरफ मोड़ा है। लाइबेरिया और सियेरा लियोन में, प्राकृतिक संसाधनों के लिए होड़, सशत्र लड़ाई का केन्द्र रहा है। प्राकृतिक संसाधन राजस्व का कुप्रबंधन गंभीर अवस्था तक पहुंच सकता है। उदाहरण के लिए कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में, 2008 में 450 मिलियन अमेरिकी डालर के समतुल्य क्षति का आकलन किया गया है, जो कि देश के पूरे शिक्षा बजट से ज्यादा है और 7.2 मिलियन बच्चों को प्राथमिक स्कूलों में भेजने के लिए पर्याप्त है।

प्राकृतिक संसाधन, यदि सरकारी राजस्व में बदल जाएं और सक्षम तरीके से उपयोग में लाए जाएं तो कई देशों को ईएफए लक्ष्यों को पूरा करने में मदद कर सकते हैं (चित्र 10)।

चित्र 10: प्राकृतिक संसाधन राजस्व, शिक्षा बजट को महत्वपूर्ण तरीके से बढ़ा सकता है।

2010 की कुल शिक्षा बजट के सापेक्षिक प्राकृतिक संसाधन राजस्व को अधिकतम कर संभावित अतिरिक्त फंड. प्रदान करना, चयनित देशों में, यूएस बिलियन डालर में

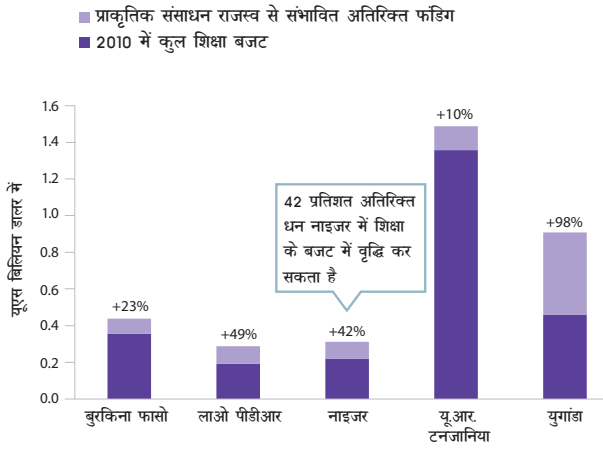

नोट: प्राकृतिक संसाधन राजस्व को अधिकतम करने की अभिकल्पना को दो चरणों में की गई है–
(1) प्राकृतिक संसाधन निर्यातों से राजस्व की हिस्सेदारी में बढ़ोतरी, खनीज के लिए 30% और तेल के लिए 75% और
(2) शिक्षा पर इस अतिरिक्त राजस्व के 20% का आवंटन
स्रोत: यूआईएस डेटाबेस और आईएमएफ आर्टिकल 4 समीक्षा पर आधारित ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट दल गणना (2012)

बोत्सवाना ने पिछले कुछ दशकों के दौरान शिक्षा को वित्त प्रदान किया है, इसका श्रेय हीरा से प्राप्त धन को जाता है जिसके कारण यह उप–सहारा अफ्रीका में सबसे धनी देशों में से एक बन गया है। इसने न केवल सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त किया है बल्कि इसका माध्यमिक सकल नामांकन अनुपात 82% है जो कि महाद्वीप के औसत का दुगुना है। घाना ने शिक्षा में निवेश सहित अपने धन के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक सहमित विकसित की है।

इस रिपोर्ट का एक विश्लेषण, 17 देशों में शिक्षा पर व्यय को बढ़ाने की संभावना को दर्शाता है, वे देश जो या तो पहले से संसाधनों में अमीर हैं या तेल, गैस और खनीज के निर्यात की शुरुआत करने वाले हैं। यदि उनके गैर–नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधनों से उत्पादित राजस्व को अधिकतम किया गया होता और अतिरिक्त संसाधनों के 20% को शिक्षा पर लगाया जाता तो प्रति वर्ष 5 बिलियन अमेरिकी डालर से ज्यादा इस क्षेत्र के लिए उपार्जित किया जा सकता। यह इन देशों के 12 मिलियन स्कूल से बाहर के बच्चों के 86% के लिए और 9 मिलियन स्कूल के बाहर किशोरों के 42% की स्कूली शिक्षा के लिए फंड प्रदान कर सकता है। घाना, गुनिया, लाओ पिपुल्स डेमोक्रैटिक रिपब्लिक, मालावी, युगांडा और जाम्बिया सहित कई देश दाताओं से ज्यादा सहायता की जरुरत के बिना सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्राकृतिक संसाधन राजस्व के उचित और उत्पादक उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा की वकालत करने वालों को उन उपायों को समर्थन देना चाहिए जो यह सुनिश्चित करने पर लक्षित हैं कि सरकारें पारदर्शिता और उचित कराधान के उच्च मानकों को पूरा करते हों। उन्हें अर्थ व्यवस्था में विविधाता लाने और संसाधन अभिशाप को रोकने के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन राजस्व के उपयोग और लंबी अवधि निवेश के रुप में शिक्षा को मुद्दा बनाने पर राष्ट्रीय बहस में शामिल होना चाहिए।

निजी संगठनों की क्षमता का दोहन

ईएफए को समर्थन देने के लिए संसाधनों की गंभीर आवश्यकता और इस अंतर को भरने वाले अंतर्राष्ट्रीय सहायता के लिए उदास दृष्टिकोण को देखते हुए निजी संगठनों को वित्त के वैकल्पिक स्रोत के रुप में देखा जाना तेज हो गया है। एक आकलन के अनुसार विकासशील देशों को कुल निजी योगदान, 120 बिलियन अमेरिकी डालर की तुलना में अधिकारिक सहायता 2008 से 2010 के बीच औसत 50 बिलियन अमेरिकी डालर के उपर थी। हालांकि, इसमें से ज्यादातर स्वास्थ्य क्षेत्र को गया। उदाहरण के लिए, इस अवधि के दौरान यूएस फाउंडेशन द्वारा किए गए अनुदान की कुल राशि का करीब 53% स्वास्थ पर गया जबकि शिक्षा पर केवल 8 प्रतिशत।

सार्वजनिक रुप से उपलब्ध सूचना के आधाार पर इस रिपोर्ट के लिए संचालित नया विश्लेषण दिखाता है कि निजी फाउंडेशन और कॉरपोरेशन ने विकासशील देशों में शिक्षा में प्रति वर्ष 683 मिलियन अमेरिकी डालर का योगदान किया है, जो कि डीएसी दाताओं से शिक्षा सहायता के केवल 5% के समतुल्य है।

निजी संगठनों से योगदान शिक्षा को सहायता के 5% तक है।

इन संसाधनों का करीब 20% फांउडेशन द्वारा प्रदान किया गया, जिसका लक्ष्य पारंपरिक सहायता दाताओं के साथ करीबी से जुड़ा है। समीक्षा किए गए फाउंडेशन में से केवल पांच ने प्रति वर्ष 5 मिलियन अमेरिकी डालर से ज्यादा का योगदान किया है जो कि कुछ सबसे छोटे द्विपक्षीय दाताओं द्वारा शिक्षा को योगदान के बराबर है, जैसे लक्जम्बर्ग या न्यूजीलैंड (चित्र 11)।

उसी तरह, कॉरपोरेशन से योगदानकर्ताओं का 71% केवल पांच कंपनियों से आता है, प्रत्येक प्रति वर्ष 20 मिलियन अमेरिकी डालर से ज्यादा का योगदान करती हैं। ज्यादातर कॉर्पोरेशन जो शिक्षा पर सबसे बड़ी राशी का योगदान करते हैं वे सूचना और संचार तकनीक (आईसीटी) या उर्जा कंपनियां हैं।

इन योगदानकर्ताओं का केवल एक छोटा अंश ईएफए उद्देश्यों या उन देशों जो ईएफए लक्ष्यों को प्राप्त करने से दूर है, पर खर्च हो रहा है। फंडिग के संदर्भ में, उच्च शिक्षा ज्यादा ध्यान पाता है। भौगोलिक संदर्भों में, कॉरपोरेशन, स्पष्ट: आईसीटी उद्योग में – अपने कार्यक्रमों को मध्य आय देशों, जैसे ब्राजिल, भारत और चीन पर केन्द्रीत करता है, ये देश उनके लिए प्राय: रणनीतिक रुचि के हैं। उसके उपर, ज्यादातर उनके हस्तक्षेप छोटे और खंडित हैं।

चित्र 11: सबसे बड़े फाउंडेशन से शिक्षा फंडिग, दाता सहायता द्वारा बौना हो गया है

पांच सबसे बड़े फाउंडेशन और चयनित सरकारी दाताओं से शिक्षा को कुल सहायता से शिक्षा के प्रति योगदान, 2009–2010 या निकटतम उपलब्ध साल

नोट्स: विलियम एंड "लोरा हेवलेट फाउंडेशन से करीब 15 मिलियन डॉलर वार्षिक औसत के दो–तिहाई मूलत: बिल एवं मिलिडा गेट्स फाउंडेशन से आया। ज्यादातर मामलों में, विकासशील देशों में शिक्षा को समर्थन की राशि का आकलन फाउंडेशन से कुल आंकड़ा का उपयोग कर किया जा सकता है।

स्रोत: संलग्नक, सहायता तालिका 2, न्यूयार्क कॉरपोरेशन (2011), फोर्ड फाउंडेशन (2011), मास्टर कार्ड फाउंडेशन (2010), विलियम और "लोरा हेवलेट फाउंडेशन (2010), वान "लीट (2012)

निजी क्षेत्र ईएफए में अपनी निवेश के बारे में पारदर्शी होना चाहिए

कई फाउंडेशन और कॉरपोरेशन ने सही मायने में आरंभिक बाल्यवस्था देखभाल और शिक्षा, प्राथमिक स्कूलिंग, युवाओं के लिए कौशल विकास एवं सीखने के प्रतिफल का मापन सहित क्षेत्रों में सफल और प्राय: नवाचार शिक्षा हस्तक्षेप किया है। हालांकि, उनकी सफलता को मापना सामान्यत: मुश्किल है, निजी संगठन बिना पर्याप्त सूचना दिए या पर्याप्त प्रभाव मूल्यांकन के ही अपने कार्यक्रमों के प्रभाव के बारे में साहसी वक्तव्य देने की ओर प्रवृत होते हैं।

ईएफए गतिविधियों में कुछ कॉरपोरेशन का शामिल होना उन्हें अवसर देता है कि सार्वजनिक नीतियों को ऐसे प्रभावित कर सकें कि वह उनके व्यापारिक हितों के लिए लाभकारी हों। हालांकि, यह शिक्षा के लिए लाभकारी हो सकता है, लेकिन उनके हस्तक्षेपों की बारीकी से छानबीन होनी चाहिए।

गंभीर पहले कदम के रुप में, ईएफए में योगदान करना चाहने वाले सभी निजी संगठनों को आवंटित राशि और उनके खर्च के तरीके का ब्योरा सहित उनकी प्रतिबद्धता के संबंध में सूचना देनी चाहिए। यह छानबीन को यह सुनिश्चित करने की अनुमति देगा कि व्यापार रुचियां सामूहिक लक्ष्यों को रद्द नहीं करती हैं, साथ ही यह ईएफए के वित्तीय अंतर को पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधनों की राशि पर सूचना भी देगा।

उनका योगदान ज्यादा प्रभावी होगा यदि उन्होंने सरकार से संयोजन किया है और देश की जरुरतों द्वारा संचालित हैं। शिक्षा के लिए वैश्विक व्यापार गठबंधन आगे के लिए एक दृढ़ रास्ता है क्योंकि यह ईएफए लक्ष्यों के फ्रेमवर्क के अंदर काम करता है।

दूसरे तरीके जिनके माध्यम से निजी संगठनें सरकारी शैक्षणिक प्रयासों को समर्थन दे सकती हैं वह एक संग्रहित तंत्र के माध्यम से उनके कुछ फंड को आगे बढ़ाना है। वैश्विक स्वास्थ्य फंड, जैसे एड्स, तपेदीक और मलेरिया के खिलाफ लड़ाई के लिए वैश्विक फंड, इस संबंध में सफल रहा है। लेकिन शिक्षा क्षेत्र में वर्तमान मुख्य तंत्र, शिक्षा के लिए वैश्विक साझेदारी, ने अपनी भूमिका अभी तक प्रभावी रुप से नहीं निभाई है। वर्तमान में, इसके बोर्ड में एक सीट के माध्यम से निजी क्षेत्र की साझेदारी नीति दिशा में भागीदारी है, फिर भी फाउंडेशन और कॉरपोरेशन द्वारा साझेदारी को पुन:पूर्ति बैठकों में की गई प्रतिज्ञाओं को संग्रहित फंडिग तंत्र के माध्यम से संवितरित नहीं किया जाएगा।

अंतर को पाटना

शिक्षा बजट को विस्तारित करने की अवधि, जिसने कुछ शानदार परिणामों में योगदान दिया है, के बाद एक अनिश्चितता का माहौल मंडरा रहा है। आर्थिक मंदी ने धनी देशों को प्रभावित किया है, जिसके नतीजे ईएफए लक्ष्यों को प्राप्त करने से दूर रहे गरीब देशों को मिल रही सहायता पर देखा जा सकता है।

सहायता में कमी से शिक्षा संबंधी वित्तीय अंतर के बढ़ने की आशंका है, इसलिए कमियों को दूर करने के लिए नवीन समाधानों की आवश्यकता होगी। उभरते दाताओं, जैसे ब्राजील, चीन और भारत से सहायता एक संभावित संसाधन है, लेकिन वर्तमान में ये देश सबसे ज्यादा जरुरत वाले देशों पर पर्याप्त लक्षित नहीं हैं। प्राकृतिक संसाधन राजस्व और निजी संगठनें, दो संभावित संसाधन हैं, लेकिन ऐसे योगदानों को प्रभावी होने के लिए, ईएफए उद्देश्यों के साथ पारदर्शिता और सरेखन पर ध्यान देने की ज्यादा जरुरत है।

© Chris Stowers/PANOS

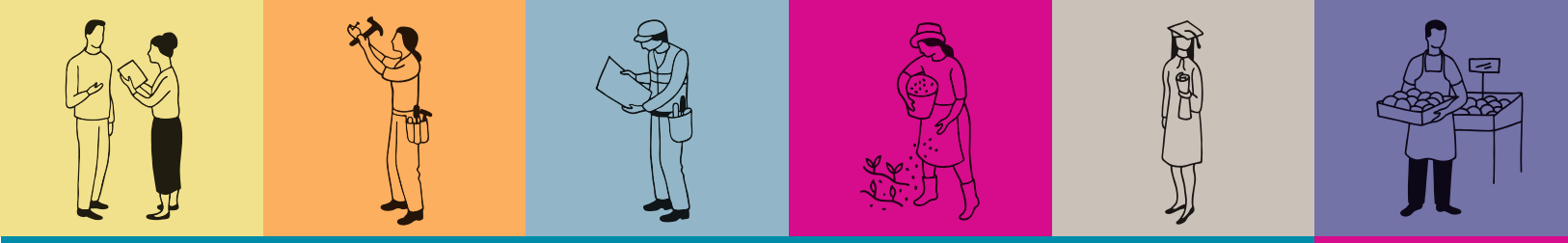

भाग 2. युवा और कौशल: शिक्षा को काम से जोड़ना

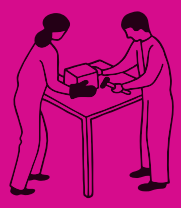

यदि कोई मुझे कौशल और काम करने का अवसर दे सके तो मैं जानती हूं कि मैं लक्ष्य प्राप्त कर सकती हूँ।

– युवा महिला, इथोपिया

काम के लिए युवा लोगों के कौशल को विकसित करने की जरुरत गंभीर हो गई है। पूरे विश्व की सरकारें लंबी अवधि के वित्तीय संकट के परिणामों और बढ़ते ज्ञान–आधारित अर्थ–व्यवस्था द्वारा पेश चुनौतियों के साथ जूझ रही हैं। यदि तेजी से बदलती दुनिया में देशों को विकास करना है और संपन्न होना है तो उन्हें एक कौशलयुक्त कार्यबल को विकसित करने पर ज्यादा ध्यान देने की जरुरत है। और सभी युवा लोगों को, जहां भी वे रहते हैं और जो भी उनकी पृष्ठभूमि है, कौशल की जरुरत है जो उन्हें सम्मानजनक काम के लिए तैयार कर सके ताकि वे कामयाब हो सकें और समाज में पूरी तरह से भाग ले सकें।

युवाओं के लिए कौशल विकास के लिए आवश्यक जरुरतों की पहचान तीसरे ईएफए लक्ष्यों में की गई थी, जिनका फोकस सभी युवाओं और व्यस्कों के सीखने की जरुरतों पर था। लक्ष्य की अस्पष्टता और इसके मापन के तरीके की अनिश्चितता के कारण, सरकारों, सहायता दाताओं, शिक्षा समुदाय या निजी क्षेत्रों से मिलने वाला ध्यान यह नहीं प्राप्त कर सका और यह अब पहले से ज्यादा गंभीर है।

युवाओं की संख्या किसी भी समय से आज ज्यादा है और उनकी संख्या विश्व के कुछ भागों में तेजी से बढ़ रही है। केवल विकासशील देशों में, 15 से 24 उम्र समूह के लोगों की संख्या 2010 में 1 बिलियन हो गई है। लेकिन इस बड़ी युवा आबादी की जरुरतों को पूरा करने के लिए काम का उतनी तेजी से सृजन नहीं हो रहा है। 15 से 24 उम्र के लोगों में से करीब आठ में से एक व्यक्ति बेरोजगार है। व्यस्कों की तुलना में युवा लोगों के बेरोजगार होने की आशंका तीन गुणा ज्यादा है। युवाओं की बेरोजगारी और ज्यादा बढ़ने की जोखिम के साथ ही, कई युवा के आने वाले कई व वर्षों तक सुरक्षित काम के बिना रहने की आशंका है।

युवाओं की बेरोजगारी, एजेंडा में तेजी से उपर आ रहा है, अग्रणी नीति निर्धारक निजी उद्धमों में काम के सृजन को प्राथमिकता दे रहे हैं। जबकि फोकस अवश्यंभावी है, लाखों युवा लोग जिनमें बुनियादी साक्षरता और संख्या कौशल का अभाव है उनकी जरुरतों की उपेक्षा की जा रही है। ये युवा लोग प्राय: कामकाजी हैं लेकिन शहरी असंगठित क्षेत्रों में गरीबी रेखा के नीचे की पगार पा रहे हैं या भूमि पर घटते जोत के संदर्भ में छोटे किसान के रुप में काम कर रहे हैं। उनकी आवाज को शायद ही कभी विरोध में सुनी जाती है। कम कौशलयुक्त, कम भुगतान के काम से दूर जाने का अवसर प्रदान करना प्रत्येक कौशल विकास रणनीति के केन्द्र में होना चाहिए।

सभी के लिए कौशल तक पहुंच प्राय: असमान, लगातार और हानि को बनाए रखने वाला है जो एक सीमांत सामाजिक समूह की गरीब, महिला या एक सदस्य पर लागू होता है। युवा जो गरीबी और अपवर्जन में बढ़े हैं, आशंका है कि उन्हें कम शिक्षा मिली हो या स्कूल से बाहर हो गए हों। परिणामस्वरुप, सम्मानजनक काम के लिए उन्हें कौशल विकास के कम अवसर मिलेंगे और इस तरह श्रम बाजार में उनके और हाशिए पर जाने का जोखिम है। इसलिए, यह रिपोर्ट वंचित युवाओं की कौशल विकास पर पहुंच की पहचान और समझ में एक विशेष रुचि लेता है, कौशल विकास जो उन्हें बेहतर काम – सुरक्षित काम की ओर ले जाते हैं ताकि उन्हें भोजन की खरीद और बचत के लिए पर्याप्त धन मिल सके, काम जो उन्हें गरीबी से बाहर ले जा सके।

15 से 24 की उम्र के लोगों में आठ में से एक बेरोजगार है

यह रिपोर्ट, प्रमुख प्रकार के कौशल की पहचान करता है जो हर युवा की जरुरत है – बुनियादी, स्थानान्तरणीय और तकनीकी तथा व्यवसायिक कौशल – और उन संदर्भों की पहचान करता है जिनमें इन्हें हासिल किया जा सकता है।

फाउंडेशन स्किल या बुनियादी कौशल: सबसे मौलिक स्तर पर, बुनियादी कौशल में साक्षरता और संख्या ज्ञान शामिल है, ये कौशल उस काम की प्राप्ति के लिए जरुरी हैं जिससे दैनिक जरुरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन मिल सके। ये कौशल शिक्षा और प्रशिक्षण में बने रहने और स्थानान्तरणीय और तकनीकी एवं व्यवसायिक कौशल की प्राप्ति की आवश्यक शर्त हैं जिससे बेहतर काम पाने की संभावना बढ़ जाती है।

स्थानान्तरणीय कौशल: स्थानान्तरणीय कौशल में समस्या समाधान, विचार और सूचना के प्रभावी संचार, रचनात्मक होने, नेतृत्व दिखाने और शुद्ध चेतना और प्रदर्शित उद्धमशीलता की

योग्यता शामिल है। लोगों को इन कौशल की जरुरत इसलिए है कि वे काम करने के विभिन्न वातावरण को अपना सकें और इस तरह लाभदायी नियोजन में बने रहने के अपने अवसर को बढ़ा सकें।

तकनीकी और व्यवसायिक कौशल: कई जॉब विशिष्ट तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता रखते हैं, सब्जि उपजाने से लेकर सिलाई मशीन इस्तेमाल करने तक, ईंट लगाने से कम्प्यूटर के उपयोग तक।

रिपोर्ट में सचित्र विवरण, 'कौशल के रास्ते' और उन क्षेत्रों को समझने के लिए एक औजार के रुप में काम करता है जहां नीति कार्रवाई को लक्षित किया जाना चाहिए। युवा लोग, औपचारिक सामान्य शिक्षा और इसके विस्तार के माध्यम से तीन प्रकार के कौशल प्राप्त कर सकते है तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा। वैकल्पिक रुप से, जो स्कूल की औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए हैं वे कौशल प्रशिक्षण के अवसरों से लाभ उठा सकते हैं जिसमें प्रशिक्षुता एवं कृषि आधारित प्रशिक्षण सहित बुनियादी कौशल प्राप्त करने के दूसरे अवसर से लेकर काम – आधारित प्रशिक्षण शामिल हैं।

युवा, कौशल और कार्य – मजबूत बुनियाद बनाना

कई देशों में, युवा पीढ़ी अभी तक की सबसे बड़ी संख्या में मौजूद हैं। ये युवा लोग, विकास के वाहक बनेंगे यदि देश उन्हें अवसर प्रदान कर सके। लेकिन कई इस भूमिका के लिए पर्याप्त रुप से तैयार नहीं है। शिक्षा पर असमान पहुंच कई युवा लोगों, विशेषकर गरीब घरों से युवा महिलाओं को खराब जीवन में कैद कर देता है।

शिक्षा की गुणवत्ता को सदृढ़ करने के साथ ही स्कूली शिक्षा में समान अवसर प्रदान करना, यह सुनिश्चित करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था कि उनकी जॉब संभावनाओं को सुधारने के लिए युवा लोगों के पास आवश्यक कौशल उपलब्ध हो। इन युवा लोगों को बेरोजगारी या कम वेतन के कामगार बनने की आशंका सबसे ज्यादा है।

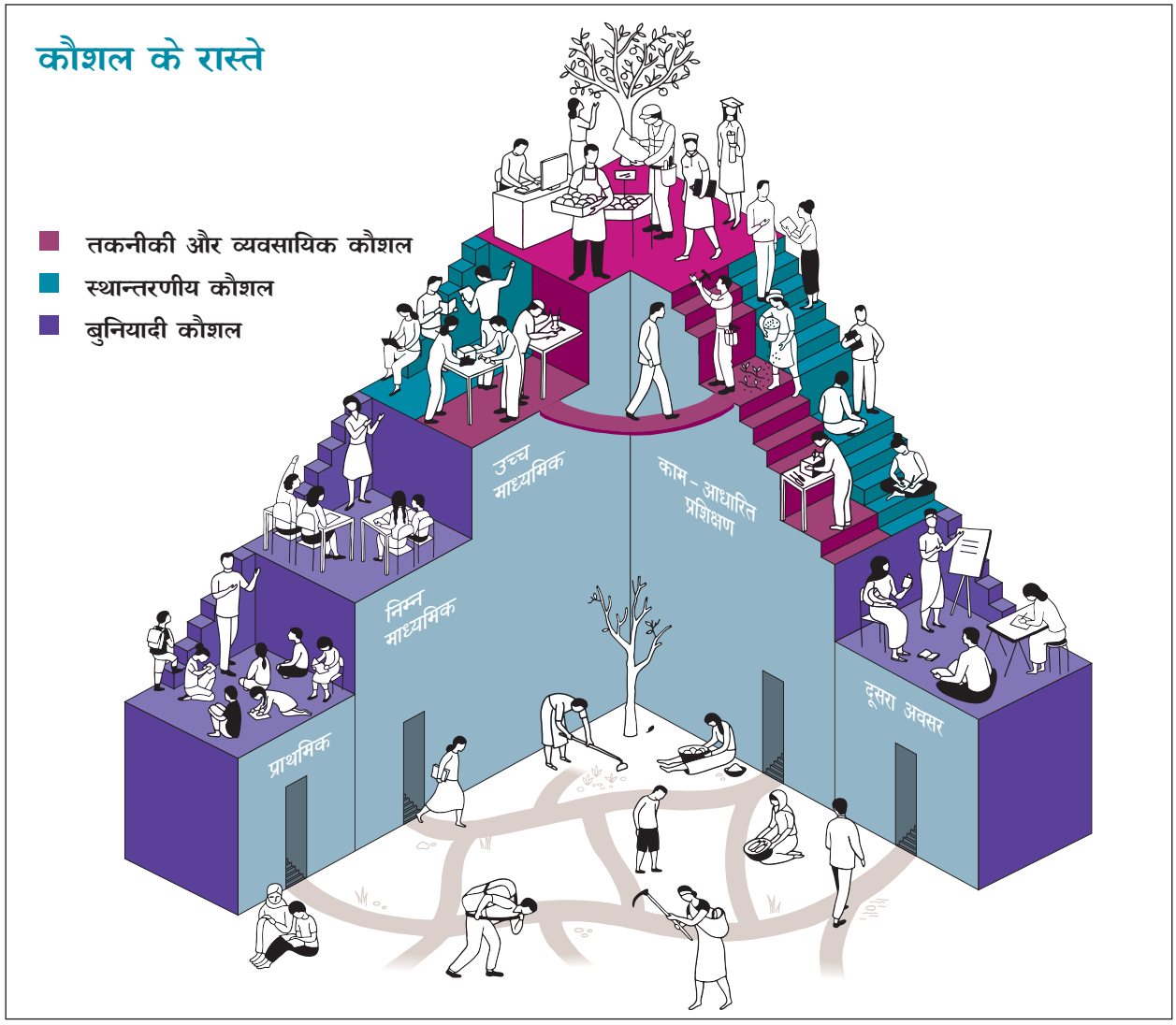

युवाओं की एक बड़ी आबादी चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं

प्रत्येक साल बेरोजगार युवाओं की संख्या बढ़ रही है, घट नहीं रही। कई विद्यार्थी प्रत्येक साल स्कूल से बाहर आ रहे हैं और यह बेरोजगार युवाओं की संख्या को बढ़ाता है जबकि जॉब के अवसर वही हैं।

– युवा पुरुष, इथोपिया

विश्व में करीब छह में से एक व्यक्ति 15 से 24 की उम्र में है। वे असंगत तरीके से कुछ सबसे गरीब देशों में केन्द्रीत हैं। युवा आबादी, विशेषरुप से उप–सहारा अफ्रीका में बड़ी है और तेजी से बढ़ रही है। करीब दो–तिहाई अफ्रीकी 25 साल की उम्र से कम के हैं जबकि धनी देशों जैसे फ्रांस, जापान, युनाईटेड किंगडम और संयुक्त राज्य में एक तिहाई से कम युवा हैं। 2030 तक, 1980 की तुलना में उप–सहारा अफ्रीका में साढ़े तीन गुणा युवा होंगे। अरब राज्यों और दक्षिण एवं पश्चिम एशिया, जहां करीब आधी आबादी 25 की उम्र से कम की हैं, वहां बड़ी संख्या में युवा हैं।

अरब राज्यों, दक्षिण और पश्चिम एशिया और उप–सहारा अफ्रीका में युवाओं की बढ़ती आबादी को जगह देने के लिए 2020 तक 57 मिलियन तक अतिरिक्त जॉब के सृजन की जरुरत है ताकि बेरोजगारी दर वर्तमान स्तर से उपर न जाए।

हालांकि, पहले सरकारों को कौशल के कमी की बड़ी समस्या का समाधान करना चाहिए, इस कमी के कारण युवा बेरोजगार रह जाते हैं या कमतर कामों में उलझ जाते हैं। ज्यादा जॉब का सृजन समस्या का समाधान नहीं कर सकता यदि युवा लोगों की एक बड़ी आबादी के पास जॉब के अनुकूल आवश्यक कौशल नहीं है।

व्यापक असमानता कई लोगों को बुनियादी कौशल से वंचित रखता है

यदि मैं बड़ा बनना चाहता हूं तो मुझे पढ़ते रहना होगा, लेकिन आर्थिक कारणों से मैं पढ़ाई जारी नहीं रख सकता। मैंने सोचा कि बोझ बनने से बचने के लिए अपनी आवश्यकताओं का स्वयं भुगतान करने के लिए मुझे पढ़ाई से बाहर निकलना होगा, लेकिन मैं जॉब नहीं ढूंढ़ पा रहा हूं – मुझसे पढ़ाई जारी रखने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।

– युवा पुरुष, मेक्सिको

रोजगार के लिए तैयार होने के लिए, सभी युवा लोगों को शिक्षा के माध्यम से बुनियादी कौशल हासिल करने की जरुरत है जो कि कम से कम निम्न माध्यमिक स्कूल तक जारी रहता है। लेकिन इस रिपोर्ट के लिए संचालित विश्लेषण द्वारा कवर किए गए 39 देशों में से 30 में 15 से 19 साल की आधी आबादी के पास बुनियादी कौशल नहीं है। डेटा सेट में 30 उप–सहारा अफ्रीकी देशों में से 23 का यही मामला है। (चित्र 12)

बुनियादी कौशल नहीं हासिल करने कारण अलग–अलग हैं, जिनके लिए अलग–अलग नीति प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। बुरकिना फासो, माली और नाइजर में पांच में से करीब तीन युवा 15 से 19 की उम्र तक पहुंचने तक कभी स्कूल नहीं गए और इसलिए यह लगभग नामुमकिन है कि उन्हें अवसर मिले। कई उप–सहारा अफ्रीकी देशों में जो स्कूल जा पाते हैं वे प्राय: प्राथमिक स्कूल पहुंचने के पहले ही बाहर हो जाते हैं। रवांडा में, हालांकि ज्यादातर लोगों को प्राथमिक स्कूल का कुछ अनुभव है, लेकिन प्राथमिक चक्र के पूरा होने के पहले ही आधे लोग बाहर हो जाते हैं।

कम आय वाले देशों. में 15 से 19 के बीच की उम्र की एक बड़ी संख्या अभी भी प्राथमिक स्कूल में है, उस उम्र में जब तक उन्हें कम से कम निम्न माध्यमिक शिक्षा पूरी कर लेनी चाहिए थी। उदाहरण के लिए युगांडा में 35% अभी भी इस उम्र में प्राथमिक स्कूल में हैं, इस स्तर से आगे जाने की संभावना काफी सीमित है।

वैसे देशों में भी जहां कि 15 से 19 उम्र की आधी आबादी ने निम्न माध्यमिक पूरा कर लिया है जैसे भारत, इंडोनेशिया और सिरियन अरब गणतंत्र, कई ऐसे हैं जो कभी स्कूल नहीं गए, जो माध्यमिक शिक्षा पूरा करने से पहले ही बाहर हो गए या जो अभी भी प्राथमिक स्कूल में हैं।

नाइजर में 15 से 19 साल की उम्र समूह में पांच में से तीन कभी स्कूल नहीं गए हैं।

गरीबी, शिक्षा और कौशल के रास्ते की बाधा है। इजिप्ट में, सबसे गरीब में से पांच में एक कभी भी प्राथमिक स्कूल नहीं जा पाता है जबकि सभी अमीर बच्चे उच्च माध्यमिक करपाते हैं।

कई बच्चे और किशोर जो गरीबी के कारण स्कूल में नहीं हैं वे काम में लगे हुए हैं। 2008 में, विश्व भर में 5 से 17 की उम्र के 115 मिलियन की आकलित आबादी खतरनाक काम में लगी थी। कौशल हासिल करने की योग्यता के बिना, वे जीवन भर कम आय के असुरक्षित कामों में उलझे रहते हैं।

जैसे–जैसे बच्चे बड़े होंगे अमीर और गरीब के बीच की खाई और चौड़ी होगी, क्योंकि वंचित पृष्ठभूमि के लोगों को घरेलू आय में हमेशा योगदान देने की जरुरत रहती है। कोलम्बिया और वियतनाम में, लगभग सभी बच्चे प्राथमिक स्कूल जाते हैं। जबकि अमीर घरों के ज्यादातर बच्चे निम्न माध्यमिक स्कूल तक जा पाते हैं वहीं वियतनाम में गरीब घरों के लगभग दो–तिहाई बच्चे ही जा पाते हैं और कोलम्बिया में करीब आधे बच्चे।

ज्यादातर गरीब देशों में, लड़कियों द्वारा बुनियादी कौशल हासिल करने की संभावना लड़कों से कम होती है। कम आय वाले देशों में, बड़ा लैंगिक अंतर अमीर परिवारों के लिए प्रकट होता है जबकि गरीब घरों से लड़के और लड़कियों के लिए अवसर अत्यंत सीमित हैं। बुरकिना फासो में अमीर घरों के लगभग 60% लड़के निम्न माध्यमिक स्कूलों तक पहुंचते हैं, जबकि लड़कियां केवल 40%। सबसे गरीब घरों में से केवल 5% बच्चे निम्न माध्यमिक स्तर तक पहुंचते हैं लेकिन गरीब लड़की और लड़कों का समान अनुपात नामांकन लेता है।

चित्र 12: कई युवा लोग बुनियादी कौशल हासिल कर पाने में अक्षम होते हैं
15 से 19 साल की उम्र के लोगों की शैक्षणिक स्थिति, देसवार, नवीनतम प्राप्त वर्षवार

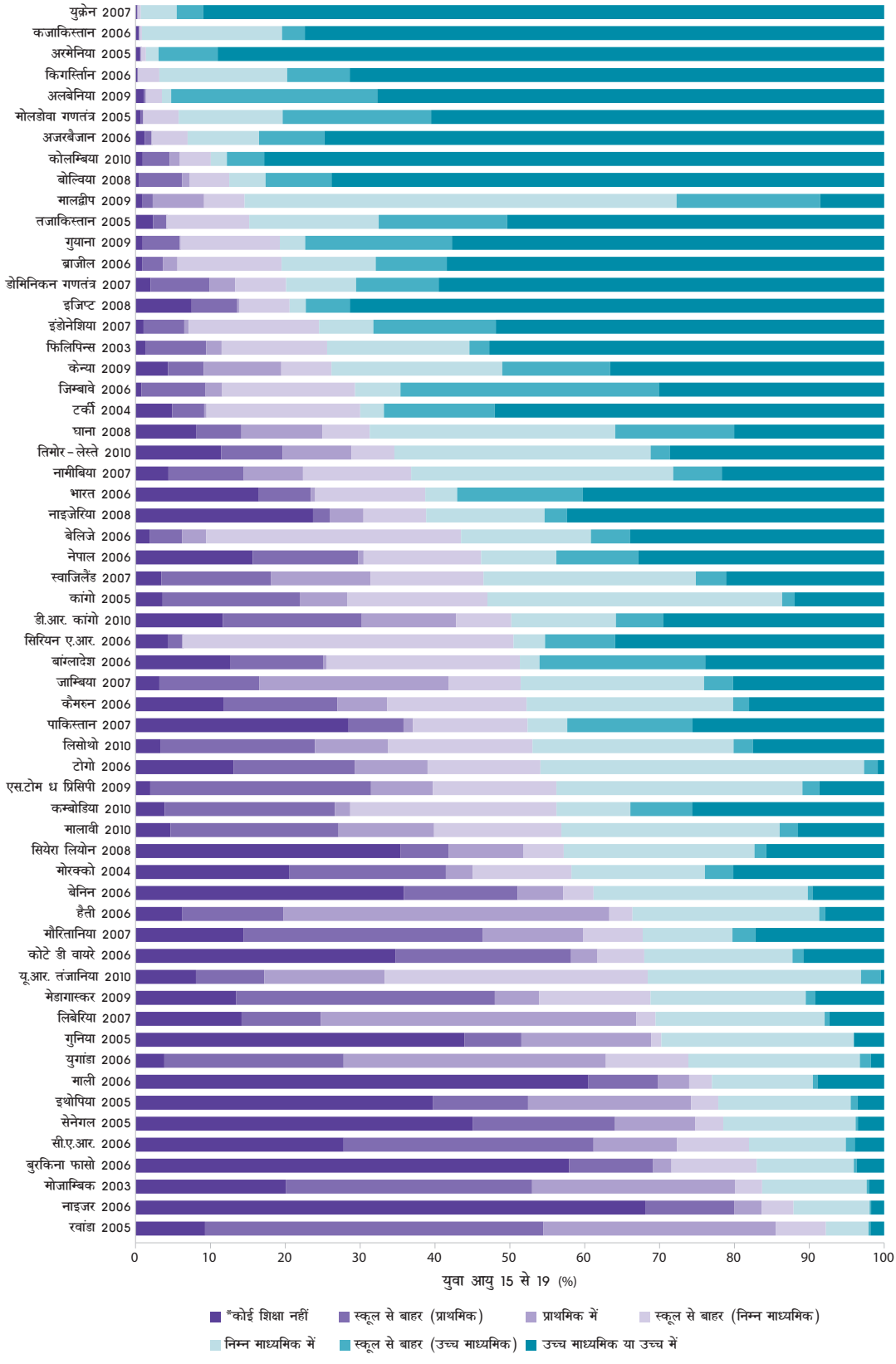

स्रोत: यूआईएस (2012ए)

मध्य आय देशों में विपरीत सच है, जहां लैंगिक भेदभाव सबसे गरीब घरों में होता है लेकिन अमीर घरों से ज्यादातर युवा चाहे लड़के हों या लड़कियां, बुनियादी शिक्षा पाने में सक्षम होते हैं। टर्की में, अमीर परिवारों में लैंगिक समानता है लेकिन गरीब घरों में 30% लड़कियों की तुलना में 64% लड़के बुनियादी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

जहां युवाओं का जीवन उनके शैक्षणिक अवसरों को आगे निर्धारित कर सकता है, वहीं ग्रामीण/शहरी या क्षेत्रिय अंतर को लिंग द्वारा बल मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली युवा महिलाओं द्वारा बुनियादी कौशल प्राप्त करने की संभावना सबसे कम है। पाकिस्तान में, 15 से 19 की उम्र वालों, जो उच्च माध्यमिक स्तर तक पहुंचे हैं, की हिस्सेदारी ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में लगभग दुगुनी है। देश में ग्रामीण महिलाओं की लगभग आधी आबादी कभी स्कूल नहीं गई, जबकि यह मात्र 14% शहरी पुरुषों के लिए सच है। भारत के केरल में, बुनियादी कौशल स्तर को लगभग सार्वभौमिक कवरेज है लेकिन बिहार में केवल 45% को वैसा अवसर मिल पाता है, 57% लड़कों को और 37% लड़कियों को।

कोई शक नहीं कि अवसरों में ऐसे भेदभाव गरीबी की पद्धति के कारण हैं, लेकिन वे सरकारी संसाधनों के असमान वितरण को भी परिलक्षित करते हैं। उदाहरण के लिए केन्या के झुग्गी-झोपड़ियों में कई बच्चे इस कारण से बुनियादी कौशल पाने की उम्मीद नहीं रख सकते हैं कि जहां वे रहते हैं वहां स्कूल नहीं है। यह संसाधनों के पुन: वितरण की जरुरत को उजागर करता है ताकि युवाओं को उनकी संपन्नता, लिंग और जहां वह रहते हैं इन आधाार पर जॉब बाजार तक पहुंच सें वंचित नहीं होना चाहिए।

युवा लोगों को बुनियादी साक्षरता और सांख्यिकी ज्ञान प्राप्त करने का दूसरा अवसर मिलना चाहिए

वर्तमान में, मेरी शिक्षा और कौशल स्तर पर्याप्त नहीं है, लेकिन यदि मैं भविष्य में प्रशिक्षण के लिए जा सका तो मेरा विश्वास है कि मैं उन्हें हासिल कर सकती हूं (बुनियादी कौशल)

– युवा महिला, इथोपिया

बुनियादी कौशल से वंचित सभी युवाओं को दूसरा अवसर प्रदान करने की चुनौति का आकार उससे काफी बड़ा है जितना कई सरकारें पहचान पाई हैं। इस साल के ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट ने गणना की है कि 123 कम और मध्यम आय वाले देशों में 15 से 24 की उम्र के करीब 200 मिलियन लोगों ने अभी तक प्राथमिक स्कूल नहीं पूरा किया है। यह पांच युवा में से एक के समतुल्य है। इनमें से 58% महिलाए हैं।

क्षेत्रिय रुप से, उप-सहारा अफ्रीका में तीन में से एक और अरब राज्यों में पांच में से एक के पास बुनियादी कौशल नहीं है। 200 मिलियन में से आधी आबादी पांच देशों में रह रही है, ये देश हैं, इथोपिया, भारत, नाइजेरिया और पाकिस्तान। इनमें से ज्यादा लोगों की संख्या वैसी है जो पश्चिम एशिया (91 मिलियन) और उप सहारा अफ्रीका (57 मिलियन) में रह रहे हैं और बुनियादी कौशल से वंचित हैं।

यद्धपि, विश्व भर में कई नवीन द्वितीय अवसर के कार्यक्रम हैं, उनमें से कई गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) द्वारा प्रदत हैं, जितनी युवाओं तक वे पहुंच पाते हैं उनकी संख्या मात्र सतह पर खरोंच के समान हैं। सात देशों में कुछ सबसे बड़े कार्यक्रमों का मूल्यांकन इंगित करता है कि वे करीब 2.1 मिलियन बच्चों और युवाओं तक पहुंचते हैं। फिर भी यह रिपोर्ट इस बात का आकलन करता है कि उन सात देशों में 15 मिलियन युवाओं को सबसे बुनियादी कौशल प्राप्त करने का दूसरा अवसर मिलता है।

ऐसा है कि बुनियादी कौशल प्रदान करने का सबसे लागत प्रभावी तरीका यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे अच्छी गुणवत्ता की प्राथमिक शिक्षा पूरी करें और निम्न माध्यमिक स्कूल की तरफ आगे बढ़ें। जब तक यह कई लोगों के लिए वास्तविकता नहीं बन पाएगी तब तक यह सुनिश्चित करने की अत्यंत आवश्यकता है कि सभी युवा जो यह अवसर गवां चुके हैं उन्हें इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दूसरा अवसर मिलना चाहिए।

123 निम्न और मध्य आय वाले देशों में 200 मिलियन युवाओं को दूसरे अवसर की जरुरत है

स्थानान्तरणीय कौशल: काम की दुनिया के लिए तैयार करना

(स्कूल) आपको सीखाता है कि लोगों से कैसे संवाद स्थापित करें और कामकाज का वातावरण मूलत: कैसा होता है।

– युवा महिला, युनाइटेड किंगडम

नियोक्ता यह भरोसा चाहते हैं कि जॉब के लिए आवेदन करने वाले युवा के पास कम से कम बुनियादी कौशल हो और उनके ज्ञान को समस्या समाधान में लगाया जा सके, वे पहल कर सकें और दल के सदस्यों के साथ संवाद स्थापित कर सकें, न कि केवल निर्धारित रुटीन का पालन करें। ये स्थानान्तरणीय कौशल किसी पाठ्यपुस्तक से नहीं पढ़ाया जा सकता है, लेकिन अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। फिर भी नियोक्ता प्राय: इंगित करते हैं कि श्रम बाजार में नए नियुक्त लोगों में इन कौशल का अभाव है।

अमीर देशों से प्रमाण दिखाता है कि लंबी अवधि तक स्कूल में रहना समस्या समाधान कौशल को हासिल करने में मदद का भरोसा देता है। कनाडा में, उच्च माध्यमिक पूरा करने के पहले स्कूल छोड़ने वालों में से 45% में इन कौशल की कमी है जबकि चक्र पूरा करने वालों में 20% हैं।

अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा आत्मविश्वास बढ़ाता है और प्रेरणा देता है। स्थातान्तरणीय कौशल, जो गरीब देशों में अनौपचारिक क्षेत्र में काम कर रहे कई युवाओं को उनके जॉब में सफल होने में मदद कर सकता है, का विकास औपचारिक शिक्षा के माध्यम से हो सकता है। इन कौशल को विकसित करने के लिए वंचित युवाओं के लिए और ज्यादा किए जाने की जरुरत है। इसे जानते हुए, भारत में एक एनजीओ अकांक्षा, ने मुम्बई की झुग्गी-झोपड़ियों में कार्यक्रम चलाया है ताकि वंचित बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ सके।

प्रभाव काफी सकारात्मक और दूरगामी रहा है – जिन बच्चों ने भाग लिया उनके स्कूल में प्रदर्शन और कमाई में काफी सुधार दिखाई दिया।

स्कूल के काम में एक खतरनाक परिवर्तन

आप काम की तलाश में हैं और वे आपसे पूछते हैं कि हाई स्कूल डिप्लोमा है, लेकिन आपके पास नहीं होता है।
–युवा महिला, मेक्सिको

कई युवा स्कूल से काम में मुश्किल परिवर्तन से गुजरते हैं। श्रम बाजार में जिन मुश्किलों का सामना युवाओं को करना पड़ता है वह जॉब की कमी और कम गुणवत्ता के काम–असुरक्षित, कम वेतन के काम सहित– दोनों में परिलक्षित है। शिक्षा में कमियों से जुड़े कारक जैसे गरीबी, लिंग और विकलांगता, प्राय: श्रम बाजार से भी जुड़े कारक हैं। यह कोई संयोग नहीं है – असमान कौशल विकास, सामाजिक नियम और श्रम बाजार भेद–भाव संयुक्त रुप से इस परिणाम को जन्म देता है।

आर्थिक मंदी के पहले की अपेक्षा 2011 में 29 मिलियन कम जॉब थे।

कुछ युवा, विशेषकर धनी देशों में, स्कूल छोड़ने के बाद लंबी अवधि के लिए बेरोजगारी झेलते हैं। 2011 में विश्व के युवाओं के लगभग 13% की गणना बेरोजगार के रुप में की गई थी – 75 मिलियन युवा लोग, 2007 में आर्थिक संकट शुरु होने के पहले से लगभग 4 मिलियन ज्यादा। व्यस्कों की अपेक्षा युवाओं के लिए बेरोजगारी दर औसतन दो से तीन गुणा ज्यादा है। इजिप्ट में युवाओं के लिए यह छह गुणा ज्यादा है, जबकि दक्षिण अफ्रीका में ढ़ाई गुणा और इटली में चार गुणा।

जबकि यहां हो सकता है कि पूराने लोगों की तुलना में युवा लोगों के काम से बाहर रहने आशंका ज्यादा है क्योंकि वह अभी पहला कदम आगे बढ़ा रहे हैं, कई देशों में बहुसंख्यक युवा लोगों के लिए अच्छा जॉब मिलना दुर्गम हैं। मध्य 2000 में, आर्थिक मंदी शुरु होने के पहले ही इटली में 15 से 19 साल की उम्र में से 17% शिक्षा छोड़ने के पांच सालों बाद बेरोजगार थे।

चुंकि आर्थिक मंदी की शुरुआत हो चुकी थी, युवाओं के लिए अवसर समाप्त हो गए और जिन्होंने कम स्तर की शिक्षा प्राप्त की थी वे सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। आर्थिक मंदी शुरु होने के पहले की तुलना में 2011 में पूरे विश्व में करीब 29 मिलियन कम जॉब थे। उदाहरण के लिए, स्पेन में बेरोजगारी दर में 2007–2009 के बीच काफी बढ़ोतरी हुई, विशेषकर उनके लिए जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा नहीं पूरी की थी।

हालांकि बेरोजगारी के आंकड़े, कई युवाओं द्वारा सामना कर रहे दुर्दशा की पूरी तस्वीर नहीं देते हैं। वे इस तथ्य को छुपाते हैं कि कुछ युवाओं ने इसलिए काम ढूंढना छोड़ दिया है क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं है कि काम मिलेगा। लोग जो न तो शिक्षा में हैं, न रोजगार में और न हीं सक्रियता से काम की तलाश कर रहे हैं उन्हें प्राय: असक्रिय के रुप में वर्गीकृत किया जाता है, यद्धपि उनकी असक्रियता श्रम बाजार में उनके अपने उद्देश्य से ज्यादा परिलक्षित होती है। यदि जो काम की तलाश में हतोत्साहित हैं, उनकी गणना की जाए तो युवा लोगों की बेरोजगारी दर काफी ज्यादा हो सकती है, उदाहरण के लिए कैमरुन में दुगुनी।

असक्रिय के रुप में वर्गीकृत लोगों में महिलाओं की संख्या प्राय: ज्यादा है। मात्र प्राथमिक स्कूल पूरा करने के बाद शिक्षा प्रणाली से बाहर आने वाले युवाओं के बीच लिंग भेद प्राय: ज्यादा है। जॉर्डन में, केवल प्राथमिक शिक्षा प्राप्त 20% युवा पुरुषों की तुलना में 80% युवा महिलाएं सक्रिय होकर काम की तलाश नहीं कर रही थी।

युवा महिलाएं प्राय: घरों और अनौपचारिक कामों में लंबी अवधि तक काम करती हैं जो कि नीति निर्धारिकों को कम दिखता है। नौ देशों में हाल के श्रमबल सर्वेक्षण के इस रिपोर्ट के विश्लेषण से पता चला कि पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा युवा महिलाओं को सभी नौं देशों में असक्रिय के रुप में वर्गीकृत किया गया, प्राय: महत्वपूर्ण रुप से। पुरुषों की अपेक्षा कम महिलाएं काम की तलाश करने की कोशिश करती हैं, जिसके कारण प्राय: हैं... घरेलू बाजार का असमान विभाजन और चयन प्रक्रिया में भेद–भाव।

महिलाएं जिन्हें काम मिलता है उनका वेतन भुगतान पुरुषों से कम होता है। भारत और पाकिस्तान में, पुरुष, महिलाओं से औसतन 60% ज्यादा कमाते हैं। साक्षरता और संख्या ज्ञान के कम स्तर वालों के लिए पारिश्रमिक में अंतर काफी व्यापक है। फिर भी शिक्षा महिलाओं की कमाई में काफी अंतर ला सकती है। पाकिस्तान में, उच्च स्तर की साक्षरता वाली महिलाएं, बिना साक्षरता कौशल वाली महिलाओं की अपेक्षा 95% ज्यादा कमाती हैं, जबकि पुरुषों में यह अंतर मात्र 33% था।

शारीरिक रुप से अक्षम युवाओं को शिक्षा और काम दोनों हासिल करने मे खास मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। केन्या में काफी कम शारीरिक रुप से अक्षम युवा प्राथमिक स्तर से आगे पढ़ पाते हैं। उन्हें उनकी कम शिक्षा स्तर, काम के स्थान की अनुकूलता में कमी या अभाव और परिवारों और नियोजकों के बीच सीमित अपेक्षाओं के कारण रोजगार प्राप्त करने में अड़चनों का सामना करना पड़ता है।

कई युवाओं के पास बेरोजगार रहने की सहुलियत नहीं होती है इसलिए वे असुरक्षित, कम वेतन वाले और प्राय: लंबे घंटे वाले खराब गुणवत्ता के काम करने पर मजबूर होते हैं। कुछ के लिए यह ज्यादा स्थिर और संतुष्टि वाले काम प्राप्ति के लिए एक कदम है। लेकिन कईयों के लिए, ऐसे काम एक जाल है जिससे भागना मुश्किल है।

वैश्विक रुप से एक आकलन के अनुसार 152 मिलियन युवाओं – कुल युवा कामगारों का 28% – को प्रति दिन 1.25 अमेरिकी डालर मिलता है। बुरकिना फासो, कम्बोडिया, इथोपिया और युगांडा जैसे देशों में गरीबी रेखा से नीचे काम करने की घटना, बिल्कुल नहीं काम करने की अपेक्षा ज्यादा व्यापक है।

व्यस्कों की अपेक्षा युवाओं को काफी कम वेतन मिलने की आशंका ज्यादा है। औगाडोगु, बुरकिना फासो में युवा व्यस्कों की अपेक्षा मध्य उम्र के व्यस्क औसतन लगभग ढ़ाई गुणा ज्यादा कमाते हैं। हालांकि, युवाओं को उनकी उम्र बढ़ने के साथ वेतन बढ़ने अपेक्षा हो सकती है, लेकिन न्यूनतम वेतन से कम कमाने से उनके पास दैनिक जरुरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त धन होता है।

कम आय वाले देशों में, कम शिक्षित युवा जो सही प्रकार के जॉब की प्रतिक्षा नहीं कर सकते उन्हें कम पारिश्रमिक का काम मिलने का जोखिम सबसे ज्यादा है। हालांकि यह कुछ हद तक इस कारण से भी हो सकता है कि शिक्षा का स्तर कम है जहां अच्छी वेतन का काम पाने के लिए अन्य बाधाएं भी हैं, यह भी संभावित है कि शिक्षा का कम स्तर प्राय: युवा लोगों के खराब वेतन वाले जॉब में होने का कारण है। उदाहरण के लिए, कम्बोडिया में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त 67% की तुलना में बिना शिक्षा के 91% युवा गरीबी रेखा के नीचे काम करते हैं।

गरीब देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं को स्कूल छोड़ने और बेरोजगार रहने की अपेक्षा कम वेतन वाले काम से जुड़ने की आशंका ज्यादा होती है। उदाहरण के लिए, कैमरुन के ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर करीब 1% है। कृषि, कम शिक्षा स्तर वाले युवाओं को बड़ी संख्या में लोगों को काम प्रदान करता है, लेकिन ज्यादातर कम वेतन पाते हैं। बिना शिक्षा के ग्रामीण युवाओं का दो-तिहाई प्रति दिन 1.25 अमेरिकी डालर पर काम करता है, जबकि ग्रामीण, अशिक्षित महिलाओं की स्थिति सबसे खराब है।

पर्याप्त वेतन वाले काम तलाशने की युवाओं की योग्यता पर माध्यमिक शिक्षा पूरा करने का प्रभाव लिंग के अनुसार बदलता है। नेपाल में, युवा पुरुष जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा नहीं पूरी की है उनकी पर्याप्त वेतन पाने की संभावना बेहतर शिक्षित युवा महिलाओ से ज्यादा है-माध्यमिक शिक्षा पूरी करने वाली युवा महिलाओं के 30% से कम की तुलना में 40% से ज्यादा पुरुष गरीबी रेखा से उपर कमा रहे हैं।

संपन्नता के लिए कौशल में निवेश

शिक्षा का अभाव है इसलिए हमें काम नहीं मिलता और हमारे जीवन को सुधार नहीं सकते। हमारे लिए कोई विकास नहीं है।

-युवा पुरुष, भारत

बेरोजगारी, असमानता और गरीबी कम करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए कौशल विकास महत्वपूर्ण है। यह भी एक बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश हैं – शिक्षा पर खर्च प्रत्येक 1 अमेरिकी डालर के लिए आर्थिक विकास में 10 से 15 अमेरिकी डालर उपार्जित किया जा सकता है। यदि विश्व के सबसे गरीब देशों में से 46 में 75% से ज्यादा 15 साल की उम्र के लोग गणित के लिए न्यूनतम ओईसीडी बेंचमार्क तक पहुंचते तो आर्थिक विकास में इसकी आधारसीमा से 2.1% का सुधार होता और 104 मिलियन लोगों को अत्यंत गरीबी से बाहर निकाला जा सकता था।

कोरिया गणराज्य मात्र तीस सालों में गरीब से धनी हो गया, जिसका एक कारण कौशल विकास पर जोर देना और उसके लिए योजना तैयार करना था। राज्य ने सार्वभौमिक प्राथमिक, फिर माध्यमिक शिक्षा को प्राप्त कर पूरी आबादी के कौशल को अपग्रेड किया। इसने फिर कौशल प्रशिक्षण से समर्थन देने वाले उद्योगों पर ध्यान केन्द्रीत किया। कम शब्दों में, राज्य ने मांग के अनुरुप कौशल आपूर्ति को पूरा कर एक मुख्य भूमिका निभाई।

दशकों के कम या न के बराबर विकास के बाद उप सहारा अफ्रीकी देशों ने 2000 के दशक में मजबूत विकास का अनुभव किया। क्षेत्र में देशों के एक तिहाई ने कम से कम 6% का विकास दर हासिल किया है और कुछ 21वीं सदी के पहले आधे समय में मध्य आय का स्तर प्राप्त करने की आशा रखते हैं। कोरिया गणराज्य और अन्य पूर्वी एशियाई शेरों का अनुभव सुझाता है कि उप सहारा अफ्रीका में सतत विकास श्रम बाजार की जरुरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा और कौशल विकास में सरकारी निवेश के साथ संयोजित ठोस आर्थिक नीतियों पर निर्भर करता है।

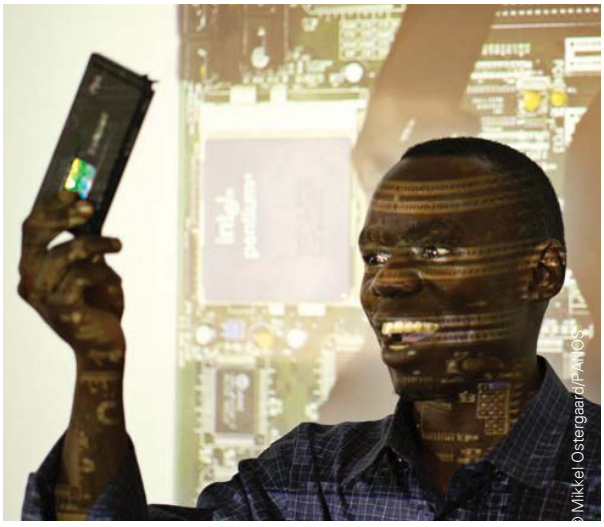
© Mikkel Ostergaard/PANOS

सभी युवा कामगारों की एक तिहाई प्रति दिन 1.25 अमेरिकी डालर से कम प्राप्त करती है।

कई सरकारें कौशल की उपेक्षा करती हैं जिसके कारण अधिकांश लोग इससे वंचित रह जाते हैं

कौशल विकास में निवेश के स्पष्ट साक्ष्य होते हुए भी उसके गुणों की तरफ विशेष प्राथमिकता नहीं दी जा रही है। छियालीस देशों में बड़ी संख्या में युवाओं पर किए गए विश्लेषण में देखने में आया है कि उनमें से अधिकांश की आय निम्न या निम्न मध्य श्रेणी, मध्य श्रेणी की आबादी है या विकासशील देशों में कौशल निर्माण से संबंधित कुछ नीति दस्तावेज देखे जा सकते हैं जो तकनीकी या व्यवसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण योजना या व्यापक कौशल विकास रणनीति से संबंधित थे।

जिन देशों में कौशल विकास योजनाएं मौजूद हैं वे बाजार की मांग और देश के विकास की प्राथमिकता में श्रम बाजार में बहुत ही जर्जर, असमन्वित और अयोग्य हैं। कौशल विकास के प्रति संस्थाओं में कोई जिम्मेदारी या जबावदेही नहीं है।

सभी युवाओं को माध्यमिक स्कूल भेजने के लिए 8 बिलियन अमेरिकी डालर की जरूरत होगी।

कौशल विकास के लिए कार्यनीति योजना का अभाव जैसे वंचित लोगों तक पहुंचने हेतु लक्ष्य की विकास कार्यनीतियों के अंतर्गत दूरदृष्टि के अभाव को दर्शाता है। इस रिपोर्ट की साठ देशों में समीक्षा की गई जिनमें आधे से कम देशों के युवाओं को ही अनियमित क्षेत्र में कौशल विकास के बारे में जानकारी थी। हालांकि उनमें से कुछ देशों में उसकी पहचान कर उनका पता लगाने की दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं।

उदाहरण के लिए यूथोपिया में इस महत्वाकांक्षी योजना के द्वारा कौशल विकास किया जा रहा है जिसके अंतर्गत विकास की कार्यनीति को वर्ष 2025 तक मध्य आय वाले देश की स्थिति में लाने की उम्मीद की जा रही है। इसका उद्देश्य वर्ष 2020 तक सकल माध्यमिक विद्यालय नामांकन को प्राप्त करते हुए कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्रों में कौशल विकास पर बल देना है। माइक्रो व छोटे उद्यमों की उत्पादकता को बढ़ाने की दिशा में भी पर्याप्त कोशिश की जा रही है जिन स्थानों पर बहुत से वंचित युवा काम करते हैं।

देश के लगभग एक चौथाई भाग में उन युवाओं को दोबारा अध्ययन कार्य पूरा करने के लिए कार्यनीतियों का विश्लेषण किया गया जिन्होंने प्राथमिक शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है या छोड़ दिया है। उदाहरण के लिए सायरा लियोनी ने उद्यम कौशल में प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से युवा रोजगार कार्यनीति तैयार की। एक संदर्भ में जहां पर 15 से 19 वर्ष के आयु वर्ग के 57% युवाओं ने अपने माध्यमिक शिक्षा को पूरा करने से पहले ही स्कूल जाना छोड़ दिया गया और उस कार्यनीति में उन लोगों में मूलभूत कौशल के अभाव पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और इसलिए उन्हें शिक्षा कार्यक्रमों में दूसरा अवसर दिए जाने की जरूरत है।

युवा लोग मुश्किल से ही कार्यनीति बनाने में अपना योगदान देते हैं बल्कि उनकी आवाज को सुना जाना अत्यावश्यक है। 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं की वैश्विक जनसंख्या का लगभग छोटा हिस्सा है और समाज का सबसे गतिशील वर्ग है साथ ही वह वर्ग अत्यंत कमजोर और शक्तिहीन वर्ग है। उन्हें अपने जीवन की वास्तविकता की नीति निर्माताओं की तुलना में अधिक समझ होती है जैसे शिक्षा और प्रशिक्षण का महत्व और अच्छी नौकरी की तलाश के लिए चुनौती। जहां पर युवाओं को हिस्सेदारी के लिए आमंत्रित किया भी जाता है वहां पर उनकी आवाज को मुश्किल से ही सुना जाता है। शिक्षित और विशेषाधिकार प्राप्त नगरीय युवा के साथ परामर्श किया जाता है जबकि बहुलता वाले गरीबों की आवाज को मुश्किल से ही शामिल किया जाता है।

वंचित युवाओं के कौशल विकास हेतु वित्तीय मदद करना

युवाओं का तीन प्रकार से कौशल विकास करने हेतु वित्तीय सहायता देना अत्यंत आवश्यक: ग्रामीण कार्यक्रम आयोजित करके यह सुनिश्चित करने हेतु मदद करना कि युवा लोग कम से कम माध्यमिक स्तर तक स्कूल जा सकें इसलिए युवाओं को इन कार्यक्रमों के द्वारा दूसरा मौका दिया जाना चाहिए जिन्हें शिक्षा प्राप्ति और कौशल विकास का अवसर नहीं दिया गया था और वंचित युवाओं को उनकी इच्छा के अनुसार प्रशिक्षण का अवसर दिया जाना चाहिए ताकि वे अपनी जीविका के लिए उचित मजदूरी प्राप्त कर सकें।

इस प्रस्ताव के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता होगी। सभी युवाओं को निम्न माध्यमिक शिक्षा में नामांकन के लिए लगभग 8 बिलियन अमेरिकी डालर की प्रति वर्ष आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त वर्ष 2015 तक वैश्विक मूलभूत शिक्षा प्राप्त करने के लिए 16 बिलियन अमेरिकी डालर की आवश्यकता होगी। शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता वाले अधिकांश युवा पिछड़े परिवार वाले हैं इसलिए वे इसका खर्च वहन नहीं कर सकते हैं। दान दाताओं की मदद से सरकार औपचारिक स्कूली शिक्षा या शिक्षा के दूसरे अवसर के माध्यम से कौशल की आधारशिला का मौका देने के लिए सभी युवाओं की मदद करना सुनिश्चित कर सकते हैं।

निसंदेह रूप से उनके लिए इससे भी बढ़कर कुछ न कुछ अवश्य ही किया जा सकता है। पिछले दशक में कुछ गरीब देशों ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी मदद को बढ़ाया है। माध्यमिक शिक्षा पर व्यय करने के बाद भी उच्च शिक्षा का पक्ष लिया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ दाताओं ने आधारशिला कौशल विकास मदद कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कौशल विकास पर सभी दाताओं के द्वारा बीते वर्ष लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डालर का खर्च किया गया जिसमें से लगभग 40% खर्च औपचारिक माध्यमिक सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए किया गया।

कुछ दाताओं ने इन क्षेत्रों को सबसे अधिक प्राथमिकता दी जिनमें से जर्मनी विश्व बैंक, फ्रांस और जापान द्वारा सहायता प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा क्षेत्र रहा। छोटे दाताओं में लक्जमबर्ग और स्विटजरलैंड ने कौशल विकास पर अपनी शैक्षिक मदद पर भी विशेष ध्यान दिया। जापान जैसे देश ने कौशल विकास के माध्यम से प्रभावी विकास की शैक्षिक मदद पर अपने अनुभव का उपयोग किया। फ्रांस की अधिकांश वितीय सहायता विकासशील देशों तक नहीं पहुंची। हालांकि फ्रांस ने माध्यमिक सामान्य एवं व्यावसायिक

शिक्षा के लिए 60 से अधिक का व्यय दो विदेशी क्षेत्रों के लिए वर्ष 2010 में किया। शिक्षा के लिए बाह्या वित्त सहायता को बढ़ाने के दो संभावी क्षेत्र हैं: वर्तमान समय में छात्रवृत्तियों पर निधि का पुनर्वितरण जिसके द्वारा युवा लोगों को विकासशील देशों से विकसित देशों में अध्ययन के लिए लाया गया और कौशल विकास को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए दाताओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है जिसके अंतर्गत विशेष ध्यान वंचित युवाओं पर दिया जा रहा है।

जबकि कुछ परिस्थितियों में उच्च शिक्षा के लिए मदद क्षमता विकास हेतु मदद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दुर्भाग्य से यह मदद मुश्किल से ही विकासशील देशों तक पहुंच पाती है। वर्ष 2012 में, पहली बार ओईसीडी-डीएसी में आवश्यक दाताओं ने उद्धार-माध्यमिक शिक्षा हेतु आवंटित राशि की रिपोर्ट दी जिसे छात्रवृद्धि के आवंटित किया गया था और विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु (दाता-देश के संस्थानों द्वारा अर्जित राशि जब वहां पर विकासशील देशों के विद्यार्थी पहुंचे) दी गई धनराशि। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु प्रत्यक्ष मदद का लगभग तीन चौथाई – लगभग 3.1 बिलियन अमेरिकी डालर वर्ष 2010 तक आवंटित किया गया जो इस श्रेणी (चित्र 13) में आय

वर्ष 2010 में, शिक्षा पर जापान की प्रत्यक्ष मदद का लगभग 40 जापान में रहने वाले विद्यार्थियों की छात्रवृति पर खर्च किया गया। इस धनराशि से एक नेपाली विद्यार्थी छात्रवृति पर जापान में शिक्षा प्राप्त की और 229 युवाओं ने नेपाल में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। छात्रवृतियों पर जर्मनी द्वारा आवंटित धनराशि और अध्ययनरत विद्यार्थी पर किया गया खर्च वर्ष 2010 में माध्यमिक सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रत्यक्ष मदद के लिए किए गए खर्च की तुलना में ग्यारह गुना अधिक था। फ्रांस द्वारा छात्रवृति के लिए आवंटित सहायता धनराशि और अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए किया गया खर्च वर्ष 2010 में माध्यमिक सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रत्यक्ष मदद के लिए किए गए खर्च की तुलना में चार गुना अधिक था। यदि दाताओं द्वारा विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु उन्हीं के देश में किए जाने वाले व्यय की वर्तमान धनराशि 3.1 बिलियन अमेरिकी डालर को पुन: विकासशील देशों को दिया जाता है तो यह मूलभूत कौशल में बड़े अंतर को समाप्त करने में काफी अधिक सहायक होगा।

दाताओं की संख्या में वृद्धि जैसे ब्राजील, चीन और भारत कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ऐसा करने के लिए उन्हें वंचित युवा लोगों की शिक्षा और वित्तीय लक्ष्य पर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता होगी जो श्रम बाजार सुधार और गरीबी कम कर कौशल विकास के साथ निवेश को जोड़कर अपने अध्ययन से सीख सकते हैं। भारत की केवल 2 लगभग 950 मिलियन् अमेरिकी डालर की प्रतिबद्धता जिसे वर्ष 2008 से 2010 तक विकासशील देशों में शिक्षा के लिए निदेशित किया गया। दाताओं की बढ़ती संख्या के साथ साथ उनमें से अधिकांश ने उच्च शिक्षा पर ध्यान दिया जो वंचित युवा लोगों की पहुंच में नहीं है।

चित्र 13: कुछ दाताओं के लिए 'मदद' का बड़ा अनुपात देश के बाहर नहीं जा सकता है

चार मुख्य दाता जिन्होंने वर्ष 2010 में शिक्षा पर सबसे अधिक प्रत्यक्ष मदद छात्रवृणि और अध्ययनरत विद्यार्थी को मदद दी

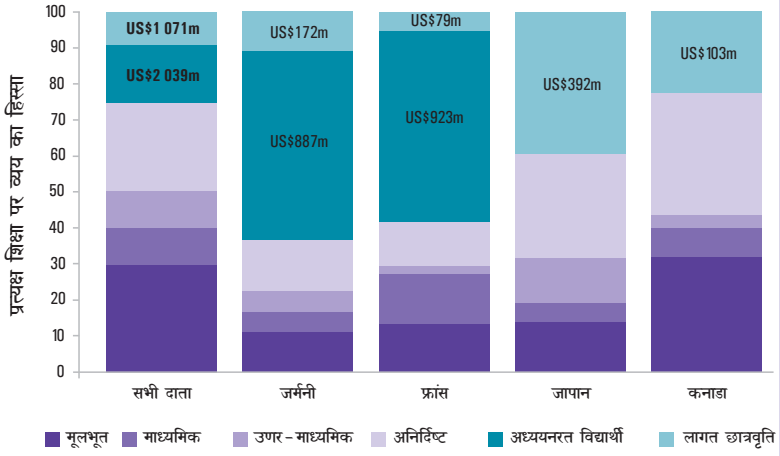

नोट: यह आणति शिक्षा में प्रत्यक्ष सहायता को दर्शाती है (इसके अंतर्गत सामान्य बजट की शैक्षिक सहायता शामिल नहीं है। स्रोत: ओईसीडी-डीएसी (2012)।

निजी क्षेत्र को भी कौशल प्रशिक्षण में अधिक से अधिक निवेश करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से कुशल कार्यबल उत्पादकता और प्रतिस्पर्ध को मजबूती प्रदान करता है जैसे कि जर्मनी और स्विटजरलैंड के उद्योगों ने युवकों को एप्रिंटशिप में कार्य कर रहे हैं। निजी क्षेत्र नूतनकारी परियोजनाओं में युवाओं की मदद कर रहे हैं। मास्टरकार्ड फाउंडेशन इस प्रकार के कार्यक्रमों के लिए धन उपलब्ध कराता है जो युवाओं को कौशल प्राप्त करने में मदद करता है जिसमें वे युवा रोजगार खोजते हैं। हालांकि, फाउंडेशन द्वारा उपलब्ध कारायी जाने वाली यह धनराशि इतने बड़े स्तर की चुनौती का सामना करने के लिए बहुत कम है।

विभिन्न स्रोतों से आने वाले धन से सरकार ने इन संसाधनों की प्रभाव को बढ़ाने के लिए समन्वय स्थापित करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसका लाभ वंचित युवा वर्ग को मिल सके। इस धन का सही ढ़ंग से उपयोग करने का एक माध्यम कुशल प्रबंधन प्रशिक्षण निधि के माध्यम से किया जाना चाहिए जो धन विभिक माध्यमों से आता है – जैसे कंपनियों पर लगाया गया कर और दाताओं द्वारा प्राप्त सहायता। सरकार इस धन का सही ढंग से प्रबंधन और वितरण करे जबकि निजी क्षेत्र प्रशिक्षण प्रदान करें। नेपाल की रोजगार निधि वंचित युवा लोगों को प्रशिक्षण देने का एक उदाहरण है। जहां पर प्रशिक्षण निधि सही ढ़ंग से प्रबंधित है और जिसके प्रभाव सकारात्मक रहे हैं। ट्यूनिशिया ने वर्ष 1999 में प्रशिक्षण निधि की स्थापना की और एक चौथाई से अधिक युवा लोगों को कौशल विकास की शिक्षा दे चुके हैं।

वर्ष 2010 में, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के तीन-चौथाई को छात्रवृद्धि और अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए खर्च किया गया।

माध्यमिक शिक्षा: कार्य करने के तरीके को आसान बनाती है

माध्यमिक स्कूल कौशल प्राप्ति के लिए युवाओं के लिए महत्वपूर्ण माध्यम है जो अच्छी नौकरियों के अवसर में सुधार लाता है। उच्च गुणवद्धा वाली माध्यमिक स्कूली शिक्षा बड़ी संख्या में क्षमताओं, हितों और पृष्ठभूमि संबंधी आवश्यकतों को पूरा करती है केवल युवा लोगों के लिए कार्य क्षेत्र तक ही सीमित न होती है अपितु देश को शिक्षित कार्यबल भी प्रदान करती है जिसका सामना वे आधुनिक तकनीकी के क्षेत्र में कर सकते हैं।

निम्न माध्यमिक स्कूल वर्ग के 71 मिलियन किशोर स्कूल में शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहे हैं।

विश्व स्तर पर, 71 मिलियन किशोरों ने स्कूल में प्रवेश नहीं लिया है। वे देश भी जहां का कुल नामांकन उच्च है, वहां पर भी, बड़ी संख्या में किशोर बच्चे (चित्र 14) स्कूल जाना छोड़ देते हैं। यूरोपियन संघ के देशों में औसतन, 14% युवाओं ने माध्यमिक के बाद शिक्षा प्राप्त ही नहीं की। स्पेन में, तीन में एक बच्चा स्कूल छोड़ देता है जो चिंता का विषय है और जो आर्थिक संकट की गंभीरता को दर्शाता है तथा मार्च 2012 में युवाओं की बेरोजगारी 51% था। सभी देशों में, कार्य के क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा की प्रासंगिकता निश्चित करने की जरूरत है।

माध्यमिक शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना

मेरे पास पुस्तकों और वर्दी के लिए पैसा नहीं था। परिवार की वित्तीय स्थिति खराब थी। मैं अपने परिवार के निर्वाह हेतु परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए दैनिक मजदूरी करने के लिए बाध्य था। स्कूल जाने की तुलना में पैसा कमाना मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण था।

– भारतीय युवा

बहुत से गरीब देशों में माध्यमिक नामांकन को निम्न स्तर से बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। उनकी तत्कालिक आवश्यकता अपनी प्राथमिक शिक्षा को पूरा करना है। नाइजर में, जहां केवल पांच में से एक बच्चा ही निम्न माध्यमिक स्कूल में जाता है, वहां का प्राथमिक नामांकन का अनुपात केवल 62% है।

जो बच्चे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरा कर लेते हैं उनके लिए माध्यमिक स्कूली शिक्षा बाध्यकारी हो सकती है। माध्यमिक स्कूल आमतौर पर शहरी क्षेत्रों में होते हैं जहां गरीब लोगों के जाने की बहुत कम सुविधाएं होती हैं जो आने-जाने का खर्च वहन नहीं कर सकते हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवरोध लड़कियों को अपनी स्कूली शिक्षा जारी रखने से रोक सकते हैं जैसे ही वे अपनी किशोरावस्था में प्रवेश करती हैं। सरकारों को सुधर करने की आवश्यकता है विशेषतौर इस प्रकार के रूकावटों का समाधन निकालना और युवाओं को मौलिक कौशल प्राप्त करने में उनकी मदद करना।

अफ्रीकी उप-सहारा के कुछ देशों ने प्राथमिक शिक्षा और निम्न प्राथमिक शिक्षा को निम्न माध्यमिक नामांकन के साथ जोड़कर बढ़ा दिया है। उदाहरण के लिए, रवांडा में, नौ वर्षीय मौलिक शिक्षा चक्र और वर्ष 2009 में निम्न माध्यमिक स्कूली शिक्षा हेतु शुल्क की समाप्ति ने उस वर्ष के दौरान 25% निम्न माध्यमिक छात्रों की संख्या में बढोतरी हुई। इसके अतिरिक्त, पाठयक्रम को कुछ मुख्य विषयों पर ध्यान केंद्रित कर दोबारा डिजाइन किया गया और नई आकलन प्रणाली को लागू किया गया।

सरकारी या गैर-सरकारी शुल्क गरीब परिवार के छात्रों को प्रभावित करता है, उन्हें प्रवेश लेने और अपनी माध्यमिक शिक्षा को जारी रखने से रोकता है। यदि शुल्क को माफ करने के बाद भी वंचित लोगों तक नहीं पहुंचा जा सकता है तो वे गरीब नहीं है। कीनिया ने माध्यमिक स्कूल के शुल्क को समाप्त कर दिया। उदाहरण के लिए वर्ष 2007 में 12 लाख से बढ़कर वर्ष 2008 में 14 लाख प्रवेश बढ़ गए। सरकार ने प्राथमिक स्कूल के लिए प्रति छात्र के लिए प्राप्त राशि से दस गुना अधिक बढ़ाकर 164 अमरीकी डॉलर की क्षतिपूर्ति की। गरीबी के कारण केवल कुछ ही छात्रा माध्यमिक स्कूल में प्रवेश ले पाते थे इसलिए इस नीति से उन छात्रों को अधिक लाभ पहुंचा।

समाज, संस्कृति आर्थिक बाधओं में गहरी पैठ जैसे बाल विवाह ने युवतियों को अपनी शिक्षा जारी रखने में आमतौर पर बाध उत्पन्न की। मां बनने के बाद ज्यादातर को शिक्षा छोड़नी पड़ती है और उन्हें वापस स्कूल जाने में अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। 15 से 19 वर्ष आयुवर्ग की दस में एक महिला ही उप-सहारा, लैटिन अमरीकी और दक्षिणी एशिया क्षेत्र में गर्भ धरण करती है या मां बनती है लेकिन यह अनुपात बांग्लादेश, लाइबेरिया और मोजाम्बिक में 30% अधिक है।

यहां तक कि जिन देशों में युवा माताओं को शिक्षा प्राप्त करने का कानूनी अधिकार है वहां पर भी उस अधिकार का लाभ प्राप्त करने के लिए उन्हें सशक्त किया जाता है। जमैका में, फाउंडेशन गर्भवती लड़कियों और बच्चे को जन्म देने के बाद 16 वर्ष से कम उम्र वाली गरीब माताओं को पुन: स्कूल में जाने के लिए भोजन और परिवहन का खर्च दिया जाता है। इस कार्यक्रम के द्वारा हाई स्कूल में युवा माताओं की संख्या में 20% से 32% की वृद्धि डिलिट हुई है।

माध्यमिक शिक्षा को कार्य क्षेत्र के अधिक प्रांसगिक बनाना

माध्यमिक शिक्षा आधर कौशल निर्माण के लिए दी जानी चाहिए और सभी युवाओं को हस्तांतरणीय और तकनीकी वे व्यावसायिक कौशल का विकास अच्छी नौकरी खोजने या आगे की शिक्षा जारी रखने के लिए समान अवसर दिए जाने चाहिए। निम्न माध्यमिक स्कूल में सामान्य पाठयक्रम मूल कौशल को मजबूत बनाने के लिए बच्चों को समान अवसर प्रदान करने में मदद करता है। जब असफलता का भय लिए बच्चे स्कूल

चित्र 14: कुछ युवा तो माध्यमिक स्तर तक पहुंच ही नहीं पाते और उसमें से बहुते से उसे पूरा नहीं कर पाते हैं

निम्न माध्यमिक सक नामांकन अनुपात और देश में वर्ष वर्ष 2010 तक निम्न से उच्च माध्यमिक शिक्षा के अनुपात प्रगति के लिए स्थानापक

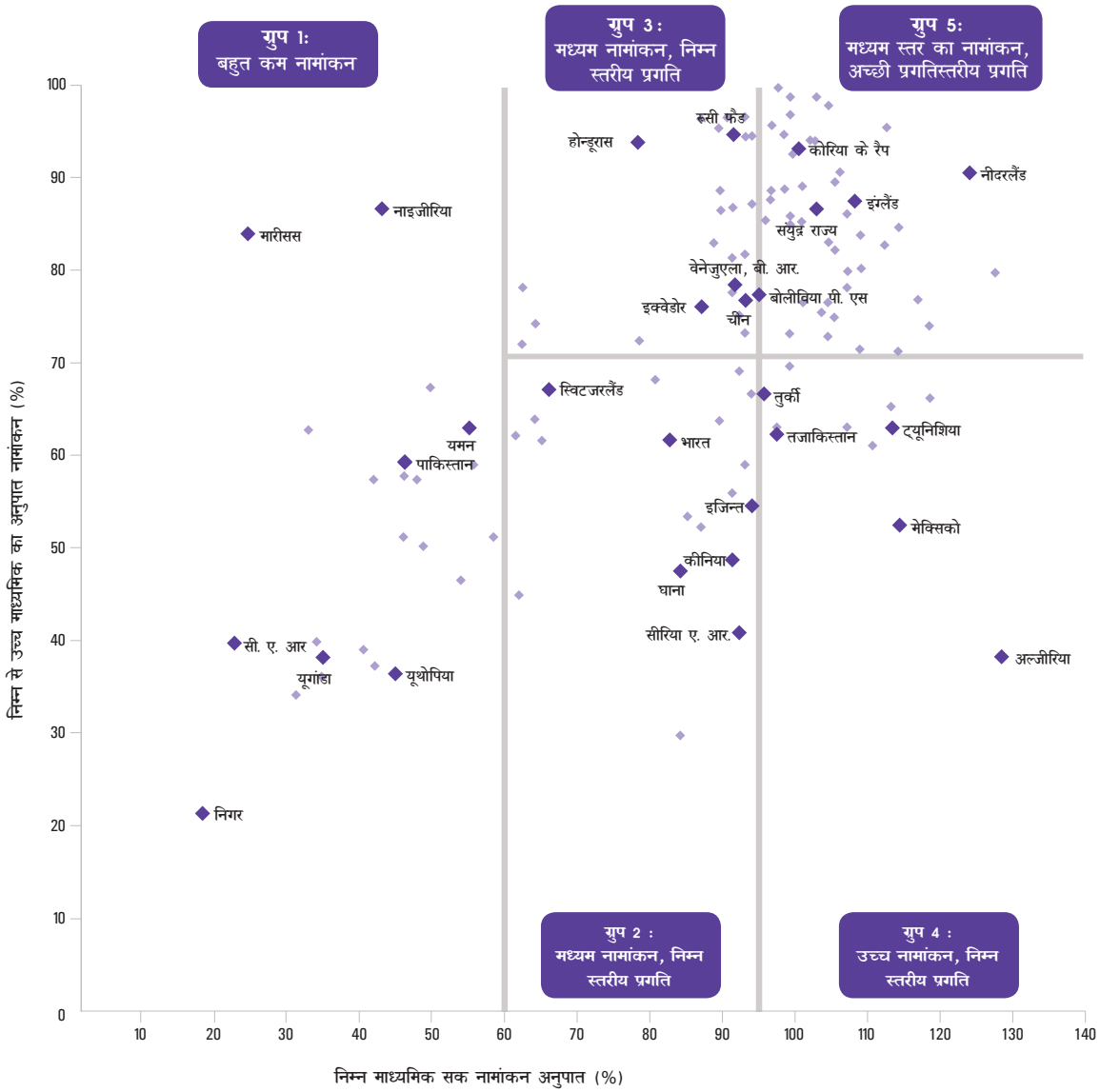

नोट: उच्च माध्यमिक स्कूल की प्रगति दर निम्न माध्यमिक से उच्च माध्यमिक तक प्रगति एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है। इसे उच्च माध्यम से निम्न माध्यम सकल नामांकन अनुपात द्वारा मापा जाता है। आदर्श प्रणाली में सभी निम्न माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी उच्च माध्यमिक की ओर जाते है, तो उनका अनुपात 1% के बराबर होता है। होंडुरास का निम्न माध्यमिक सकल नामांकन अनुपात 75% है और उच्च माध्यमिक स्तर का सकल नामांकन का अनुपात 71% है। प्रगति की दर की गणना 95% की जाती है जो यह दर्शाता है कि अधिकांश वे लोग जिन्हें निम्न माध्यमिक स्तर में जाने का अवसर दिया जाता है वही अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा को जारी रखते हैं। मिश्र में, निम्न माध्यमिक स्तर सकल नामांकन अनुपात 94% है। 51% के उच्च माध्यमिक स्तर के सकल नामांकन अनुपात के साथ, मिस्र की प्रगति दर में निम्न से उच्च माध्यमिक का अनुपात लगभग 0.54 (51/94)। इसका अर्थ है कि जब अधिकांश युवा लोगों को निम्न माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है, तो उनमें से केवल 50% लोग ही अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा को जार रखते हैं।
स्रोत: संलग्नक तालिका 7

में जाते हैं तो उनकी अपेक्षाएं, कम स्फूर्तिदायक सीखने का वातावरण और सहपाठी का प्रभाव उनके सीखने की उपलब्धि को आमतौर पर समाप्त कर देता है। इस कारण से, न्यून एवं मध्य आय वाले देशों में जैसे बोत्सवाना, घाना, दक्षिण अफ्रीका और युगांडा ने नई आकलन नीतियों, प्रशिक्षण सामग्रियों और अध्यापक प्रशिक्षण गतिविधियों के साथ साथ सामान्य पाठयचर्या की रूपरेखा का विकास किया है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर, युवाओं को स्कूल से काम में सुचारू परिवर्तन करने हेतु हस्तांतरणीय कौशल, विशेष व्यवसाय या कार्य क्षेत्रों के लिए व्यावसायिक कौशल सीखने की आवश्यकता होती है। इन सभी कौशल का समान रूप से संयोजन और स्थानीय बाजार की जरूरतों के अनुकूल बनाना पाठयक्रम को अच्छा संतुलन प्रदान करता है जिससे की सभी लोगों को समान लाभ प्राप्त हो सके।

विद्यार्थियों को दी जाने वाली निम्न स्तरीय तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा सामाजिक रूप से असमान एवं कमजोर बना सकते हैं

विद्यार्थियों को दी जाने वाली निम्नस्तरीय तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण सामाजिक रूप से असमान एवं कमजोर बना सकती है जिसके कारण कर्मचारी इन कार्यक्रमों कम महत्व देना शुरू कर देंगे। वर्ष 2009 के पीआईएसए सर्वे में बाइस में से अट्ठारह देशों का सामाजिक आर्थिक शिक्षा का औसतन निम्न स्तरीय था। इनमें से चार देशों के माध्यमिक सामान्य शिक्षा और तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा का अंतर बहुत अधिक था जिसमें से तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा से वंचित लोगों का समूह बहुत बड़ा था।

ओईसीडी देशों का अनुभव है कि तकनीकी एवं व्यावसायिक विषयों को सामान्य विषयों के साथ लागू किया जाता है और श्रम बाजार के अधिक प्रासंगिक बनाया जाता है तो उनके नामांकन और समाप्ति की दर में वृद्धि संभव है।

विषयों के संबंध में उच्च माध्यम के पाठ्क्रम को अधिक लचीला बनाया जाए और अग्रिम शिक्षा को रास्ता प्रदान करके सभी विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त हो सकता है जैसे सिंगापुर के अनुभव से सिद्ध हो चुका है। हालांकि इस उपागम में काफी बाधाएं हैं। बहुत से विकासशील देशों में इस प्रकार का लचीलेपन को प्रभावी ढ़ंग से लागू करने के लिए संसाधनों, सामग्रियों और कुशल शिक्षकों का अभाव है। घाना में विविध ता वाला माध्यमिक पाठयक्रम लागू करने के पास, व्यावसायिक पाठयक्रमों में 50% की वृद्धि हुई है लेकिन नए पाठ्यक्रम कराने का व्यय ग्रामीण स्कूलों में शहरी स्कूलों की तुलना में बीस गुना अधिक था फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी। यदि तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा देने के लिए कुशल एवं योग्य शिक्षक उपलब्ध कराना संभव नहीं है तो ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए संसाधनों का समान रूप से वितरण निम्न श्रेणी की गुणवत्ता के प्रशिक्षण के साथ समाप्त हो सकता है।

स्कूल और कार्य के बीच संबंध को मजबूत बनाना

कॉलेज एवं स्कूलों में, वे इससे भी बढ़कर कुछ करना चाहिए केवल वहां जाकर कुछ समय बिताना और कुछ अनुभव प्राप्त करना। उन्हें इस काम को इस प्रकार से करना चाहिए जैसे कि वे स्कूल में दो दिन और नियोजन हेतु तीन दिन अध्ययन कर चुके हैं तथा उन्हें इसके बीच संतुलन भी स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार से आप स्कूल में जाकर वह सीख सकेंगे जो आपको सीखना चाहिए और आप वहां पर कुछ अनुभव प्राप्त करने के लिए जाते हैं।

– युवा महिला, यूनाइटेड किंगडम

स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों से आमतौर पर कहा जाता है कि वे इस नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं क्योंकि उन्हें कार्य करने का कोई अनुभव नहीं है। स्कूल की शिक्षा को कार्य आधारित कार्यक्रमों के साथ इंटर्नशिप और प्रशिक्षुता के साथ

जोड़ने ने युवा लोगों को व्यवहारिक समस्या को सीखने की संभावना है–जैसे निवारण करने का कौशल और महत्वपूर्ण कौशल का अभ्यास। कुछ संदर्भो में, प्रशिक्षुता विशेष रूप से सफल रहा है। उदाहरण के लिए जर्मन डुअल मॉडल ने कंपनी और पार्ट–टाइम क्लासरूम ट्यूशन में संरचनात्मक प्रशिक्षण को जोड़ता है। यह जर्मनी में सरकार, नियोक्ताओं तथा कर्मचारियों के बीच मजबूत विनियमन और भागीदारी के कारण काम कर रहा है।

प्रशिक्षुता द्वारा आमतौर पर रोजगार को जन्म देने के कारण वे युवा लोगों को स्कूल में रहने और अपनी शिक्षा को पूरा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। फ्रांस में प्रशिक्षुता को पूरा करने के तीन वर्ष बाद रोजगार की संभावना को बढ़ा देता है।

प्रशिक्षुता के माध्यम से वंचित लोग विशेष रूप से लाभ प्राप्त कर सकते हैं लेकिन प्रशिक्षुता कार्यक्रम भेदभावपूर्ण हो सकते हैं। यूनाइटेड किंगडम में 32% काले लोग और अन्य मूल के अल्पसंख्यक युवा लोग प्रशिक्षुता करते हैं जबकि 44% गोरे लोग प्रशिक्षुता करते हैं। महिलाएं प्रशिक्षुता में कम ही नजर आती हैं और और उन्हें पुरुषों की तुलना में 21% अवसर प्राप्त होते हैं। व्यवसाय परामर्श भी वंचित युवा लोगों की प्रशिक्षुता करने या अनुभव के तौर पर कार्य परिवर्तन को आसान बनाना जिसे जापान दिखा चुका है।

औपचारिक प्रशिक्षुता को गरीब देशों में लागू करना और भी अधिक मुश्किल होता है लेकिन उपयुक्त दशाओं के अंतर्गत काम कर सकता है। मिश्र ने अपने संदर्भ में जर्मन के मॉडल को व्यवसायिक संस्थानों के साथ अंगीकार किया जो स्थानिक प्रशिक्षण देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस कार्यक्रम को करने वाले एक तिहाई स्नातक युवा तत्काल कार्य खोजने में सफल रहे और लगभग 40% अपनी अगली शिक्षा को जारी रखा। हालांकि, इस प्रकार की प्रणालियां विशेष रूप से सरकार और नियोक्ताओं के भरोसे चलती हैं जिन्हें कम आय वाले उन देशों में खोजना आसान नहीं जिनमें बड़ी मात्रा में अनौपचारिक क्षेत्र होता है।

सभी के लिए हस्तांतरणी कौशलः एक मनचाहा लेकिन चुनौतीपूर्ण लक्ष्य

स्कूल में प्राप्त ज्ञान को विषय के ज्ञान से आगे बढ़ाने की आवश्यकता होती है। असल कार्य परिस्थितियों में ज्ञान को लागू करके, विश्लेषण और समस्याओं का समाधान तथा सहकर्मियों के बीच सामन्जस्य स्थापित करना सभी कौशल विकास महत्वपूर्ण कारक हैं जिनकी आवश्यकता युवा लोगों को होती है यदि उन्हें वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में अच्छी नौकरियां प्राप्त करनी हैं जो विशेष रूप से तकनीकी द्वारा संचालित होती हैं। इसकी पहचान करके कुछ देश हस्तांतरणीय कौशल को उनके पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए डेनमार्क, न्यूजीलैंड और हांगकांग (चीन) सभी समस्या समाधान को मुख्य पाठ्यक्रम की विशेषता के रूप में निर्दिष्ट करते हैं।

शिक्षा में आटीसीटी का उपयोग विश्व में गति प्रदान कर रहा है। यह केवल शिक्षण के अनुभव में ही सुधार नहीं लाता है और हार मान लेने में कमी ही नहीं लाता है अपितु युवा लोगों को काम के लिए तैयार भी करता है। कुछ स्कूलों के लिए कंप्यूटर कीमती हो सकता है या कंप्यूटर का अभाव हो सकता है, विशेष रूप से गरीब देशों में लेकिन दूरवर्ती क्षेत्रों में रेडियो और मोबाइल फोन की पहुंच दूर–दूर तक होती है। उदाहरण के लिए होन्डूरस और दक्षिणी सूडान में उपयोग किए जाने के रूप में परस्पर रेडियो अनुदेश वंचित ग्रुपों को कम कीमत पर शिक्षा में सुधार के अवसर प्रदान करता है। इसके उपयोग ने प्रदर्शन में 20% की वृद्धि की है।

जल्दी से स्कूल छोड़ने वाले युवाओं के लिए वैकल्पिक रास्ते प्रदान करना

बड़ी संख्या में मध्य एवं उच्च आय वाले देशों के युवा लोग अपनी स्कूली माध्यमिक शिक्षा को पूरा करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं। जल्दी स्कूल छोड़ने वाले युवा गरीब या वंचित परिवारों से होते हैं। उन्हें अपनी शिक्षा को जारी रखने के लिए लक्षित मदद की आवश्यकता होती है ताकि रोजगार के अवसरों से उन्हें प्राप्त होने वाली योग्यता और कौशल लाभ को प्राप्त करें।

नीदरलैंड एवं फिलपीन्स में स्कूल छोड़ने वाले युवाओं के लिए लचीले माध्यमों को उनके अपने जोखिम पर अंगीकृत किया है जैसे स्कूल वर्ष में किसी भी समय पुनः प्रवेश की अनुमति। न्यूयार्क शहर में 17 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के पांच में से एक युवा ना तो स्कूल में है और न ही वह काम करता है। इंटर्नशिप, व्यक्तिगत परामर्श और कार्यशालाओं के भुगतान हेतु पड़ोस के कमजोर युवाओं के लिए दो कार्यक्रम तैयार किए हैं। इस प्रस्ताव से नौ महीने तक आधा कार्य मिला और फाउंडेशन कौशल के पाठ्यक्रमों को सीखने के लिए पांचवीं बार पुनः प्रवेश दिया जाता है।

माध्यमिक स्कूल के बाद वैकल्पिक रूप से प्राप्त कौशल जैसे की ओपन एवं पत्राचार और सामुदायिक प्रशिक्षण केंद्रों को श्रम बाजार जरूरतों के अनुसार ध्यानपूर्वक ढ़ंग से एकताल में काम करना और लंबे समय तक वित्तीय प्रतिबद्धता मिलना आवश्यक है जिसकी पहचान औपचारिक रूप से कर्मचारियों के द्वारा की जाती है।

राष्ट्रीय योग्यता रूपरेखा युवाओं द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर प्राप्त जानकारी को नियोक्ताओं को प्रदान कर सकता है जो वैकल्पिक शिक्षा के मार्ग का अनुसरण करते हैं। यदि उसे ध्यानपूर्वक ढ़ंग से डिजाइन किया जाता है तो औपचारिक माध्यमिक शिक्षा के अतिरिक्त खंडित मानक और योग्यता प्रणालियों को विशेष रूप से स्पष्टता प्रदान करता है। हालांकि उन्हें प्रभावी ढ़ंग से लागू करना आसान नहीं है। इसके लिए इच्छुक पक्षों जैसे सरकार, शिक्षण संस्थान, कर्मचारियों और व्यापार यूनियनों के बीच घनिष्ट सहयोग होना चाहिए।

यूनाइटेड किंगडम में, स्त्रीप्रशिक्षुता का प्रतिशत पुरूषों की तुलना में 21% कम है

नगरीय युवाओं के लिए कौशलः बेहतरीन भविष्य का अवसर

आज इतिहास के सबसे अधिक युवाओं की जनसंख्या नगरों में निवास करती है और अभी भी उस संख्या में निरंतर विकास हो रही है जो पुरानी पीढ़ी से बेहतर शिक्षित है और राजनैतिक सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक विकास के लिए शक्तिशाली कार्यबल का प्रतिनिधित्व करती है। प्राकृतिक बढ़ोत्तरी और ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवास के कारण अगले तीस वर्षों में विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या का विकास नगरों में होने का अनुमान है और वर्ष 2040 तक सभी विकासशील क्षेत्रों अधिकांश लोग ग्रामीण क्षेत्रों की बजाय शहरी क्षेत्रों में रहेंगे।

इनमें देशों के बीस प्रतिशत नगरीय युवा लोगों की शिक्षा का स्तर निम्न होता है

कई शहरी गरीब लोगों को मूल कौशल प्राप्त नहीं होता है

नगर की आबादी तेजी के साथ बढ़ने के कारण नगर की गरीबी को बढ़ा दिया है, झुग्गियों और अनौपचारिक निवासों के विकास को बढ़ावा मिला है। नगरों में रहने वाले तीन में एक लोग झुग्गी में रहते हैं और अफ्रीका के उप-सहारा क्षेत्रों में इस संख्या में दो तिहाई का विकास हो रहा है। कुल मिलाकर वर्तमान समय में 800 मिलियन से अधिक की आबादी झुग्गियों में रहती है। एक आंकड़े के अनुसार वर्ष 2020 तक इस आबादी 889 मिलियन होने की उम्मीद है। इस प्रकार के आवास में युवा लोगों के निवास का बड़ा अनुपात है। कौशल प्रशिक्षण एवं कार्य खराब परिस्थितियों में एक विकल्प प्रदान कर सकता है जिसके अंतर्गत वे रहते हैं और बढ़िया नौकरियां खोजने के लिए संघर्ष करते हैं।

नगरीय गरीबों में शिक्षा का निम्न स्तर को आमतौर पर नजरअंदाज किया है। नगरीय क्षेत्रों में असमानता आमतौर पर अत्याधिक है जिसके अंतर्गत झुग्गियों में रहने वाले लोग ग्रामीण गरीबों की तुलना में बहुत बढ़िया जीवन व्यतीत नहीं करते हैं और नगरीय गरीबी को काफी हद तक कम महत्व दिया जाता है।

जबकि विकासशील देशों के नगरों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना नगरों में शिक्षा के अवसर अधिक हैं। नगरीय गरीबों और ग्रामीण गरीबों के मूलभूत कौशल में अंतर बहुत अधिक नहीं है। पैंतालीस निम्न और मध्य आय वाले देशों में, नगरीय अमीरों का स्तर नगरीय गरीबों की तुलना में काफी अच्छा होता है जो कम से कम माध्यमिक तक की शिक्षा को जारी रखते हैं। इन दस देशों में 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के युवा लोग मूलभूत कौशल ग्रामीण गरीबों में नगरीय गरीबों के कौशल का स्तर काफी अधिक है। (चित्र 15)

उदाहरण के लिए कम्बोडिया में 90% नगरीय गरीब युवा लोगों ने अपनी निम्न माध्यमिक शिक्षा को पूरा नहीं किया है जो कुल ग्रामी ग्रामीण की तुलना में 82प्रतिशत है और जिसमें से 31% नगरीय अमीर हैं। कीनिया के, नेरौबी नगर में लोग झुग्गियों में रहते हैं और झुग्गियों में माध्यमिक स्कूलों के अभाव के कारण युवाओं की औपचारिक शिक्षा का स्तर निम्न है जो उनको अच्छी नौकरी खोजने के अवसरों के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है।

नगरीय युवाओं के लिए रोजगार काफी अनियमित है

नौकरी खोजना बड़ा मुश्किल काम है। काम एक सप्ताह से अधिक समय के लिए नहीं मिलता है। मैं प्रतिदिन 30 बिर (1.70 अमेरिकी डालर), कमाता हूं।

– युवा पुरूष, यूथोपिया

नगरीय गरीबों के कौशल एवं शिक्षा के अभाव के कारण वे छोटे और बहुत छोटे कारोबार को अनौपचारिक रूप से चलाते हैं जिसका कोई व्यापारिक रिकॉर्ड, कानूनी स्थिति या विनियमन नहीं होता है। इस प्रकार के अनौपचारिक कार्यो के अंतर्गत जीविका निर्वाह की गतिविधियां जैसे कूड़ा-कचरा उठाने वाले

चित्र 15: नगरीय अमीर एवं गरीब लोगों के बीच बड़ी असमानता

कुछ देशों में अभी उपलब्ध जानकारी 15-से-24 वर्ष आयु वर्ग के अधिकांश लोग अपनी माध्यमिक की शिक्षा को धन और स्थान के अभाव के कारण पूरा ही नहीं करते हैं।

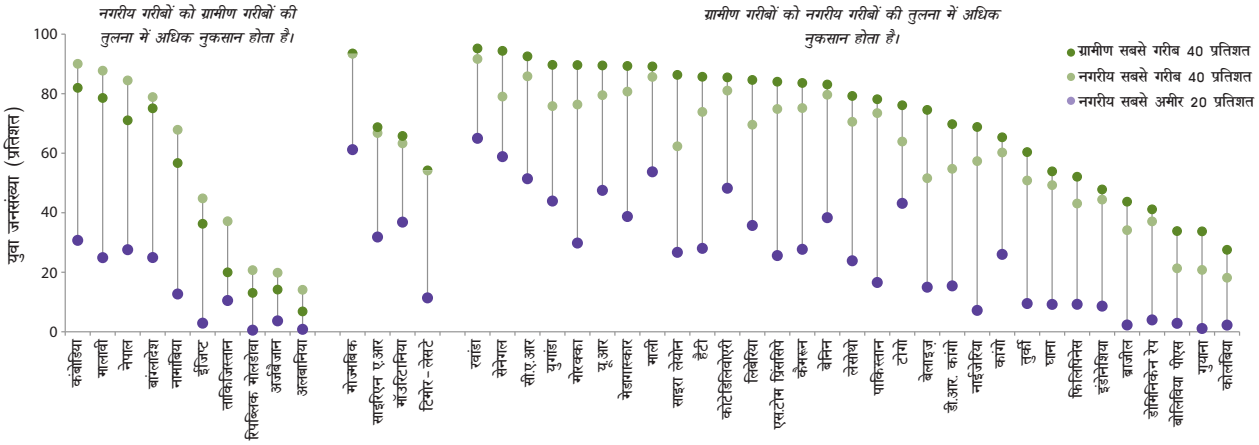

स्रोत: यूआईएस (2012ए)

लोग और गलियों में रेहड़ी लगाने वाले लोग तथा सिलाई, कार की मरम्मत, निर्माण, खेत में काम करने वाले, शिल्प का काम करने वाले लोग शामिल हैं। अनौपचारिक और अनियमित कार्यों में आमतौर पर बहुत कम वेतन मिलता है और काम करने की स्थिति बहुत दयनीय होती है।

विश्व स्तर पर बहुत बड़ी जनसंख्या कमजोर, अनियमित होने के कारण उनकी सही–सहीं जांच कर पाना संभव नहीं है फिर भी अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान 1.53 बिलियन है। उप–सहारा वाले अफ्रीकी क्षेत्रों में 70% से अधिक रोजगार गैर–कृषि वाले अनौपचारिक क्षेत्र से प्राप्त होता है और लैटिन अमरीका में 50% से अधिक देशों में प्राप्त होता है। दक्षिणी और पश्चिमी एशिया के मजदूरों का यह मुख्य कार्य भी है।

शिक्षा और श्रम बाजार में भेदभाव के कारण कुछ समूह इससे वंचित रह जाते हैं। बहुत से मामलों में युवा महिलाएं दूर तक यात्रा नहीं कर सकते हैं और उन्हें शिक्षा या प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है और साथ ही उन्हें अच्छा काम भी नहीं मिलता है जबकि उन्हें बहुत अधिक घरेलू काम बिना वेतन वाला करना पड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के हाल ही के सर्वे के अनुसार उन्तालीस में से पच्चीस देशों में महिलाएं पुरूषों की तुलना में अधिक अनौपचारिक क्षेत्र या अनौपचारिक रूप से रोजगार में लगी हैं। ऐसे कार्य जो महिलाओं को काम करने के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है: अधिकांश महिलाएं घरों में ही काम करती हैं और महिलाएं अधिकांश औपचारिक और असुरक्षित कार्य नहीं करती हैं जैसे कूड़ा–उठाना और गली में ठेला लगाना। उनकी आय भी पुरूषों की तुलना में कम होती है। उदाहरण के लिए ग्रेटर ब्यूनेस एयर्स में अनौपचारिक कंपनियों में लगी महिलाओं को पुरुषों की तुलना में 20% कम वेतन दिया जाता है।

अनौपचारिक क्षेत्र अधिक बढ़िया विकल्प हो सकता है जब युवा लोग कौशल उपयुक्त होता है। पश्चिमी अफ्रीका की सात राजधानियों में अनौपचारिक क्षेत्र के कर्मचारी जो अपनी प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा पूरी कर चुके हैं। अधिकांश मामलों में योग्यताहीन वाले युवाओं की तुलना योग्यताधारी युवा 20% से 50% अधिक कमा सकते हैं। लेकिन बहुत से लोगों में अनौपचारिक क्षेत्र में जाने के लिए मूल कौशल का अभाव होता है। रवांडा में, वर्ष 2006 में, अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले केवल 12% लोगों ने ही निम्न माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की थी जो अनौपचारिक क्षेत्र की तुलना में 40% था।

वंचित युवाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण के अवसरों का विस्तार

आर्थिक मंदी जारी रहने के प्रभावों के बावजूद, कम कुशल औपाचारिक नौकरियों में गरीबी रेखा से नीचे के युवा लोगों का वेतन में नामात्रा की वृद्धि हुई है। वे राष्ट्रीय कौशल विकास कार्यनीतियों का मुख्य चिंता का विषय होना चाहिए फिर भी यह बहुत कम ही हो सका है। इस रिपोर्ट के लिए आयोजित छियालीस विकासशील देशों की समीक्षा यह दर्शाती है कि उनमें से अधिकांश देशों में राष्ट्रीय कौशल विकास कार्यनीति नहीं है जिससे कि नगरीय औपचारिक क्षेत्र का स्पष्ट रूप से पता किया जा सके।

भारत इस प्रकार के कुछ उन देशों में से एक है जो इस प्रकार की समस्या का सामना कर रहा है, ने औपचारिक कर्मचारियों पर आधारित कार्यनीति का विकास किया है। उन्होंने ठेला विक्रेताओं के लिए राष्ट्रीय नीति का विकास भी किया है जिसका मानना है कि भारत के 10 मिलियन ठेले पर सामान बेचने अतिसूक्ष्म कारोबार चलाते हैं। उन्हें अपने तकनीकी कौशल और व्यावसायिक कौशल के विकास के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे अपनी आय को बढ़ा सकें और वैकल्पिक कार्य की तलाश कर सकें।

पहला इन कार्यक्रमों का दूसरा महत्वपूर्ण भाग है शहरी गरीबों को शिक्षित बनाना और उनके कौशल का विकास करना। हालांकि गैर सरकारी संगठनों के द्वारा इस प्रकार की बहुत से नूतनकारी तरीके अपनाए जा रहे हैं, दूसरा विश्व के भागों में अवसर जहां पर उनकी मांग की मात्रा बहुत कम है। उनकी हालत बहुत खराब है और सरकारों को आमतौर पर उन गतिविधियों के बारे में बहुत कम जानकारी है।

15 से 24 आयुवर्ग के लोगों के मूल कौशल में विकास कर और उसे व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ जोड़कर उनकी सुरक्षित कार्य खोजने में मदद कर सकता है। नेपाल में स्कूल नहीं जाने वाले युवा लोगों के लिए रोजगार परियोजना हेतु प्रशिक्षण इस प्रकार का ही कार्यक्रम है। इसके द्वारा अधिकारहीन समूहों तक पहुंचा जा सका – जिसमें 66% विद्यार्थी वंचित जातियों या नस्ली अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित थे। 206 परियोजना स्नातकों की शोध रिपोर्ट से पता लगा कि उनमें 73% को रोजगार मिल गया।

कौशल प्रशिक्षण देने का सबसे प्रभावी तरीका है कि उसे माइक्रोफाइनांस या सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के साथ जोड़ना जो लाभग्राहियों को अल्पावधि में गरीबी की बाधा से छुटकारा दिला सके। चाइल सोलिडेरियो में वर्ष 2002 में कैश ट्रांसफर को दूसरे प्रकार की मदद के रूप में लागू किया जिसके अंतर्गत रोजगार की क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रशिक्षण हेतु वैकल्पिक चयन को यह ध्यान में रखते हुए शामिल किया गया कि कम शिक्षित गरीब महिलाएं जिन्हें या तो पेशेवर अनुभव कम था या बिल्कुल नहीं था। महिलाओं में रोजगार में लगभग छियालीस प्रतिशत की वृद्धि हुई जिन्होंने वर्ष 2005 में इन कार्यक्रमों में हिस्सा लिया के द्वारा कुछ हद तक शिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा उनकी भागीदारी में वृद्धि हुई।

इस प्रकार के कार्यक्रम जीवन कौशल, नौकरी की तलाश में सहायता, परामर्श और समान रोजगार के अवसर बढाने की सूचना के साथ साथ मूल या विशेष व्यवसाय में कक्षा में प्रशिक्षण और कार्य अनुभव प्रदान करता है जो विश्व के कुछ बागों में सफल रहे हैं, विशेषकर लैटिन अमरीका और कैरिबियाई देशों में। इन कार्यक्रमों का लाभ वंचित नगरीय युवाओं को मिला, विशेषकर युवा महिलाओं विशेष सफलता मिली। कोलम्बिया में, महिलाओं की मजदूरी जिन्होंने जोवेन ओं

चिली में प्रशिक्षण के साथ नकदी हस्तांतरण से महिलाओं के लिए रोजगार में वृद्धि हुई

© Sven Torfinn/PANOS

घाना में 47% सबसे अमीरों की तुलना में केवल 11% सबसे गरीबों ने ही प्रशिक्षुता की

ऐसिओन प्रोग्राम को पूरा किया उनकी मजदूरी में लगभग 20% की वृद्धि हुई। कक्षा प्रशिक्षण और विभिन्न गतिविधियों में कार्यस्थल प्रशिक्षण के फलस्वरूप उनके औपचारिक रोजगार में वृद्धि के अवसर बढ़े जो श्रम बाजार में विशेष रूप से मांग के साथ जुड़े हुए थे। पेरु में, प्रो जोवेन कार्यक्रम पुरूषों को 13% और महिलाओं को 21% तक काम तलाशने के अवसरों में सुधार हुआ।

लैटिन अमरीकी देशों में अधिकांश जोवेन्स प्रोग्रामों को राष्ट्रीय सार्वजनिक प्रशिक्षण संस्थानों में समन्वित किया गया या उसी प्रकार के अन्य अवरोधों के साथ स्थानांतरित किया गया विशेष रूप से इंट्रा 21 । उन्होंने अन्य दूसरे देशों को उपयोगी मॉडल प्रदान किए जिसके अंतर्गत अरब देश शामिल हैं जो यह दर्शाते हैं कि इन कार्यक्रमों के द्वारा बहुत से वंचित युवा लोगों के रोजगार के अवसरों में सुधार किया जा सकता है। हालांकि वे महंगे हो सकते हैं और भागीदारी के लिए पर्याप्त कंपनियों की आवश्यकता हो सकती है जो उप-सहारा के भागों में संभव नहीं है जहां पर औपचारिक क्षेत्र में लगे लोगों की संख्या बहुत कम होती है।

वंचित युवाओं के लिए मूल कौशल से बढ़कर

जिन स्थानों पर युवा शहरी लोगों को मूल कौशल का पहले से ही ज्ञान है उन सरकारों को हस्तांतरणी और तकनीकी कौशल के लक्ष्य एवं सहायता प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, विशेषरूप से संभावी विकास वाले छोटे एवं मध्यम आकार वाले अनौपचारिक व्यवसाय में। परंपरागत प्रशिक्षुता एक अन्य माध्यम है जिस तक बड़ी संख्या में औपचारिक क्षेत्र में लगे लोग पहुंच स्थापित कर सकते हैं। वह सस्ता हो सकता है, तात्कालिक व्यवहारिक प्रासंगिकता हो सकती है और आमतौर पर रोजगार जन्य हो सकता है।

हालांकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रशिक्षुता प्रशिक्षण के लिए पहुंच समान हो। घाना में, केवल 11% गरीब युवा लोग प्रशिक्षुता करते हल जबकि इसके विपरीत 47% अमीर लोग प्रशिक्षुता करते हैं। उसी प्रकार से, प्रशिक्षुता आमतौर पर पुरूष कार्मिकों के लिए आसान है और महिलाएं इस प्रशिक्षण वंचित रह जाती हैं।

इन सुधारों का उद्देश्य पारंपरिक शिक्षुता को एक दोहरी शिक्षुता प्रणाली में बदलने के लिए उद्देश्य से अनेकों देशों में 1990 और 2000 के दशक में विकसित किया गया जैसेकि बेनिन और टोगो। उन्होंने व्यावहारिक शिक्षा को सैद्धांतिक शिक्षा के साथ जोड़ा। इस लक्ष्य के लिए सरकार, अनौपचारिक कार्मिकों का प्रतिनिधित्व करने वाले समूहों और प्रशिक्षुता करने की इच्छा करने वाले कारीगरों समझौते की आवश्यकता होती है। यदि इसे सफलतापूर्वक लागू कर दिया जाता है तो, दोहरी शिक्षुता राष्ट्रीय तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्रणालियों के एक प्रभावी और टिकाऊ हिस्सा बन सकता है। उदाहरण के लिए बुरकीना फासो में उक्त प्रशिक्षुता के लिए औपचारिक प्रशिक्षण पाठयक्रमों की तुलना में लगभग एक-तिहाई व्यय की आवश्यकता थी।

धीरे धीरे पारंपरिक प्रशिक्षुता की पहचान सीमित संस्थागत क्षमता वाले देशों के लिए दोहरी प्रशिक्षुता में पूरी तरह से परिवर्तन की तुलना में अधिक आसान नीति विकल्प हो सकता है जिसका अनुभव कैमरून और सेनेगल की व्याख्या में किया गया है। इस तरह की पहल को विशेष रूप से कारगर हो सकती हैं यदि उसे औपचारिक क्षेत्र संगठनों या अन्य व्यावसायिक संगठनों के सहयोग से डिजाइन एवं लागू किया जाता है।

औपचारिक स्थिति को नियमित अंगीकार में प्रशिक्षुता की शोषण से सुरक्षा के लिए विनियमन शामिल है जो पारंपरिक प्रणालियों में चिंता का आम विषय है। वे दैनिक और और साप्ताहिक काम के घंटे पर सीमाओं को शामिल करते हैं, प्रत्येक व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण के वर्ष में वृद्धि और सुरक्षा के उपाय शामिल हैं। प्रशिक्षुता के कौशल का प्रमाण और राष्ट्रीय योग्यता रूपरेखा के माध्यम से कार्य काम करने का अनुभव आगे जाकर इस प्रशिक्षण के महत्व में वृद्धि कर सकता है उनके रोजगार को बढ़ावा देने को बल प्रदान करता है।

निर्वाह काम का अन्य मार्ग स्व-रोजगार है। अरब देशों और उप-सहारा अफ्रीका के शहरी केंद्रों पर बहुत से युवा लोग इसे एक विकासक्षम विकल्प के रूप में देखते हैं। वर्ष 2008 में, मिस्र में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि लगभग 73% युवा उद्यमी बनकर खुश होंगे। तथापि, उद्यमिता कौशल का गरीब शहरी युवाओं में अभाव है।

बोस्निया, हर्जेगोविना और घाना के अनुभव से पता चलता है कि उद्यमिता प्रशिक्षण का प्रभाव कम हुआ है जहां प्रतिभागियों में मूलभूत कौशल का अभाव है और उन्हें किसी अन्य प्रकार की मदद उपलब्ध नहीं है जैसे व्यवसाय स्थापित करने के लिए आवश्यक संपत्ति जो उन्हें प्राप्त नए कौशल का उपयोग कर सकें।

वंचित शहरी युवाओं को ध्यान में रखते हुए उद्यमिता प्रशिक्षण के पाठयक्रम का डिजाइन को बुनियादी साक्षरता और अनेक कौशल में कारक की आवश्यकता होती है तथा व्यवसाय शुरू करने के लिए इसे संसाधनों के साथ जोड़ता है ताकि युवा लोगों को सफल होने का एक बेहतर मौका दिया जा सके।

ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल – गरीबी से छुटकारा पाने का उपाय

मैं एक ग्रामीण हूं। यह देखने में आया है कि ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है: परिवार अपने बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं। मैंने पढ़ना स्वयं शुरू किया क्योंकि मुझमें इसके प्रति लगाव था। लेकिन एक विद्यार्थी के रूप में आपने पास शैक्षिक सामग्रियां होना आवश्यक है और मैं उसका खर्च वहन नहीं कर सकता हूं।

– युवा पुरूष, यूथोपिया

70% से अधिक गरीब या लगभग 1 बिलियन लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं जिन देशों की आय निम्न या मध्यम स्तर की है। वे उप-सहारा और दक्षिणी एशिया के घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं जहां अधिकांश लोग निम्न स्तर पर खेतीबाड़ी, कम आमदनी वाले मौसमी अनियोजित श्रम या अतिसूक्ष्म उद्यमी गतिविधियों पर आश्रित रहते हैं। विश्व की आबादी नियमित रूप से बढ़ रही है उसके साथ-साथ भोजन की मांग नियमित रूप से बढ़ रही है जबकि भूमि कम होती जा रही है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के युवा कृषि में नई तकनीकी का उपयोग कर सकते हैं और गैर-कृषिकारी कार्य के अधिक अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में युवा महिलाएं युवाओं की तुलना में अधिक वंचित रहती हैं

ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से युवा, खासकर युवा महिलाओं में मूल कौशल का अभाव होता है जिसके कारण युवा पीढ़ी निर्वाह के लिए काम करती है। देशों में लिंग अनुपात का नाम अक्सर लिया जाता है जहां अधिकांश ग्रामीण लोग निम्न माध्यमिक स्कूल की शिक्षा को पूरा नहीं करते हैं। बेनिन, कैमरून, लाइबेरिया और सिएरा लियोन में, 85 युवा ग्रामीण महिलाओं में मूल कौशल का अभाव है जबकि इसकी तुलना में युवा लोगों में यह 70 है। यहां तक की तुर्की में तुर्की में, मध्यम आय वाले देश में, ग्रामीण युवा महिलाओं का 65 है जो अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी नहीं करती हैं जबकि पुरुषों 36 निम्न माध्यमिक शिक्षा पूरी करते हैं। (चित्र 16)

तुर्की में 65% युवा ग्रामीण महिलाएं अपनी निम्न माध्यमिक शिक्षा पूरा नहीं करती हैं

केवल महिला शिक्षा का स्तर ही निम्न नहीं है अपितु बहुत कम परिसंपत्तियां भी हैं और बहुत कम ही प्रवास कर पाती हैं। वे आमतौर पर निम्न कौशल कार्यो के कारण पिछड़ी रह जाती हैं जिसे अन्य लोग करना नहीं चाहते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में युवा लोगों और विशेषकर युवतियों की शिक्षा और कौशल को बढ़ाना से न केवल उनके अवसरों का विस्तार होगा अपितु उनके परिवारों आर्थिक वृद्धि के लिए लाभ के साथ उत्पादकता को भी बढ़ाता है। ग्रामीण चीन में कृषि में शामिल उन लोगों की शिक्षा विशेषकर उच्च है जिन्हें प्राथमिक शिक्षा के बाद की शिक्षा दी जाती है।

आधारभूत कौशल वाले ग्रामीण युवाओं के पास गैर-कृषिकारी कार्य का बेहतर मौका होता है। इस रिपोर्ट का आठ देशों के आधार पर विश्लेषण किया गया जिनमें शिक्षा का स्तर उच्च

चित्र 16: ग्रामीण क्षेत्रों में युवा महिलाओं में मूल कौशल के अभाव की संभावना रहती है
चयनित देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में हाल के वर्ष का निम्न माध्यमिक शिक्षा का लिंग का युवाओं (15 से 24 आयु वर्ग) का प्रतिशत

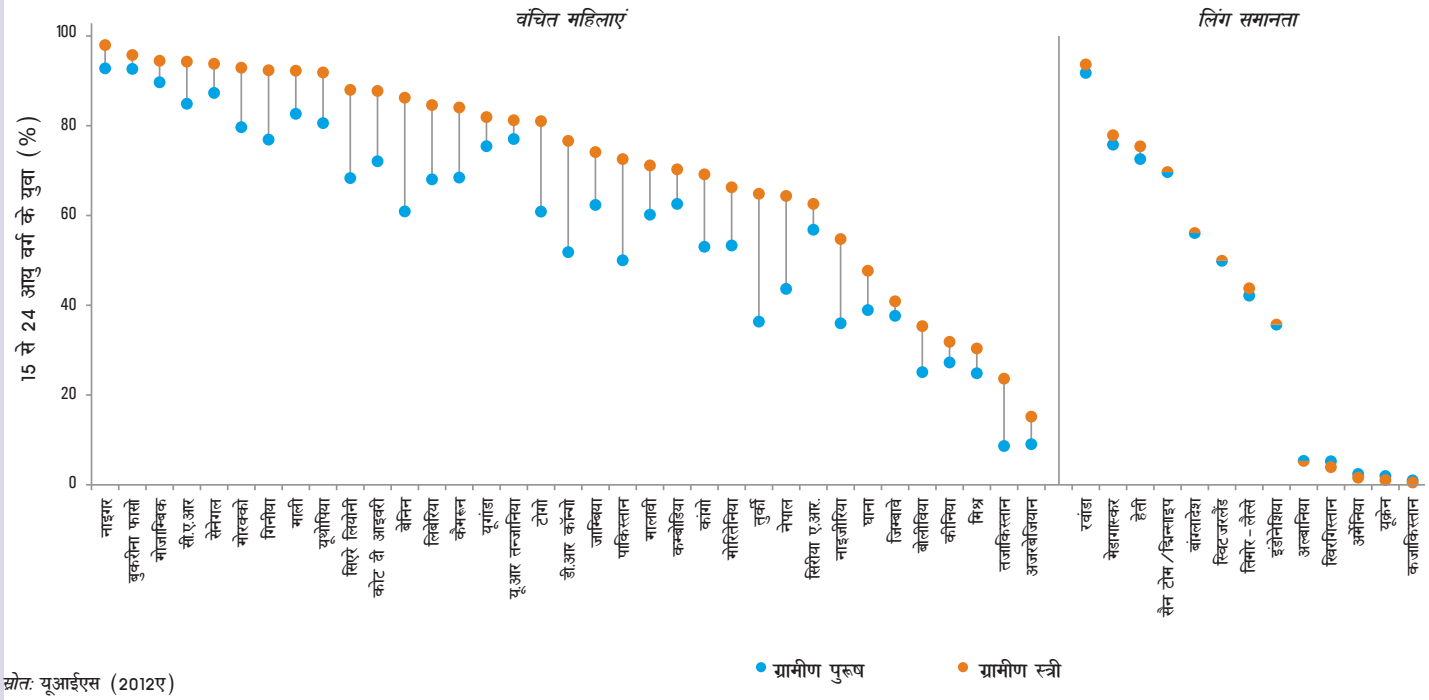

स्रोत: यूआईएस (2012ए)

मालावी में द्वितीय अवसर के कार्यक्रमों ने आमतौर पर प्राइमरी स्कूल की तुलना में बेहतर काम किया है

था में यह पाया गया कि युवा लोग गैर-कृषि कार्यों में अधिक युवा शामिल थे जबकि उसी के समान महिलाओं और पुरुषों का तरीका शामिल है। तुर्की में 23% लोग जो शिक्षित नहीं हैं वे गैर-कृषि कार्यों में लगे हैं उनमें से 40% लोगों ने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की है और 64% लोगों ने कम से कम माध्यमिक तक की शिक्षा प्राप्त की है।

ग्रामीण प्रशिक्षण की जरूरतों का पता लगाना

इस रिपोर्ट के लिए छियालीस देशों की राष्ट्रीय योजनाओं का विश्लेषण किया गया जिसमें से आधे देशों ने ही अपनी राष्ट्रीय योजनाओं में ग्रामीण गरीबों की विशेष प्रशिक्षण और कौशल की जरूरतों के बारे में जानकारी दी। हालांकि जिन देशों ने ग्रामीण गरीबों की आवश्यकता को प्राथमिकता दी उन्हें इसका पारितोषिक मिलेगा। 1970 के दशक से चीन में छोटे किसानों और गैर-कृषिकारी स्व-रोजगार के लिए उत्पादकता पर विशेष ध्यान देकर गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या को कम किया।

यह सुनिश्चित करना कि मूल कौशल सभी युवा लोगों की पहुंच में है, जनसंख्या के विस्तार और शामिल लोगों की संख्या के कारण ग्रामीण क्षेत्र बड़ी चुनौती है। तथापि ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से लाभ नहीं होगा यदि उनमें मूल कौशल का अभाव होता है जिससे कि वे व्यवसाय और कृषि में तकनीकी ज्ञान और समझ का उपयोग कर सकेंगे। औपचारिक प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों का विस्तार और ग्रामीण वातावरण में माध्यमिक स्कूली शिक्षा और उसमें सुधार लाना महत्वपूर्ण प्राथमिकताएं हैं। द्वितीय अवसर के कार्यक्रमों पर भी बल दिया जाना चाहिए जो ग्रामीण लोगों के लिए कृषि और गैर-कृषि कार्यों में कौशल प्रशिक्षण के साथ मूल कौशल भी प्रदान करता है।

मलावी, जहां की 85% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और लगभग आधे बच्चे प्राइमरी स्कूल शिक्षा छोड़ देते हैं वहां पर द्वितीय चरण के कौशल कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम ने उल्लेखनीय सफलता मिली है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए जिन्होंने कभी स्कूल देखा ही नहीं या छोड़ दिया है उनमें से आधी आबादी या तो अपनी शिक्षा पूरी कर रही है या प्राइमरी स्कूल में वापस लौट चुके हैं। प्रतिभागियों को साक्षरता और संख्या वृद्धि में औपचारिक स्कूली शिक्षा की तुलना में काफी अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार की पहल उन बहुत से देशों में बड़ी संख्या में ग्रामीण लोगों के लिए जरूरत है जहां पर शिक्षा का स्तर या तो निम्न या अशिक्षित हैं।

इन कार्यक्रमों में युवा महिलाओं के द्वारा सामना की जाने वाले विशेष कठिनाइयों को सामना करने की जरूरत पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। मिस्र में वर्ष 2008 में, 17 से 22 वर्ष की आयु वर्ग की 20% ग्रामीण महिलाओं ने दो से भी कम वर्ष की स्कूली शिक्षा प्राप्त की है। जिनमें से ज्यादातर की शादी बाल अवस्था में ही कर दी जाती है। इशराक, मिश्र का एक कार्यक्रम, सामाजिक रूढ़िवादिता का प्रत्यक्ष रूप से सामना किया है, ग्रामीण परिवारों, स्थानीय नेताओं और समुदायों में लड़कियों की साक्षरता और कौशल विकास कार्यक्रमों के पीछे उद्देश्य का निर्धारित करने के उद्देश्य से साथ मिलकर काम किया है। इशराक कार्यक्रम के अंतर्गत दस में से नौ पहले स्नातक परीक्षा पास की है।

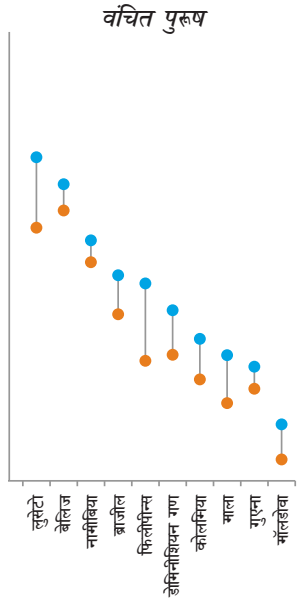

गरीब ग्रामीण महिलाओं हेतु माइक्रोफाइनांस और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों में साक्षरता, गणित ज्ञान और अन्य कौशल का प्रशिक्षण उन्हें गरीबी से बाहर निकालने में उनकी मदद करता है। बांग्लादेश में बीआरएसी और अफ्रीका में कैम्फेड प्रमुख मार्गदर्शक हैं। बीआरएसी ग्रामीण परिवारों को परिसंपत्ति प्रदान करता है जैसे, गाय जिसकी मदद से उन्हें जीविका मिलती है। यह निवेश लाभ में सुधार हेतु माइक्रोफाइनांस और मार्केटिंग में सुरक्षा भी प्रदान करता है। इसके परिणामस्वरूप परिवारों की आय में तीन गुना वृद्धि हुई है। कैम्फेड का प्रमुख लक्ष्य गरीब ग्रामीण किशोर लड़कियां हैं जो उन्हें व्यवसाय प्रबंधन कौशल, अनुदान, माइक्रोलोन और मार्गदरशक सलाह प्रदान करता है। इस माध्यम से महिलाओं को 90% से अधिक लाभ मिला है।

ग्रामीण युवाओं को अतिरिक्त कौशल प्रदान करना

ग्रामीण क्षेत्रों में यह सुनिश्चित करने के लिए काम करना युवा लोगों के लिए आकर्षक है। यह मूल से भी बढ़कर महत्वपूर्ण प्रशिक्षण देता है ताकि छोटे कृषक कृषि की उत्पादकता को बढ़ा सकें और गैर–कृषिकारी कर्मचारी अपने व्यवसाय और वित्तीय कौशल को बढ़ा सकें।

संगठन बनाने से छोटे किसानों को कौशल प्राप्ति में लाभ प्राप्ति में मदद मिलती है जबकि उनकी आम आवाज को मजबूत होती है।

किसानों के कृषि स्कूल और सहकारी समितियां दो ऐसे माध्यम हैं जिन्हें सफलता मिली है। केन्या, युगांडा और संयुक्त गणराज्य तंजानिया में किसानों के कृषि स्कूलों ने महत्वपूर्ण सुधार किया है। यह माध्यम कम शिक्षित लोगों के लिए विशेष रूप से लाभप्रद रहा है। प्रति एकड़ फसल का मूल्य का औसत दीन देशों में लगभग 32% तक बढ़ा है और 253% अशिक्षित लोग सफल रहे हैं जिन्हें कोई औपचारिक ज्ञान नहीं था। आय में 61% की वृद्धि हुई है और 224% वृद्धि उन परिवारों में हुई है जिन्हें बिल्कुल ज्ञान नहीं था।

नए कौशल के उपयोगी शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रभावी तरीका रेडियो और वीडियो का उपयोग करके उसका प्रदर्शन करना है। बुरकीना फासो भारत और नाइजर ने आईसीटी के माध्यम से प्रशिक्षण के द्वारा संभावी लाभों को दिखा दिया है, विशेषकर रेडियो जिसके द्वारा बड़ी संख्या में वंचित लोगों तक पहुंचा जा सकता है।

गैर–कृषि कार्य के लिए अभिनव प्रशिक्षण कार्यक्रमों ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवा लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए लाभकारी हो सकते हैं। वंचित युवाओं को उद्यमिता और छोटे व्यवसाय के लिए कौशल प्रदान करने के लिए उद्देश्य से इस प्रकार के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जैसेकि मूल निवासी युवाओं के लिए लैटिन अमरीका के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े स्तर पर विकास किया है।

मेक्सिको में, जेईआरएफटी (युवा ग्रामीण उद्यमी कार्यक्रम और लैंड फंड) की शुरूआत वर्ष 2004 में युवा लोगों हेतु भूमि के अभाव और युवा ग्रामीण उद्यमियों की नई पीढ़ी की जरूरत के उद्देश्य से की गई। इन कार्यक्रमों का प्रमुख लक्ष्य मूल निवासियों के समूहों को सुचारू एवं लाभकारी कृषि व्यवसाय लाभ पहुंचाना था। प्रतिभागियों को एक वर्ष में अपना आय का पांच गुना लाभ मिला।

चाहे वे कृषि कार्य हों अथवा नहीं फिर भी प्रत्येक स्थान पर प्रशिक्षण लेना आवश्यक है ताकि स्थानीय क्षेत्र के कौशल में अंतर को भरा जा सके। आईएलओ द्वारा डिज़ाइन किए गए इस माध्यम से ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण टीआरईई हेतु प्रशिक्षण श्रम बाजार की मांग को पूरा करने में मदद की जिसे विभिन्न देशों के अलग अलग क्षेत्रों में बहुत सफलता मिली। बांग्लादेश में, इसने गैर–परंपरागत व्यापार जैसे उपकरण और कंप्यूटर की मरम्मत करने में महिलाओं को सफलता मिली है। लिंग समस्याएं और प्रशिक्षु परिवारों के लिए लिंग संवेदीकरण सत्र, समुदाय तथा सहभागी संगठनों में तकनीकी एवं व्यसायिक प्रशिक्षण को जोड़ता है।

उप सहारण अफ्रीका में किसान फिल्ड स्कूल में गरीब किसानों को थोड़ा शिक्षा लाभ

युवा कौशल: बेहतर भविष्य का रास्ता

युवा लोगों के कौशल विकास में मदद के लिए कार्यवाही करना अत्यावश्यक हो गया है। इस रिपोर्ट में उन दस सबसे महत्वपूर्ण उपायों की पहचान की गई है जिन्हें अपनाए जाने की तत्काल आवश्यकता है। इन्हें देश विशेष परिस्थितियों और जरूरतों के अनुरूप बनाया जा सकता है।

1 *उन लोगों को दूसरा अवसर प्रदान करना जिन्हें या शिक्षा का ज्ञान कम है या बिल्कुल नहीं है*

200 मिलियन युवा लोगों को शिक्षा को दूसरा अवसर प्रदान करना जिनका निवास स्थान उन देशों में है जिनकी आय कम या मध्यम है जिन्होंने अपनी प्राथमिक तक की शिक्षा भी पूरी नहीं की है को सहायता और बड़े स्तर पर कार्यक्रमों में धन दिए जाने की आवश्यकता है। सहायता दाताओं की सहायता से, सरकारों को इसे नीति की प्राथमिकता बनाया जाना चाहिए जैसेकि शिक्षा के क्षेत्र में कार्यनीति योजना जिसके द्वारा मूल कौशल के बिना युवा लोगों की संख्या को विशेष रूप से कम किया जा सके। द्वितीय अवसर के लिए वंचित लोगों की संख्या के आधार पर बजट के आवंटन को अभिनिर्धारित किया जाना चाहिए और राष्ट्रीय बजट का पूर्वानुमान को शामिल किया जाना चाहिए।

© Sven Torfinn/PANOS

2 *निम्न माध्यमिक शिक्षा के मार्ग में आने वाले बाधाओं का सामना करना*

बड़ी मात्रा में युवा आबादी वाले देशों में मूल कौशल की बाधाओं का सामना करना जो बहुत से वंचित बच्चों और किशोरों को कम से कम निम्न माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा में भागीदारी और प्रगति से अलग करते हैं। फीस समाप्त करना और लक्षित वित्तीय सहायता प्रदान कर, निम्न माध्यमिक कौ प्राथमिक स्कूलों के साथ जोड़ना, मौलिक कौशल प्रदान करने के लिए सामान्य मूल पाठयक्रम यह सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रदान करना कि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में सरकारी स्कूल और उन तक पहुंच मुख्य उपाय हैं जिसके माध्यम से निम्न माध्यमिक स्कूल तक शिक्षा प्राप्त कनरे में सुधार किया जा सकता है।

स्वीकार योग्य सार्वभौमिक निम्न माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से सभी लोगों को निम्न माध्यमिक शिक्षा के द्वारा प्राप्त होने वाले लाभ को सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 2030 तक का लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिए।

3 *उच्च माध्यमिक शिक्षा को कार्य की प्रासंगिकता में वंचित लोगों के लिए आसान बनाना और उसमें सुधार करना*

उच्च माध्यमिक शिक्षा को श्रम बाजार के अनुरूप कौशल की आवश्यकता के अनुसार ठीक किया जाना चाहिए। सबसे पहले तो विषय विकल्पों के साथ लचीलापन प्रदान करके तकनीकी और व्यावसायिक तथा सामान्य विषयों के बीच एक संतुलन स्थापित करना है।

दूसरा, माध्यमिक विद्यालय पाठयक्रम में सुधारों पर समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षार्थियों की क्षमता विकास हेतु अधिक से अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए तथा श्रम बाजार के लिए आवश्यक कौशल के विकास हेतु शिक्षार्थियों की मदद के लिए आईसीटी की संभाविकता पर जोर देना जिसकी पहचान कार्यस्थल पर की जाती है।

तीसरा, विद्यार्थियों को स्थिति के अनुरूप अवसर प्रदान किए जाने चाहिए जो माध्यमिक शिक्षा छोड़न देने का खतरा है। वंचित युवाओं की शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूरस्थ शिक्षा केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए। वैकल्पिक माध्यमों से प्राप्त किए जाने वाले कौशल को उपयुक्त पहचान दी जानी चाहिए जो वापस शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या उनकी समान माध्यमिक योग्यताएं प्रदान करते हैं जिनकी पहचान कार्यस्थल पर की जाती है।

4 *गरीब शहरी युवाओं को बेहतर रोजगार कौशल प्रशिक्षण दे*

पारंपरिक शिक्षुता प्रणाली पर आधारित लोक हस्तक्षेप निर्माण को मजबूती प्रदान करने के लिए कुशल कारीगरों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, प्रशिक्षुओं की कार्य करने की परिस्थितियों में सुधार किया जाना चाहिए और यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि कौशल को राष्ट्रीय योग्यता रूपरेखा के माध्यम से भी प्रमाणित किया जा सकता है। साथ ही पारंपरिक प्रशिक्षा की यथार्थता का विकास करना, इस प्रकार के उपया करना जिनके द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे व्यापार और उद्योग के मानकों को पूरा करते हैं और वे बेहतरीन रोजगार के लिए बड़े स्तर पर प्रशिक्षुता में सुधार होगा।

कार्यनीतियां युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जो उद्यमिता की इच्छा रखते हैं लेकिन उन्हें रोका नहीं जाना चाहिए। व्यापार शुरू करने के लिए युवाओं को धन उपलब्ध कराने की व्यवस्था के द्वारा उनके कौशल के उपयोग में सफलतापूर्वक सहायता की जा सकती है।

5 *वंचित ग्रामीण क्षेत्रों में नीतियों और कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य*

ग्रामीण युवा लोगों को बड़ी संख्या में लिए मूल कौशल के साथ साथ कृषि तकनीकों में प्रशिक्षण प्राप्त करने का दूसरा अवसर दिया जाना चाहिए जो उनकी उत्पादकता बढ़ाने में मदद कर सके। सहकारिता के द्वारा कृषि स्कूल और प्रशिक्षण जो किसानों की स्थानीय जरूरतों के अनुसार स्थापित किये जाना, विशेष रूप से सफल हैं। यद्यपि बहुत से ग्रामीण युवा खेतीबाड़ी भी करते हैं इसलिए उन्हें उद्यमिता और विद्धीय प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे अपने अवसरों को व्यापक बना सकें। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां पर कृषि की भूमि की कमी होती जा रही है और युवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में रहने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए अवसर प्रदान करते हैं।

6 *सबसे गरीब युवाओं के लिए प्रशिक्षण को सामाजिक सुरक्षा के साथ जोड़ना*

माइक्रोफाइनांस या सामाजिक सुरक्षा को जोड़ना जैसे कि मूल साक्षरता और गणितीय ज्ञान के साथ साथ आजीविका कौशल को नुकसान के बहुमुखी स्वरूप का सामना करने में सफलता के रूप में दिखाया गया है जो युवाओं की गरीबी को रोक सके।

7 *वंचित युवा महिलाओं के प्रशिक्षण को प्राथमिकता देना*

इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करना जिनके द्वारा नुकसान के कारणों का समाधान कर सकते जिसका सामना युवा महिलाएं कर रही हैं, प्रभावी साबित हुआ है। युवा महिलाओं को माइक्रोफाइनांस और आजीविका परिसंपत्ति प्रदान करना और उस परिसंपत्ति का उपयोग आमदनी प्राप्ति के लिए करना जिस कौशल के माध्यम से उन्हें इस परिसंपत्ति की आवश्यकता होती है और उन्हें अपने संसाधनों पर विशेष नियंत्रण प्रदान करता है जिससे कि उन्हें एवं उनके परिवार को लाभ प्राप्त हो सके।

© Jon Yamamoto/UNESCO

8 *युवाओं के लिए अवसर बढ़ाकर संभावी तकनीकी क्षमता का उपयोग करना*

आईसीटी का उपयोग बड़ी संख्या में युवाओं के कौशल प्रशिक्षण के लिए किया जा सकता है। यहां तक कि मूल तकनीकी जैसे रेडियो कौशल प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है विशेष रूप से दूरदराज स्थानों पर रहने वाले ग्रामीण लोगों के लिए। इस प्रकार की प्रणालियों का उपयोग युवा लोगों के प्रशिक्षण के अवसरों को बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए।

9 *मजबूत डेटा संग्रह और कौशल कार्यक्रमों के समन्वय द्वारा योजना में सुधार करना*

सरकार नेतृत्व कौशल प्रशिक्षण और संबंधित कार्यक्रम में शामिल विभिन्न घटकों के समन्वय हेतु महत्वपूर्ण है जो यह सुनिश्चित करता है कि वे सबसे अधिक वंचित युवाओं के लिए राष्ट्रीय प्राथमिकता को दर्शाते हैं। ऐसा करने से विखंडन और प्रयास के दोहराव कम होगा और न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करेगा।

राष्ट्रीय सरकारों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को कौशल विकास कार्यक्रमों तक पहुंच के लिए अधिक बेहतर डेटा की आवश्यकता होगी इसीलिए उन्हें अधिक प्रभावी योजना बनानी होगी। यूनेस्को सांख्यिकी संस्थान को रिपोर्ट करने के लिए निम्न एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा के बारे में बेहतर जानकारी आवश्यक है। इसे रिपोर्ट के अंतर्गत छोड़ने और पूरा करने तथा लिए गए विषयों के बारे में अधिक जानकारी शामिल की जानी चाहिए जैसे अकादमिक एवं तकनीकी तथा व्यवसायिक क्षेत्रों का विवरण युवा/युवतियों के द्वारा चुने के विषयों के आधार पर विश्लेषण किया जा सके।

औपचारिक स्कूल प्रणाली के अतिरिक्त कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे में बेहतर डेटा की भी आवश्यकता होती है जैसेकि कार्यक्रम एवं प्रशिक्षुता के द्वितीय अवसर के डेटा को श्रम बाजा जानकारी डेटा के साथ जोड़ना। संबंधित क्षेत्र में उसकी विशेषज्ञता को ध्यान में रखकर आईएलओ राष्ट्रीय सरकारों से इस प्रकार के डेटा को एकत्रित और प्रसार करने की जिम्मेदारी को उठा सकता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी युवा एवं प्रौढ़ आबादी को अधिक व्यवस्थित ढ़ंग से कौशल विकास के उपाय के हाल के घटनाक्रम तैयार करना चाहिए।

युवाओं को शामिल करना, विशेषकर उन युवाओं को जिन्हें इस योजना से वंचित रखा गया है की पहचान संबंधी बाधाओं और उपयुक्त समाधानों की पहचान करना महत्वपूर्ण है। सरकारों को भी कार्यस्थल पर कौशल प्रशिक्षण हेतु किए जाने वाले प्रयासों की प्रासंगिकता में शामिल होने वाले व्यवसायों और ट्रेड यूनियनों के साथ मिलकर गहनता के साथ काम करने की जरूरत है।

© Sven Torfinn/PANOS

10 *खासकर वंचित युवाओं के प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं के लिए समर्पित विभिन्न स्रोतों से अतिरिक्त धन जुटाना*

सभी युवाओं के लिए संसाधनों को सुनिश्चित बनाना गरीब देशों की तत्काल आवश्यकता है जो निम्न माध्यमिक स्कूली शिक्षा का कम से कम शिक्षा अच्छी के विस्तार की आधारशिला है। राष्ट्रीय सरकारों और सहायता दाताओं को बड़े स्तर पर द्वितीय अवसर वाली शिक्षा पर अतिरिक्त धन की व्यवस्था करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। लगभग 3.1 बिलियन अमेरिकी डालर का व्यय सहायता दाताओं ने फिलहाल छात्रवृणि पर किया है और विकासशील देशों के विद्यार्थियों को दाता देशों में अध्ययन करने के लिए व्यय करने से 8 बिलियन अमेरिकी डालर की सहायता विकासशील देशो को यह सुनिश्चित करने के लिए दी जाएगी कि सभी युवा निम्न माध्यमिक स्कूल शिक्षा को पूरा कर सकें जो उनकी पहुंच में नहीं है।

निजी क्षेत्र अपनी फाउंडेशनों के माध्यम से वंचित युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी सहायता पहुंचा सकते हैं। लेकिन इस तरह की सहायता बड़े स्तर पर उपलब्ध होनी चाहिए उन्हें विशेष रूप से राष्ट्रीय प्राथमिकतों के साथ समन्वित किए जाने की जरूरत है।

सरकारों, सहायता दाताओं और निजी क्षेत्र के उपलब्ध कराया गया प्रशिक्षण धन को वंचित लोगो तक पहुंचाने में कुछ हद तक सफलता मिली है जैसेकि अनियमित क्षेत्र। सरकारों, उद्यमों, दाताओं, ट्रेड यूनियनों, युवा समूहों और अन्य इच्छुक पार्टियों के मध्य समन्वय के साथ साथ अतिरिक्त विण को और अधिक बढ़ाने की संभावना भी है।

युवा और कौशल
शिक्षा का काम में उपयोग

एजुकेशन फॉर ऑल ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट के दसवें संस्करण दर्शाता है कि सभी युवाओं के लिए शिक्षा को यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि सभी युवाओं में कौशल है जिसे उन्हं समृद्धि बनाना है। तथापि, रिपोर्ट के अनुसार पूरे विश्व में लगभग 200 मिलियन युवा ऐसे हैं जो स्कूल जा ही नहीं पाते हैं जिसकी उन्हें जरूरत है। नगरीय क्षेत्रों में रहने वाले बहुते से शहरी गरीब लोग या दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाले समुदाय, विशेष रूप से युवतियां बेरोजगार हैं या कम वेतन पर काम कर रही हैं। उन्हें अपनी क्षमता को सिद्ध करने के लिए दूसरा अवसर दिया जाना चाहिए।

युवा और कौशल: काम के लिए शिक्षा यह दर्शाती है कि सरकारें किस प्रकार से युवाओं को एक बेहतर शुरूआत दे सकती हैं ताकि वे विश्वास के साथ काम की दुनिया का स्वागत कर सकें। यह सभी के लिए शिक्षा को प्राप्त करने हेतु धन की वर्तमान स्थिति की पहचान भी करता है, उन भूमिकाओं को भी चिन्हनांकित करता है जिसके लिए सरकारें, दाता और निजी क्षेत्र नए संसाधन जुटाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और उन्हें अधिक प्रभावी ढ़ंग से उपयोग कर सकते हैं।

यह रिपोर्ट 200 से अधिक देशों और प्रांतों में सभी लक्ष्यों के लिए छह शिक्षा की देखरेख करता है। इस रिपोर्ट से यह पता चलता है कि इस क्षेत्र में उस समय प्रगति हो रही है जब तात्कालिकता को अंतिम रूप देने के लिए बढ़ाया जाना चाहिए ताकि इन लक्ष्यों को 2015 की समयावधि में पूरा किया जा सके।

एजुकेशन फॉर ऑल ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट में साक्ष्य आधारित विश्लेषण शिक्षा निती-निर्माताओं, विकास विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और मीडिया के लिए अनिवार्य उपकरण है और शिक्षा प्राप्त करने का इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति अधिक समृद्धि और न्यायसंगत विश्व को शक्ति प्रदान करता है।

(मेरी प्रशिक्षुता के दौरान), मैं कंप्यूटर की मरम्मत करने से संबंधित प्रशिक्षण के लिए सेंटर पर जाऊंगे। सेंटर में अध्ययन करते हुए मैं वहां पर अभ्यास भी कर सकूंगा और उसके बाद, मुझे प्रमाण-पत्र भी दिया जाएगा जिसके बाद में काम कर सकूंगा। मैं केवल सैद्धांतिक शिक्षा ही ध्यान नहीं देता हूं। वे मुझे असेम्बली और रिपोरिंग का अभ्यास भी करने देते हैं।

– युवा व्यक्ति, वियतनाम

मेरा मानना है कि इसे बड़ा अंतर आएगा यदि हमारा मार्गदर्शन करने के लिए ऐसा को व्यक्ति मिल जाए जो सुशिक्षित हो और जो मेरे पसंदीदा व्यवयाय का बेहतर ज्ञान मुझे दे सके । यदि कोई व्यक्ति मुझे शिक्षा दे तो इससे मेरे काम करने की संभावना बढ़ेगी और मैं मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकूंगी।

– युवती, इथियोपिया

कॉलेज और स्कूल की तरह उन्हें अधिक मे. हनत करनी चाहिए केवल दिन पास करने के लिए नहीं जहां पर जाकर आप कुछ हद तक कार्य का अनुभव करते हैं जैसाकि वे करवाना चाहते हैं। यदि वे स्कूल में दो दिन, नौकरी पाने के लिए तीन दिन बीताते हैं तो उसे संतुलित करें। उस प्रकार से आप वापस स्कूल में होंगे। आपको वही सीखना चाहिए जिसमें आपकी दिलचस्पी है और आप वहां से कुछ अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं।

– युवती, यूनाइटेड किंगडम

यहां पर शिक्षा की कमी है इसलिए हमें नौकरी नहीं मिलती और जीवन में सुधार नहीं होता है। हमारा कोई विकास नहीं हो रहा है।

– युवा व्यक्ति, भारत

हालांकि मैंने अपनी शिक्षा पूरी नहीं की है। मुझे एक अवसर दिया जाना चाहिए। हम काम करना चाहते हैं और अपने देश की भलाई के लिए कुछ करना चाहते हैं।

– युवती, मिश्र

यदि मुझे कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है जो मेरे स्तर को उठा सके तो मैं अध्ययन करता रहूंगा लेकिन आर्थिक कारणों से मैं अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सकता हूं। मैंने सोचा था कि मैं इतना भार नहीं उठा पाउंगा और मेरा स्कूल छूट जाएगा लेकिन मुझे अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी – मैं अपने अध्ययन को कैसे जारी रख सकता हूं

– युवा व्यक्ति, मेक्सिको

UNESCO
United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
यूनेस्को प्रकाशन

EFA GMR EDUCATION FOR ALL GLOBAL MONITORING REPORT

www.unesco.org/publishing
www.efareport.unesco.org

9 789231 042409